1ST P.U.C. HINDI NOTES

Student Name:............................

College Name: :............................

Editing By:

M.K. Zakir Hasan Usmani M.A., B.Ed., P.G.D.T.H

Cell: 9945900189

M.K.Z

1st P.U.C HINDI NOTES

Editing By:
M.K. Zakir Hasan Usmani M.A., B.Ed., P.G.D.T.H
Cell: 9945900189

Note:

इस पुस्तक मे हर प्रशन के बाद Lecturer Signature:...
दिया गया है जिसका अर्थ यह है के शिक्षक छात्रों से पूछेगये प्रशन का उत्तर पाने के बाद अपना हस्ताक्षर और दिनांक लिखें जिस्से प्रत्येक छात्र को कितने प्रश्नोत्तर का अभ्यास हुआ है इस की जान्कारी शिक्षक को प्राप्त होगी जिस के फ़ल स्वरूप छात्र वार्षिक परिक्षा मे उत्तम अंक प्राप्त करने मे आसानी होगी ।

M.K.Z

अनुक्रमणिका

Si,No	Chapters	Page No:
1)	Chapter 1 बड़े घर की बेटी	07
2)	Chapter 2 युवाओं से	08
3)	Chapter 3 निन्दा रस	09
4)	Chapter 4 बिन्दा	10
5)	Chapter 5 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'	11
6)	Chapter 6 दिल का दौरा और एनजाइना	12
7)	Chapter 7 मेरी बद्रीनाथ यात्रा	13
8)	Chapter 8 नालायक	14
9)	Chapter 9 राष्ट्र का स्वरूप	15
10)	Chapter 10 रिहर्सल	16
11)	Chapter 11 कबीरदास के दोहे	17
12)	Chapter 12. तुलसीदास के दोहे	18
13)	Chapter 13 मीराबाई के पद	19
14)	Chapter 14 शरण वचनामृत	20
15)	Chapter 15 रसखान के सवैये	21
16)	Chapter 16 कुटिया में राजभवन	22
17)	Chapter 17 तोड़ती पत्थर	23
18)	Chapter 18 उल्लास	24
19)	Chapter 19 तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए	25
20)	Chapter 20 प्रतिभा का मूल बिन्दु	26
21)	Chapter 21 तुम आओ मन के मुग्धमीत	27
22)	Chapter 22 मत घबराना	28
23)	Chapter 23 अभिनंदनीय नारी	29
24)	Chapter 24 मधुआ	30
25)	Chapter 25 श्मशान	31
26)	Chapter 26 खून का रिश्ता	32
27)	Chapter 27 शीत लहर	33
28)	Chapter 28 सिलिया	34
29)	Chapter 29 दोपहर का भोजन	35
30)	निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे	36
31)	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः	39
32)	गध्य भाग का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए	63
33)	पध्य भाग का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए	74
34)	अभ्यास Chapter 1 To Chapter 20	88
35)	व्याकरण भाग	98

M.K.Z

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए:

Chapter 1. बड़े घर की बेटी

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.ठाकुर साहब के कितने बेटे थे?   Sig:.........................
उत्तर: ठाकुर साहब के दो बेटे थे।

प्रश्न 2.बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति किसे भेंट के रूप में दे चुके थे? Sig:..............
उत्तर: बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे।

प्रश्न 3.ठाकुर साहब के बड़े बेटे का नाम क्या था?   Sig:.........................
उत्तर: ठाकर साहब के बड़े बेटे का नाम श्रीकंठ सिंह था।

प्रश्न 4.श्रीकंठ कब घर आया करते थे?   Sig:.........................
उत्तर: श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे।

प्रश्न 5.आनंदी के पिता का नाम लिखिए।   Sig:.........................
उत्तर: आनंदी के पिता का नाम भूपसिंह था।

प्रश्न 6.थाली उठाकर किसने पलट दी?   Sig:.........................
उत्तर: लालबिहारी सिंह ने थाली उठाकर पलट दी।

प्रश्न 7.गौरीपुर गाँव के जमीनदार कौन थे?   Sig:.........................
उत्तर: बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमीनदार थे।

प्रश्न 8.किसकी आँखें लाल हो गयी थी?   Sig:.........................
उत्तर: श्रीकंठ की आँखे लाल हो गयी थीं।

प्रश्न 9.बिगड़ता हुआ काम कौन बना लेती हैं?   Sig:.........................
उत्तर: बड़े घर की बेटियाँ बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

प्रश्न 10.'बड़े घर की बेटी' कहानी के लेखक कौन हैं? Sig:.........................
उत्तर:' बड़े घर की बेटी' कहानी के लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हैं।

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer

Chapter 2. युवाओं से

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.स्वामी विवेकानंद का विश्वास किन पर है? Sig:........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंद का विश्वास नवीन पीढ़ी के नवयुवकों पर है।

प्रश्न 2.स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत के राष्ट्रीय आदर्श क्या हैं? Sig:........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा है।

प्रश्न 3.कौन सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है? Sig:........................
उत्तर:निःस्वार्थी व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम कार्य करता है।

4.किस शक्ति के सामने प्रश्न सब शक्तियाँ दब जाएँगी? Sig:........................
उत्तर:इच्छाशक्ति के सामने सब शक्तियाँ दब जाएँगी।

प्रश्न 5.असंभव को संभव बनानेवाली चीज़ क्या है? Sig:........................
उत्तर:असंभव को संभव बनानेवाली चीज़ प्रेम है।

प्रश्न 6.जो अपने आपमें विश्वास नहीं करता, वह क्या है? Sig:........................
उत्तर:जो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है।

प्रश्न 7.कमज़ोरी किसके समान है? Sig:........................
उत्तर:कमजोरी मृत्यु के समान है।

प्रश्न 8.सबसे पहले हमारे तरुणों को क्या बनना चाहिए? Sig:........................
उत्तर:सबसे पहले हमारे तरुणों को मजबूत बनना चाहिए।

प्रश्न 9.प्रत्येक आत्मा क्या है? Sig:........................
उत्तर:प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है।

प्रश्न 10.नवयुवकों को किसकी तरह सहनशील होना चाहिए? Sig:........................
उत्तर:नवयुवकों को पृथ्वी की तरह सहनशील होना चाहिए।

M.K.Z

Chapter 3. निन्दा रस

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1.धृतराष्ट्र की भुजाओं में कौनसा पुतला जकड़ा गया था? Sig:........................
उत्तर:धृतराष्ट्र की भुजाओं में भीम का पुतला जकड़ा गया था।

प्रश्न 2.पिछली रात 'क' 'ग' के साथ बैठकर क्या करता रहा? Sig:........................
उत्तर:पिछली रात 'क' 'ग' के साथ बैठकर निंदा करता रहा।

प्रश्न 3.कुछ लोग आदतन क्या बोलते हैं? Sig:........................
उत्तर:कुछ लोग आदतन झूठ बोलते हैं।

प्रश्न 4.लेखक के मित्र के पास दोषों का क्या है? Sig:........................
उत्तर:लेखक के मित्र के पास दोषों का 'केटलाग' है।

प्रश्न 5.लेखक के मन में किसके प्रति मैल नहीं रहा? Sig:........................
उत्तर:लेखक के मन में अपने निंदक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा।

प्रश्न 6.निन्दकों की जैसी एकाग्रता किनमें दुर्लभ है? Sig:........................
उत्तर:निन्दकों की जैसी एकाग्रता भक्तों में दुर्लभ है।

प्रश्न 7.मिशनरी निन्दक चौबीसों घंटे निन्दा करने में किस भाव से लगे रहते हैं? Sig:........................
उत्तर:मिशनरी निन्दक चौबीसों घंटे निन्दा करने में पवित्र भाव से लगे रहते हैं।

प्रश्न 8.निन्दा, निन्दा करनेवालों के लिए क्या होती है? Sig:........................
उत्तर:निन्दा, निन्दा करनेवालों के लिए टॉनिक होती है।

प्रश्न 9.निन्दा का उद्गम किससे होता है? Sig:........................
उत्तर:निन्दा का उद्गम 'हीनता' और 'कमजोरी' से होता है।

प्रश्न 10.कौन बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है? Sig:........................
उत्तर:इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है।

Chapter 4. बिन्दा

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1.महादेवी वर्मा की बाल्य सखी का नाम लिखिए।Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा की बाल्य सखी का नाम बिन्दा है।

प्रश्न 2.महादेवी वर्मा को किसका अनुभव बहुत संक्षिप्त था? Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा को संसार का अनुभव बहुत संक्षिप्त था।

प्रश्न 3.पंडिताइन चाची के अलंकार उन्हें किसकी समानता दे देते थे? Sig:.........................
उत्तरःपंडिताइन चाची के अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे।

प्रश्न 4.बिन्दा का काम लेखिका को किसके तमाशे जैसा लगता था? Sig:.........................
उत्तरःबिन्दा का काम लेखिका को बाजीगर के तमाशे जैसा लगता था।

प्रश्न 5.बिन्दा की आँखें लेखिका को किसकी याद दिलाती थीं? Sig:.........................
उत्तरःबिन्दा की आँखें लेखिका को पिंजड़े में बंद चिड़िया की याद दिलाती थीं।

प्रश्न 6.बिन्दा ने तारे गिनते-गिनते एक चमकीले तारे की ओर उँगली उठाकर क्या कहा? Sig:...................
उत्तरःबिन्दा ने तारे गिनते-गिनते एक चमकीले तारे की ओर उँगली उठाकर कहा कि – "वह रही मेरी अम्मा'।

प्रश्न 7.महादेवी वर्मा ने रात को अपनी माँ से बहुत अनुनय पूर्वक क्या कहा? Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा ने रात को अपनी माँ से बहुत अनुनयपूर्वक कहा कि माँ तुम कभी तारा न बनना।

प्रश्न 8.महादेवी वर्मा किसके न्यायालय से मिलने वाले दण्ड से परिचित हो चुकी थीं? Sig:................
उत्तरःपंडिताइन चाची के न्यायालय से मिलने वाले दण्ड से महादेवी वर्मा परिचित हो चुकी थीं।

प्रश्न 9.महादेवी वर्मा को किसकी पत्तियाँ चुभ रही थीं? Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा को घास की पत्तियाँ चुभ रही थीं।

प्रश्न 10.किसने बिन्दा के पैरों पर तिल का तेल लगाया? Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा की माँ ने बिन्दा के पैरों पर तिल का तेल लगाया।

प्रश्न 11.महादेवी वर्मा के लिए कौन त्रिकालदर्शी से कम न थी? Sig:.........................
उत्तरःमहादेवी वर्मा के लिए रुकिया त्रिकालदर्शी से कम न थी।

Chapter 5. 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.डॉ. बी.आर. अंबेडकर का जन्म कब हुआ? Sig:.........................
उत्तर:डॉ. बी.आर. अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. में हुआ।

प्रश्न 2.अंबेडकर की माता का नाम क्या था? Sig:.........................
उत्तर:अंबेडकर की माता का नाम भीमाबाई था।

प्रश्न 3.रामजी सूबेदार किस गाँव में सैनिक थे? Sig:.........................
उत्तर:रामजी सुबेदार महूँ गाँव में सैनिक थे।

प्रश्न 4.भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा कब पास की? Sig:.........................
उत्तर:भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा सन् 1907 में पास की।

प्रश्न 5.कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर ने कौन-सी पुस्तक भीमराव को भेंट दी? Sig:.........................
उत्तर:कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर ने अपनी "बुद्ध जीवनी' नामक पुस्तक भीमराव को भेंट की।

प्रश्न 6.भीमराव का विवाह किसके साथ हुआ? Sig:.........................
उत्तर:भीमराव का विवाह रमाबाई के साथ हुआ।

प्रश्न 7.महाराजा की ओर से भीमराव को मासिक छात्रवृत्ति कितनी मिलती थी? Sig:.........................
उत्तर:महाराजा की ओर से भीमराव को मासिक छात्रवृत्ति 25 रु. मिलते थे।

प्रश्न 8.अंबेडकर जी ने बी.ए. की परीक्षा कब पास की? Sig:.........................
उत्तर:अंबेडकर जी ने बी.ए. की परीक्षा सन् 1912 ई. में पास की।

प्रश्न 9.भीमराव जी 1913 में अमेरिका के किस विश्वविद्यालय में दाखिल हो गए? Sig:.........................
उत्तर:भीमराव जी 1913 में अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में दाखिल हो गए।

प्रश्न 10.डॉ. अंबेडकर ने किस समाज को जागरूक करना आरंभ किया? Sig:.........................
उत्तर:डॉ. अंबेडकर ने वंचित एवं पीड़ित समाज को जागरूक करना आरंभ किया।

प्रश्न 11.'मूक नायक' पत्रिका के संपादक कौन थे? Sig:.........................
उत्तर:'मूक नायक' पत्रिका के संपादक डॉ. भीमराव अंबेडकर थे।

प्रश्न 12.डॉ. अंबेडकर पत्नी और बच्चों से भी अधिक किसे मानते थे? Sig:.........................
उत्तर:डॉ. अंबेडकर पत्नी और बच्चों से भी अधिक पुस्तकों को मानते थे।

Chapter 6. दिल का दौरा और एनजाइना

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1.हृदय रोग के दो रूप कौन-से हैं? Sig:........................
उत्तरःहृदय रोग के दो रूप हैं- दिल का दौरा तथा एनजाइना।

प्रश्न 2.दिल का दौरा और एनज़ाइना आम तौर से कितने वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में देखे जाते हैं? Sig:........................
उत्तरःआम तौर से दिल का दौरा और एनजाइना 45 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में देखे जाते हैं।

प्रश्न 3.'मूगा टेस्ट' किसे कहते हैं? Sig:........................
उत्तरःन्यूक्लियर स्कैन से यह पता चलता है कि रोगी के दिल का कितना हिस्सा दौरे की चपेट से बेकार हुआ है। इसे 'मूगा टेस्ट' कहते हैं।

प्रश्न 4.कोरोनरी धमनियों में सिकुड़न आने का एक बड़ा कारण क्या है? Sig:........................
उत्तरःकोरोनरी धमनियों में सिकुड़न आने का सबसे बड़ा कारण उनमें वसा की परत का जम जाना है।

प्रश्न 5.क्या बायपास सर्जरी भारत में संभव है? Sig:........................
उत्तरःबाईपास सर्जरी भारत में भी संभव है।

प्रश्न 6.हृदय रोगियों के लिए किस तरह का भोजन अच्छा नहीं है?
उत्तरःहृदय रोगियों के लिए तले हुए एवं अधिक वसायुक्त भोजन अच्छा नहीं है।
को बढ़ाता है या कम करता है?

Chapter 7. मेरी बद्रीनाथ यात्रा

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर दीजिए:

प्रश्न 1.कालिदास ने हिमालय को क्या कहा है? Sig:.........................
उत्तरः कालिदास ने हिमालय को नगाधिराज कहा है।

प्रश्न 2.यात्रा के नियम के अनुसार लेखक पहले कहाँ गये? Sig:.........................
उत्तरः यात्रा के नियम के अनुसार लेखक पहले केदारनाथ गए।

प्रश्न 3.केदारनाथ की शीत-ऋतु की राजधानी का नाम क्या है? Sig:.........................
उत्तरः केदारनाथ की शीत-ऋतु की राजधानी का नाम उषीमठ हैं।

प्रश्न 4.सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ मंदिर कौन-सा है? Sig:.........................
उत्तरः सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ मंदिर तुंगनाथ है।

प्रश्न 5.आठ वर्ष की प्यारी बच्ची का नाम क्या है? Sig:.........................
उत्तरः आठ वर्ष की प्यारी बच्ची का नाम संध्या है।

प्रश्न 6.जोषीमठ से बद्रीनाथ कितने मील की दूरी पर है? Sig:.........................
उत्तरः जोषीमठ से बद्रीनाथ केवल 19 मील की दूरी पर है।

प्रश्न 7.किस पेड़ के नीचे बैठकर प्रतिभापुंज शंकर ने उपनिषदों पर टीकाएँ लिखी थीं? Sig:............
उत्तरः कीमू अर्थात् शहतूत के पेड़ के नीचे बैठकर प्रतिभापुंज शंकर ने उपनिषदों पर टीकाएँ लिखी थी।

प्रश्न 8.बद्रीनारायण मंदिर कितने फुट की ऊँचाई पर है? Sig:.........................
उत्तरः बद्रीनारायण मंदिर 10,480 फुट की ऊँचाई पर है।

Chapter 8. नालायक

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.कितने अनट्रेण्ड अध्यापकों का चुनाव था? Sig:........................
उत्तरः तीन सौ अनट्रेण्ड अध्यापकों का चुनाव था।

प्रश्न 2.कितने उम्मीदवार आये थे? Sig:.........................
उत्तरः दस हजार उम्मीदवार आये थे।

प्रश्न 3.प्रति उम्मीदवार के पीछे कितनी सिफारिशें आयी थीं? Sig:.........................
उत्तरः प्रति उम्मीदवार के पीछे लगभग 5 – 6 सिफारिशें आयी थीं।

प्रश्न 4.ज्योतिषी कहाँ पर बैठे थे? Sig:.........................
उत्तरः ज्योतिषी फुटपाथ पर बैठे थे।

प्रश्न 5.पुलिस की कितनी गाड़ियाँ आयी थीं? Sig:.........................
उत्तरः पुलिस की दो गाड़ियाँ आई थीं।

प्रश्न 6.किसका नाम सभापति के लिए प्रस्तावित किया गया? Sig:.........................
उत्तरः श्री रघुपति राघव का नाम सभापति के लिए प्रस्तावित किया गया।

प्रश्न 7.'नालायक' पाठ के लेखक कौन हैं? Sig:.........................
उत्तरः 'नालायक' पाठ के लेखक विवेकी राय हैं।

Chapter 9. राष्ट्र का स्वरूप

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.किनके सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है? Sig:.....................
उत्तरः भूमि, जन और संस्कृति के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।

प्रश्न 2.किसकी कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हैं? Sig:.....................
उत्तरः धरती माता की कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हैं।

प्रश्न 3.सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र कौन है? Sig:.....................
उत्तरः निष्काम भाव से सेवा करनेवाला ही सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र हैं।

प्रश्न 4.पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य क्या है? Sig:.....................
उत्तरः माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव ही पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है।

प्रश्न 5.माता अपने सब पुत्रों को किस भाव से चाहती है? Sig:.....................
उत्तरः माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है।

प्रश्न 6.राष्ट्र का तीसरा अंग कौन-सा है? Sig:.....................
उत्तरः राष्ट्र का तीसरा अंग संस्कृति है।

प्रश्न 7.राष्ट्र की वृद्धि किसके द्वारा संभव है? Sig:.....................
उत्तरः राष्ट्र की वृद्धि संस्कृति के द्वारा संभव है।

प्रश्न 8.राष्ट्र का सुखदायी रूप क्या है? Sig:.....................
उत्तरः समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है।

प्रश्न 9.संस्कृति का अमित भंडार किसमें भरा हुआ है? Sig:.....................
उत्तरः संस्कृति का अमित भंडार स्वच्छन्द लोक गीतों और विकसित लोक कथाओं में भरा हुआ है।

प्रश्न 10.'राष्ट्र का स्वरूप' पाठ के लेखक कौन हैं? Sig:.....................
उत्तरः 'राष्ट्र का स्वरूप' पाठ के लेखक श्री वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।

M.K.Z

Chapter 10. रिहर्सल

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.वैद्य परमानन्द बीमार स्त्री को कितने दिन तक खाना न खाने के लिए कहते हैं? Sig:.............
उत्तरः 'वैद्य परमानन्द बीमार स्त्री को पंद्रह दिन तक खाना न खाने की सलाह देते हैं।

प्रश्न 2.किसान किसकी बीमारी के इलाज के लिए बैद्य परमानन्द के पास पहुंचता है? Sig:...............
उत्तरः किसान गाय की बीमारी के इलाज के लिए वैद्य परमानन्द के पास पहुँचता है।

प्रश्न 3.वैद्य परमानन्द हर बीमारी के लिए कौन-सी दवा देते हैं? Sig:.....................
उत्तरः वैद्य परमानन्द हर बीमारी के लिए अमर भास्कर चूर्ण देते हैं।

प्रश्न 4.प्रोफेसर पांडुरंग बीमार स्त्री को कमजोरी दूर करने का क्या उपाय बताते हैं? Sig:................
उत्तरः प्रोफेसर पांडुरंग बीमार स्त्री से कहते हैं कि वह हिम्मत से आँखें बंद करके शेर से लड़ें, पहाड़ों पर चढ़ें, तूफान में समुद्र में कूदकर अपनी कमजोरी दूर कर सकती हैं।

प्रश्न 5.प्रोफेसर पांडुरंग किसान को किसकी फोटो लाने के लिए कहते हैं? Sig:.....................
उत्तरः प्रोफेसर पांडुरंग किसान को गाय की फोटो लाने के लिए कहते हैं।

प्रश्न 6.प्रोफेसर पांडुरंग किसे यमराज का सगा भाई कहते हैं? Sig:.....................
उत्तरः प्रोफेसर पांडुरंग वैद्य परमानंद को यमराज का सगा भाई कहते हैं।

प्रश्न 7.प्रोफेसर पांडुरंग लड़के को होश में लाने के लिए कैसी कहानियाँ सुनाने की सलाह देते हैं? Sig:.....................
उत्तरः प्रोफेसर पांडुरंग लड़के को होश में लाने के लिए ऐसी कहानियाँ सुनाने की सलाह देते हैं कि बेहोश व्यक्तियों के होश में आने का वर्णन हो।

प्रश्न 8.वैद्य परमानंद के अनुसार लड़के को क्या हुआ है? Sig:.....................
उत्तरः वैद्य परमानंद के अनुसार लड़के को सन्निपात हुआ है।

प्रश्न 9.बेहोशी का अभिनय किसने किया? Sig:.....................
उत्तरः बेहोशी का अभिनय लड़के रमेश ने किया।

प्रश्न 10.बेहोशी का अभिनय करने वाले लड़के का नाम लिखिए।Sig:.....................
उत्तरः बेहोशी का अभिनय करनेवाला रमेश था।

Chapter 11. कबीरदास के दोहे

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.किसके प्रताप से सब दुःख दर्द मिटते हैं? Sig:.....................
उत्तर: सद्गुरु के प्रताप से सब दुःख दर्द मिटते हैं।

प्रश्न 2.कबीर के गुरु कौन थे? Sig:.....................
उत्तर: कबीर के गुरु रामानंद थे।

प्रश्न 3.कबीर किस पर बलिहारी होते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कबीर गुरु पर बलिहारी होते हैं।

प्रश्न 4.माटी कुम्हार से क्या कहती है? Sig:.....................
उत्तर: माटी कुम्हार से कहती है, तू मुझे क्यों रौंदता करता है? एक दिन ऐसा होगा कि जब मैं तुझे रौदूंगी।

प्रश्न 5.किसको पास रखना चाहिए? Sig:.....................
उत्तर: निंदकों को पास रखना चाहिए।

प्रश्न 6.कस्तूरी कहाँ बसती है? Sig:.....................
उत्तर: कस्तूरी मृग की नाभि में बसती है।

प्रश्न 7.कबीर किसकी राह देखते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कबीर भगवान राम की राह देखते हैं।

प्रश्न 8.क्रोध किसके समान है? Sig:.....................
उत्तर: क्रोध मृत्यु के समान हैं।

प्रश्न 9.दुःख में मनुष्य क्या करता है? Sig:.....................
उत्तर: दुःख में मनुष्य भगवान का स्मरण करता है।

प्रश्न 10.कबीरदास के अनुसार किसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए? Sig:.....................
उत्तर :कबीरदास के अनुसार साधु (सज्जन) की जाति नहीं पूछनी चाहिए।

M.K.Z

Chapter 12. .तुलसीदास के दोहे

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.तुलसीदास किस पर विश्वास करते हैं? Sig:.....................
उत्तर: तुलसीदास भगवान राम (रघुनाथ) पर विश्वास करते हैं।

प्रश्न 2.तुलसीदास किसको आराध्य देव मानते हैं? Sig:.....................
उत्तर: तुलसीदास श्रीराम जी को आराध्य देव मानते हैं।

प्रश्न 3.संत का स्वभाव कैसा होता है? Sig:.....................
उत्तर: संत का स्वभाव आम के पेड़ की तरह होता है।

प्रश्न 4.तुलसीदास काया और मन की उपमा किससे देते हैं? Sig:.....................
उत्तर: तुलसीदास काया को खेत और मन को किसान की उपमा देते हैं।

प्रश्न 5.मधुर वचन से क्या मिटता है? Sig:.....................
उत्तर: मधुर वचन से अभिमान मिट जाता है।

प्रश्न 6.पंडित और मूर्ख एक समान कब लगते हैं? Sig:.....................
उत्तर: काम, क्रोध, मद और लोभ को मन में धारण करने पर पंडित और मूर्ख एक समान लगते हैं।

प्रश्न 7.तुलसीदास कहाँ जाने के लिए मना करते हैं? Sig:.....................
उत्तर: तुलसीदास कहते हैं कि जहाँ आदर और स्नेह नहीं मिलता हो वहाँ नहीं जाना चाहिए।

प्रश्न 8.बिना तेज के पुरुष की अवस्था कैसी होती है? Sig:.....................
उत्तर: बिना तेज के पुरुष की अवस्था अवज्ञा अथवा आग के बुझने पर राख की तरह उपेक्षित होती है।

Chapter 13. मीराबाई के पद

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.मीराबाई ने किसे अपना आराध्य माना? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने श्री कृष्ण (गिरिधर गोपाल) को अपना आराध्य माना।

प्रश्न 2.मीराबाई ने किसके लिए सारा जग छोड़ा? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने श्री कृष्ण (गिरिधर गोपाल) के लिए सारा जग छोड़ा।

प्रश्न 3.मीराबाई ने किसकी संगति में बैठकर लोक-लाज छोडा? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने साधुओं की संगति में बैठकर लोक-लाज छोड़ा।

प्रश्न 4.मीराबाई ने कृष्ण प्रेम को किससे सींचा? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने कृष्ण प्रेम को आँसुओं से सींचा।

प्रश्न 5.विष का प्याला किसने भेजा था? Sig:....................
उत्तर: विष का प्याला राणा ने भेजा था।

प्रश्न 6.मीराबाई की लगन किसमें लगी है? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई की लगन अपने इष्ट गिरिधर गोपाल में लगी है।

प्रश्न 7.श्रीकृष्ण के चरणकमल कैसे हैं? Sig:....................
उत्तर: श्रीकृष्ण के चरणकमल अविनासी हैं।

प्रश्न 8.किसका घमंड नहीं करना चाहिए? Sig:....................
उत्तर: मनुष्य देह (शरीर) का घमंड नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 9.यह संसार किसका खेल है? Sig:....................
उत्तर:यह संसार चिड़ियों का खेल है।

प्रश्न 10.मीराबाई किन बन्धनों को नष्ट करने के लिए प्रार्थना करती हैं? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई सांसारिक बन्धनों को नष्ट करने की प्रार्थना करती हैं।

Chapter 14. शरण वचनामृत

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.कनक, कामिनी और माटी को लोगों ने क्या कहा? Sig:....................
उत्तर: कनक, कामिनी और माटी को लोगों ने माया कहा है और माया नहीं भी कहा है।

प्रश्न 2.अल्लमप्रभु देव के आराध्य देव कौन थे? Sig:....................
उत्तर: अल्लमप्रभु देव के आराध्य देव गुहेश्वर थे।

प्रश्न 3.बसवेश्वर के अनुसार ज्ञान से क्या दूर होता है? Sig:....................
उत्तर: बसवेश्वर के अनुसार ज्ञान से अज्ञान दूर होता है।

प्रश्न 4.ज्योति से क्या दूर होता है? Sig:....................
उत्तर: ज्योति से तमंध अथवा अंधकार दूर होता है।

प्रश्न 5.बसवेश्वर के आराध्य देव का नाम क्या है? Sig:....................
उत्तर: बसवेश्वर के आराध्य देव का नाम कूडलसंगम देव है।

प्रश्न 6.सत्य से क्या दूर होता है? Sig:....................
उत्तर: सत्य से असत्य दूर होता है।

प्रश्न 7.पारस से क्या दूर होता है? Sig:....................
उत्तर: पारस से लोहत्व दूर होता है।

प्रश्न 8.पर्वत पर बसाकर घर किससे नहीं डरना चाहिए? Sig:....................
उत्तर: पर्वत पर घर बसाकर, जंगली जानवरों से नहीं डरना चाहिए।

प्रश्न 9.हाट में बसाकर घर किससे नहीं डरना चाहिए? Sig:....................
उत्तर: हाट में (बाजार में) घर बसाकर, शोरगुल से नहीं डरना चाहिए।

प्रश्न 10.जगत में जन्म लेने के बाद किससे नहीं डरना चाहिए? Sig:....................
उत्तर: जगत में जन्म लेने के बाद निन्दा और स्तुति से नहीं डरना चाहिए।

Chapter 15.   रसखान के सवैये

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.रसखान मनुष्य रूप में अगला जन्म कहाँ लेना चाहते हैं? Sig:....................
उत्तर: रसखान मनुष्य रूप में अगला जन्म ब्रजभूमि (बृंदावन) में लेना चाहते हैं।

प्रश्न 2.रसखान पशु रूप में जन्म लेने पर कहाँ रहना चाहते हैं? Sig:....................
उत्तर: रसखान पशु रूप में जन्म लेने पर नंदबाबा की गौओं में किसी गौ के रूप में जन्म लेना चाहते हैं।

प्रश्न 3.रसखान पक्षी रूप में जन्म लेने पर किस डाली पर बसना चाहते हैं? Sig:....................
उत्तर: रसखान पक्षी रूप में कालिंदी नदी के किनारे, कदंब के वृक्षों की डाली पर बसेरा करना चाहते हैं।

प्रश्न 4.गोपी सिर पर क्या धारण करना चाहती है? Sig:....................
उत्तर:गोपी सिर पर मोर-मुकुट धारण करना चाहती हैं।

प्रश्न 5.गोपी कृष्ण की मुरली कहाँ नहीं रखना चाहती? Sig:....................
उत्तर: गोपी कृष्ण की मुरली अपने अधरों या ओंठों पर नहीं रखना चाहती।

M.K.Z

Chapter 16. कुटिया में राजभवन

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1.सीता जी का मन कहाँ भाया? Sig:....................
उत्तर: सीता जी का मन कुटिया में भाया।

प्रश्न 2.सीता जी के प्राणेश कौन थे? Sig:....................
उत्तर: सीता जी के प्राणेश सम्राट श्रीराम थे।

प्रश्न 3.सीता जी कुटिया को क्या समझती हैं? Sig:....................
उत्तर: सीता जी कुटिया को राजभवन समझती हैं।

प्रश्न 4.नवीन फल नित्य कहाँ मिला करते हैं? Sig:....................
उत्तर: डाली-डाली में नित्य नवीन फल मिला करते हैं।

प्रश्न 5.सीता की गृहस्थी कहाँ जगी? Sig:....................
उत्तर: सीता जी की गृहस्थी वन में जगी है।

प्रश्न 6.वधू बनकर कौन आयी है? Sig:....................
उत्तर: जानकी वधू बनकर आई है।

प्रश्न 7.सीता की सखियाँ कौन हैं? Sig:....................
उत्तर: मुनि बालायें सीता जी की सखियाँ हैं।

M.K.Z

Chapter 17. तोड़ती पत्थर

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.नारी कहाँ पत्थर तोड़ती थी? Sig:....................
उत्तर: नारी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती थी।

प्रश्न 2.पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग कैसा था? Sig:....................
उत्तर: पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग साँवला था।

प्रश्न 3.नारी बार-बार क्या करती थी ? Sig:....................
उत्तर: नारी बार-बार हाथ में बडा हथौड़ा लेकर प्रहार करती थी।

प्रश्न 4.नारी कब पत्थर तोड़ रही थी? Sig:....................
उत्तर: नारी दुपहर की धूप में पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 5.नारी के माथे से क्या टपक रहा था? Sig:....................
उत्तर: नारी के माथे से पसीना टपक रहा था।

प्रश्न 6.'तोड़ती पत्थर' कविता के कवि कौन हैं? Sig:....................
उत्तर: 'तोड़ती पत्थर' कविता के कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

M.K.Z

Chapter 18. उल्लास

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.कवयित्री ने शैशव प्रभात में क्या देखा? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री ने शैशव प्रभात में नव विकास देखा।

प्रश्न 2.कवयित्री ने यौवन के नशे में क्या देखा? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री ने यौवन के नशे में यौवन का उल्लास देखा।

प्रश्न 3.कवयित्री ने किसका विकास देखा? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री ने आशा का विकास देखा।

प्रश्न 4.कवयित्री ने किसका प्रकाश देखा? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री ने आकांक्षा, उत्साह तथा प्रेम का क्रमिक विकास देखा।

प्रश्न 5.कवयित्री को किसने कभी नहीं रुलाया? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री को जीवन में निराशा ने कभी नहीं रुलाया।

प्रश्न 6.कवयित्री ने हमेशा किस प्रकार का व्यवहार किया? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री ने सदा सबसे मधुर प्यार का ही व्यवहार किया।

प्रश्न 7.कवयित्री को प्रेम का क्या दिखाई देता है? Sig:.....................
उत्तर: कवयित्री को प्रेम का पारावार (सागर) दिखाई देता है।

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer

Chapter 19.   तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.बच्चन जी ने किस प्रकार के गीत बनाए? Sig:....................
उत्तर:कवि बच्चन जी ने गूंज-गूंजकर मिटनेवाले गीत बनाये।

प्रश्न 2.कवि बच्चन जी ने क्या लुटाया? Sig:....................
उत्तर:कवि बच्चन जी ने कविताओं का कोष/वर्णकोष लुटाया।

प्रश्न 3.कवि बच्चन क्या खोकर रंक हुए? Sig:....................
उत्तर:कवि बच्चन अपनी निज निधि खोकर रंक हुए।

प्रश्न 4.दुनिया कैसी है? Sig:....................
उत्तर:दुनिया ममतामयी है।

प्रश्न 5.कवि बच्चन का जीवन कैसे बीता? Sig:....................
उत्तर:कवि बच्चन का जीवन दुःख में बीता।

प्रश्न 6.सुख की एक साँस पर क्या निछावर है? Sig:....................
उत्तर:सुख की एक साँस पर अमरत्व निछावर है।

M.K.Z

Chapter 20. प्रतिभा का मूल बिन्दु

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.कवि प्रतिभा से क्या पूछते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कवि प्रतिभा से पूछते हैं – 'तेरा जन्म कहाँ हुआ?'

प्रश्न 2.कवि ने दिवास्वप्न की रानी किसे कहा है? Sig:.....................
उत्तर: कवि ने प्रतिभा को दिवास्वप्न की रानी कहा है।

प्रश्न 3.शिल्पी ने किसकी ओर संकेत किया है? Sig:.....................
उत्तर: शिल्पी ने मिट्टी के लौंदे की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 4.गायिका क्या कह गयी? Sig:.....................
उत्तर:गायिका कह गई कि – "क्या तूने दिव्य-स्वर की मदिरा पी है?"

प्रश्न 5.प्रतिभा कहाँ बसती है? Sig:.....................
उत्तर: प्रतिभा यातना, निरंतर कष्ट-सहन की ताकत में, संघर्ष-निरत साधक में और असिधारा-व्रत में बसती है।

प्रश्न 6.'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता के कवि का नाम लिखिए।Sig:.....................
उत्तर: 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता के कवि डॉ. प्रभाकर माचवे हैं।

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer

Chapter 21. तुम आओ मन के मुग्धमीत

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.कवि अपने मित्र से क्या कहता है? Sig:....................
उत्तर: कवि अपने मित्र से कहता है कि वह अंधकार में डरा हुआ है और वह आकर अंधकार मिठा दे।

प्रश्न 2.कवि अपने मित्र का स्वागत कैसे करता है? Sig:....................
उत्तर: कवि अपने मित्र का स्वागत झुककर तथा पूरे मन के साथ सिर नवाकर करता है।

प्रश्न 3.कवि किससे बिछुड़कर रह गया है? Sig:....................
उत्तर: कवि अपने मुग्ध मित्र से बिछुड़कर रह गया है।

प्रश्न 4.'तुम आओ मन के मुग्ध मीत' कविता के कवि कौन हैं? Sig:....................
उत्तर: 'तुम आओ मन के मुग्ध मीत' कविता के कवि डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति हैं।

M.K.Z

Chapter 22. मत घबराना

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.कवि किस प्रकार आगे बढ़ने के लिए कहते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कवि कदम साधकर आगे बढ़ने के लिए कहते हैं।

प्रश्न 2.कवि किसके साथ होने की बात कहते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कवि कहते हैं कि कोई साथ रहे या न रहे, परन्तु चन्दा और तारे साथ रहेंगे।

प्रश्न 3.कवि किसे अपनी व्यथा सुनाने के लिए कहते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कवि अपनी सारी व्यथा चन्दा-तारे को सच्चा साथी जानकर सुनाने के लिए कहते हैं।

प्रश्न 4.पथ पर बार-बार क्या टकराती है? Sig:.....................
उत्तर: पथ पर बार-बार बाधाएँ टकराती हैं।

प्रश्न 5.कवि बीच राह में कैसे न रुकने को कहते हैं? Sig:.....................
उत्तर: कवि डरकर या ललचाकर बीच राह में न रुकने को कहते हैं।

प्रश्न 6.वीर काँटों को क्या समझता है? Sig:.....................
उत्तर: वीर काँटों को भी फूल समझता है।

प्रश्न 7.वीर किससे हाथ मिलाता है? Sig:.....................
उत्तर: वीर विपदाओं से हाथ मिलाता है।

M.K.Z

Chapter 23. अभिनंदनीय नारी

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.नारी किसके समान सहनशील होती है? Sig:....................
उत्तर: नारी धरती के समान सहनशील होती है।

प्रश्न 2.नारी बचपन में किसके मन में हिलोरें उठाती है? Sig:....................
उत्तर: नारी बचपन में माता-पिता के हृदय में हिलोरें उठाती हैं।

प्रश्न 3.नारी ने इस धरती को धन्य कैसे किया? Sig:....................
उत्तर: नारी ने इस धरती को स्नेह और सेवा से धन्य किया है।

प्रश्न 4.स्वार्थी संसार क्या याद नहीं रखता है? Sig:....................
उत्तर: स्वार्थी संसार दूसरों के किये उपकारों को याद नहीं रखता है।

प्रश्न 5.नारी अबला नहीं बल्कि क्या है? Sig:....................
उत्तर: नारी अबला नहीं, बल्कि रणचण्डी भी है।

प्रश्न 6.जिस घर में नारी का सम्मान हो, वहाँ क्या होता है? Sig:....................
उत्तर: जिस घर में नारी का सम्मान हो, वह आनंद का आगार है।

M.K.Z

Chapter 24, मधुआ

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.बालक का नाम क्या है? Sig:....................
उत्तर: बालक का नाम मधुआ है।

प्रश्न 2.ठाकुर सरदार सिंह का लड़का कहाँ पढ़ता था? Sig:....................
उत्तर: ठाकुर सरदार सिंह का लड़का लखनऊ में पढ़ता था।

प्रश्न 3.बड़े-बड़ों के घमंड चूर होकर कहाँ मिल जाते हैं? Sig:....................
उत्तर: बड़े-बड़ों के घमंड चूर होकर धूल में मिल जाते हैं।

प्रश्न 4.गन्दी कोठरी में बालक को खाने के लिए क्या मिला? Sig:....................
उत्तर: गंदी कोठरी में बालक को खाने के लिए एक पराठे का टुकड़ा मिला।

प्रश्न 5.शराबी के हाथ में कितने रुपए थे? Sig:....................
उत्तर: शराबी के हाथ में एक रुपया था।

प्रश्न 6.सीली जगह में सोते हुए बालक ने क्या ओढ़ लिया? Sig:....................
उत्तर: सीली जगह में सोते हुए बालक ने शराबी का पुराना बड़ा कोट ओढ़ लिया।

प्रश्न 7.बालक की आँखें किसकी सौगन्ध खा रही थीं? Sig:....................
उत्तर: बालक की आँखें दृढ़ निश्चय की सौगन्ध खा रही थी।

M.K.Z

Chapter 25. श्मशान

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.श्मशान मनुष्य से प्यार के बदले क्या पाता है? Sig:.....................
उत्तर: श्मशान मनुष्य से प्यार के बदले घृणा ही पाता है।

प्रश्न 2.श्मशान किससे बातें कर रहा है? Sig:.....................
उत्तर: श्मशान खड़ी पहाड़ी से बातें कर रहा है।

प्रश्न 3.युवक की पहली पत्नी का नाम लिखिए।Sig:.....................
उत्तर: युवक की पहली पत्नी का नाम सुकेशी है।

प्रश्न 4.श्मशान सारे दिन किसके शव की प्रतीक्षा करता रहा? Sig:.....................
उत्तर: श्मशान सारे दिन युवक के शव की प्रतीक्षा करता रहा।

प्रश्न 5.श्मशान के मन में वर्षों से किसके प्रेम की अलौकिक धारणा जमी हुई थी? Sig:...................
उत्तर: श्मशान के मन में वर्षों से मनुष्य के अलौकिक प्रेम की धारणा जमी हुई थी।

प्रश्न 6.पाँच वर्ष में युवक की कितनी पत्नियाँ मर गईं? Sig:.....................
उत्तर: पाँच वर्ष में युवक की तीन पत्नियाँ मर गई।

प्रश्न 7.मनुष्य सबसे अधिक प्रेम किससे करता है? Sig:.....................
उत्तर: मनुष्य सबसे अधिक प्रेम अपने आप से करता है।

प्रश्न 8.'श्मशान' कहानी की लेखिका कौन हैं? Sig:.....................
उत्तर: 'श्मशान' कहानी की लेखिका श्रीमती मन्नू भंडारी हैं।

प्रश्न 9.युवक की पहली पत्नी का नाम लिखिए।Sig:.....................
उत्तर: युवक की पहली पत्नी का नाम सुकेशी है।

M.K.Z

Chapter 26. खून का रिश्ता

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.चाचा मंगलसेन चिलम थामे क्या देख रहा था? Sig:....................
उत्तर: चाचा मंगलसेन चिलम थामे सपने देख रहा था कि वह समधियों के घर में बैठा है और वीरजी की सगाई हो रही है।

प्रश्न 2.घर का पुराना नौकर कौन था? Sig:....................
उत्तर: घर का पुराना नौकर सन्तू था।

प्रश्न 3.सन्तू की पीठ पर क्या पड़ी? Sig:....................
उत्तर: सन्तू की पीठ पर चाबुक पड़ी।

प्रश्न 4.किसका स्वप्न सचमुच साकार हो उठा? Sig:....................
उत्तर: मंगलसेन का सपना सचमुच साकार हो उठा।

प्रश्न 5.लड़की की पढ़ाई कहाँ तक हुई थी? Sig:....................
उत्तर: लड़की की पढ़ाई बी.ए. तक हुई थी।

प्रश्न 6.बाबूजी के सामने चाँदी की कितनी कटोरियाँ रखी हुई थीं? Sig:....................
उत्तर: बाबूजी के सामने तीन चाँदी की कटोरियाँ रखी हुई थीं।

प्रश्न 7.वीरजी की बहन का नाम क्या है? Sig:....................
उत्तर: वीरजी की बहन का नाम मनोरमा है।

प्रश्न 8.प्रभा की सगाई किनके साथ हुई? Sig:....................
उत्तर: प्रभा की सगाई वीरजी के साथ हुई।

प्रश्न 9.एक चम्मच की कीमत कितनी मानी गई? Sig:....................
उत्तर: एक चम्मच की कीमत पाँच रुपये मानी गई।

प्रश्न 10.प्रभा का भाई वीरजी के घर क्या देने आया था? Sig:....................
उत्तर: प्रभा का भाई वीरजी के घर चमकता सफेद चम्मच देने आया था।

M.K.Z

Chapter 27. शीत लहर

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.चंद्रप्रकाश का फ्लैट कहाँ था? Sig:.....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश का फ्लैट द्वारकानगर के एक ग्रुप हाऊसिंग सोसाइटी में था।

प्रश्न 2.सोसाइटी सभी फ्लैट मालिकों से प्रतिमाह रख-रखाव का कितना खर्च लेती थी? Sig:...........
उत्तर:सोसाइटी सभी फ्लैट मालिकों से प्रतिमाह रख-रखाव का एक हजार रुपये खर्च लेती थी।

प्रश्न 3.लक्ष्मीबाई नगर से द्वारका तक के रास्ते में लेखक किन्हें देखते हैं? Sig:.....................
उत्तर:लक्ष्मीबाई नगर से द्वारका तक के रास्ते में लेखक ने रेड लाइटों, चौराहों, पुलों के पास नंगे-अधनंगे स्त्री-पुरुष-बच्चों को काँपते-ठिठुरते देखा।

प्रश्न 4.चंद्रप्रकाश की पत्नी का नाम क्या है? Sig:.....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश की पत्नी का नाम पूनम है।

प्रश्न 5.चंद्रप्रकाश के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति कैसे जीना चाहता है? Sig:.....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सम्मान के साथ जीना चाहता है।

प्रश्न 6.भीख मांगना किसी भी व्यक्ति के लिए क्या है? Sig:.....................
उत्तर:भीख मांगना किसी भी व्यक्ति के लिए अपमानजनक होता है।

प्रश्न 7.दरवाजा लॉक करते समय चन्द्रप्रकाश ने किसका जोड़ा देखा? Sig:.....................
उत्तर:दरवाजा लॉक करते समय चन्द्रप्रकाश ने कबूतरों का जोड़ा देखा।

प्रश्न 8.चंद्रप्रकाश की ओर बच्चे किस नज़र से देख रहे थे? Sig:.....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश की ओर बच्चे आशा और उत्सुकता की नज़र से देख रहे थे।

प्रश्न 9.चंद्रप्रकाश ने बच्चों को कितने रुपये देने चाहे? Sig:.....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश ने बच्चों को एक सौ रुपये देने चाहे।

Chapter 28. सिलिया

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1.नानी शैलजा को किस नाम से पुकारती थी? Sig:.....................
उत्तर: नानी शैलजा को सिलिया नाम से पुकारती थी।

प्रश्न 2.सन् 1980 में सिलिया कौन-सी कक्षा में पढ़ रही थी? Sig:.....................
उत्तर: सन् 1980में सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी।

प्रश्न 3 किनकी बातों को सुनकर सिलिया के मन में आत्मविश्वास जाग उठा? Sig:.....................
उत्तर: अपनी माँ की बातें सुनकर सिलिया के मन में आत्म-विश्वास जाग उठा।

प्रश्न 4.मालती ने किस मुहल्ले के कुएँ से पानी निकालकर पिया था? Sig:.....................
उत्तर: मालती ने गाडरी मुहल्ले के कुएँ से पानी निकालकर पिया था।

प्रश्न 5.सिलिया किस दौड़ में प्रथम आयी थी? Sig:.....................
उत्तर: सिलिया लम्बी दौड़ और कुर्सी दौड़ में प्रथम आई थी।

प्रश्न 6.हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ किस कक्षा में पढ़ती थी? Sig:.....................
उत्तर: हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी।

प्रश्न 7.जहाँ चाह होती है वहाँ क्या बनने लगती है? Sig:.....................
उत्तर: जहाँ चाह होती है, वहाँ राह अपने-आप बनने लगती है।

प्रश्न 8.प्रतिष्ठित साहित्य संस्था ने किसको सम्मानित किया? Sig:.....................
उत्तर: प्रतिष्ठित साहित्य संस्था ने दलित कन्या, समाजसेवी, कवयित्री, प्रसिद्ध लेखिका सिलिया को सम्मानित किया।

M.K.Z

Chapter 29. दोपहर का भोजन

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

प्रश्न 1.रामचंद्र कितने वर्ष का था? Sig:....................
उत्तर: रामचंद्र लगभग इक्कीस वर्ष का था।

प्रश्न 2.प्रूफरीडरी का काम कौन सीख रहा था? Sig:....................
उत्तर: प्रूफरीडरी का काम रामचन्द्र सीख रहा था।

प्रश्न 3.सिद्धेश्वरी के मँझले लड़के का नाम लिखिए।Sig:....................
उत्तर: सिद्धेश्वरी के मँझले लड़के का नाम मोहन था।

प्रश्न 4.सिद्धेश्वरी के छोटे लड़के की उम्र कितनी थी? Sig:....................
उत्तर: सिद्धेश्वरी के छोटे लड़के की उम्र छः साल थी।

प्रश्न 5.मुंशी चंद्रिका प्रसाद कितने साल के लगते थे? Sig:....................
उत्तर: मुंशी चंद्रिका प्रसाद लगभग पचास-पचपन साल के लगते थे।

प्रश्न 6.किसकी शादी तय हो गई थी? Sig:....................
उत्तर:गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी तय हो गयी थी।

प्रश्न 7.मुंशी जी की तबीयत किससे ऊब गई थी? Sig:....................
उत्तर: मुंशी जी की तबीयत अन्न और नमकीन से ऊब गई थी।

प्रश्न 8.मुंशी जी की छंटनी किस विभाग से हो गई थी? Sig:....................
उत्तर: मुंशी जी की छंटनी मकान-किराया नियंत्रण विभाग की क्लर्की से हो गई थी।

प्रश्न 9.'दोपहर का भोजन' कहानी के कहानीकार कौन हैं? Sig:....................
उत्तर: 'दोपहर का भोजन' कहानी के कहानीकार अमरकांत जी हैं।

निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे

Chapter 1 बड़े घर की बेटी

प्रश्न 1. जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है। **Sig:........................**
उत्तर: यह वाक्य लालबिहारी ने आनंदी से कहा।

प्रश्न 2. "जिसके गुमान पर भूली हुई हो, उसे भी देखूगा, और तुम्हें भी।"
उत्तर: यह वाक्य लालबिहारी ने आनंदी से कहा।

प्रश्न 3. बेटा, बुद्धिमान लोग मूरों की बात पर ध्यान नहीं देते।
उत्तर: यह वाक्य बेनीमाधव ने श्रीकंठ से कहा।

प्रश्न 4. लालबिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।
उत्तर: यह वाक्य श्रीकंठ ने अपने पिता बेनीमाधव सिंह से कहा।

प्रश्न 5. अब मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूँ।
उत्तर: यह वाक्य लालबिहारी ने आनंदी से कहा।

प्रश्न 6. भैया, अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मुँह न देगा।
उत्तर: यह वाक्य लालबिहारी ने श्रीकंठ से कहा।

प्रश्न 7. मुझसे जो कुछ अपराध हुआ क्षमा करना।
उत्तर: यह वाक्य लालबिहारी ने आनंदी से कहा।

Chapter 2 युवाओं से

प्रश्न 1."मेरी आशा, मेरा विश्वास नवीन पीढ़ी के नवयुवकों पर है।" **Sig:........................**
उत्तर:विवेकानंद ने नवयुवकों से कहा।

प्रश्न 2."तुम तो ईश्वर के संतान हो, अमर आनंद के भागी हो, पवित्र और पूर्ण आत्मा हो।'Sig:..........
उत्तर:विवेकानंद ने नवयुवकों से कहा।

प्रश्न 3."प्रत्येक आत्मा ही अव्यक्त ब्रह्म है।" Sig:........................
उत्तर:विवेकानंद ने नवयुवकों से कहा।

M.K.Z

Chapter 3 निन्दा रस

प्रश्न 1.“यार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा-बुरा कहते हैं।” Sig:........................
उत्तर:संघ के एक अध्यक्ष ने अपने मित्र से कहा।

प्रश्न 2.“वे अगर बंबई जा रहे हैं और उनसे पूछे तो वे कहेंगे कलकत्ता जा रहा हूँ।” Sig:.................
उत्तर:एक रिश्तेदार ने लेखक से कहा।

प्रश्न 3.“निंदा सबद रसाल।” Sig:........................
उत्तर:सूरदास ने पाठकों से कहा है।

Chapter 4 बिन्दा

प्रश्न 1.‘क्या पंडिताइन चाची तुम्हारी तरह नहीं है?’ Sig:........................
उत्तरःयह वाक्य महादेवी वर्मा ने अपनी माँ से कहा।

प्रश्न 2.‘वह रही मेरी अम्मा’Sig:........................
उत्तरःयह वाक्य बिन्दा ने महादेवी वर्मा से कहा।

प्रश्न 3.‘तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनावें।’ Sig:..................
उत्तरःयह वाक्य महादेवी वर्मा ने अपनी माँ से कहा।

Chapter 7 मेरी बद्रीनाथ यात्रा

प्रश्न 1.‘अरे बिच्छू-बिच्छू!’ Sig:........................
उत्तरः यह वाक्य एक वयोवृद्ध सज्जन ने दल के सदस्यों से कहा।

प्रश्न 2.‘कहिए, दिल जम गया या बच गया।Sig:........................
उत्तरः यह वाक्य लेखक ने अपने मित्र से कहा।

प्रश्न 3.मंजिल पर पहुँच जाने पर रोमांच हो ही आता है।Sig:........................
उत्तरः यह वाक्य लेखक ने पाठकों से कहा।

प्रश्न 4.यात्रा का यह अस्थायी स्नेह भी कितना पवित्र होता है।Sig:........................
उत्तरः यह वाक्य लेखक ने पाठकों से कहा।

Chapter 8 नालायक

प्रश्न 1.आपका उम्मीदवार किस डिवीजन में पास है? Sig:.........................
उत्तरः यह वाक्य लेखक ने एक उम्मीदवार से कहा।

प्रश्न 2.थर्ड डिवीजनर के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं है।Sig:.........................
उत्तरः यह वाक्य लेखक ने सिफारिशी लोगों से कहा।

प्रश्न 3.ये लोग हम लोगों का हक मार रहे हैं।Sig:.........................
उत्तरः यह वाक्य नौकरी के लिए आए एक थर्ड डिविजन उम्मीदवार ने लेखक से कहा।

प्रश्न 4.हमारे लिए हर जगह दरवाजा बंद है।Sig:.........................
उत्तरः यह वाक्य एक थर्ड डिविजनर युवक ने बाकी थर्ड डिविजनर युवकों से कहा।

Chapter 10 रिहर्सल

प्रश्न 1.परहेज ही तो असली इलाज है।Sig:....................
उत्तरः यह वाक्य वैद्य परमानन्द ने बीमार स्त्री से कहा।

प्रश्न 2.तुम भी खा लेना, गाय को भी खिला देना।Sig:....................
उत्तरः यह वाक्य वैद्य परमानन्द ने किसान से कहा।

प्रश्न 3. नहीं, कई बेटे अपने बाप से भी बड़े हो जाते हैं।Sig:....................
उत्तरः यह वाक्य वैद्य परमानन्द ने अध्यापक से कहा।

प्रश्न 4.ठीक तो हो जायेगा, पर होश में नहीं आयेगा।Sig:....................
उत्तरः यह वाक्य वैद्य परमानन्द ने रमेश की माँ से कहा।

प्रश्न 5.तुझे क्या हो गया था मेरे लाड़ले।Sig:....................
उत्तरः यह वाक्य माँ ने अपने पुत्र रमेश से कहा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

Chapter 1 बड़े घर की बेटी

प्रश्न 1. बेनीमाधव सिंह के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए। Sig:.........................
उत्तर: प्रस्तुत कहानी 'बड़े घर की बेटी' जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।
बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव का जमींदार था। उसके पिता किसी समय बड़े धन धान्य सम्पन्न थे। गाँव में भव्य मंदिर एवं पक्का तालाब बनवाया था जिसकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, कहा जाता है कि कभी उनके दरवाजे पर हाथी झूमता था, आज वहाँ बूढ़ी भैंस थी। उनकी वर्तमान आय एक हजार रुपये वार्षिक से अधिक न थी, आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। इनके दो पुत्र थे। बड़े बेटे का नाम श्रीकंठ, छोटे बेटे का नाम लालबिहारी सिंह था। श्रीकंठ अध्ययनशील और मेहनती लड़का था। उसने बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर, शहर में नौकरी में लग गया था, साथ ही उसे आयुर्वेद औषधियों में अत्यधिक रूचि भी थी। वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से प्रेरित था जिसके कारण उसका गाँव में बड़ा सम्मान था।
लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का नौजवान था जो अपने बड़े भाई की तुलना में अधिक रौबीला एवं स्वस्थ था। वह खूब खाता पीता और मस्ती में व्यस्त रहता था। बड़े बेटे की शादी आनंदी से हुई जो एक सुशील, सम्पन्न परिवार की लड़की थी। छोटे बेटे का विवाह एक साधारण जमींदार की लड़की के साथ हुआ।

प्रश्न 2. आनंदी ने अपने ससुराल में क्या रंग-ढंग देखा? Sig:.........................
उत्तर: आनंदी एक बड़े घर की बेटी थी। वह अपने घर में सभी सुख-सुविधाओं में पली थी। वे सारी सुख-सुविधाएँ यहाँ ससुराल में नहीं थीं। यहाँ न तो बाग-बगीचे थे, न मकान में खिड़की और जमीन पर फर्श। फिर भी आनंदी ने कुछ ही दिनों में अपने आपको इस घर के अनुकूल बना लिया।

प्रश्न 3. लालबिहारी आनंदी पर क्यों बिगड़ पड़ा? Sig:.........................
उत्तर: एक दिन लालबिहारी सिंह ने माँस पकाने के लिए कहा। आनंदी ने माँस पकाते समय हाँड़ी में जो घी था, वह सब डाल दिया। जब लालबिहारी ने दाल में घी डालने के लिए कहा, तो आनंदी ने कहा कि माँस पकाने में घी खत्म हो गया। इसी कारण लालबिहारी आनंदी पर बिगड़ गया।

प्रश्न 4. आनंदी बिगड़ता हुआ काम कैसे बना लेती है? Sig:.........................
उत्तर: श्रीकंठ सिंह के छोटे भाई लालबिहारी सिंह के अभद्र व्यवहार से आनंदी क्रोधित हो जाती है। गुस्से में उसने अपने पति से सारी शिकायतें कीं। झगड़ा इतना बढ़ गया कि घर टूटने तक पहुँच गया। तब बिखरते हुए घर को देखकर आनंदी शांत हो जाती है और लालबिहारी को घर छोड़कर जाने से रोक लेती है। इस प्रकार आनंदी बिगड़ते काम को बना लेती है।

प्रश्न 5. आनंदी का चरित्र-चित्रण कीजिए। Sig:.........................
उत्तर: आनंदी एक बड़े घर की रूपवान, गुणवान तथा आदर्शवादी महिला है। यद्यपि वह अपने मायके में सुख-सुविधाओं में पली है, फिर भी वह परिस्थितियों के अनुकूल अपने आपको बदल सकती है। वह अपने घर की एकता बनाये रखना चाहती है और बिखरते घर को बचा लेती है। यही उसका बड़प्पन है कि बिगड़ते काम को बना लेती है।

Chapter 2 युवाओं से

प्रश्न 1.भारतवर्ष का पुनरुत्थान कैसे होगा? Sig:........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत का पुनरुत्थान शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से होगा। वह उत्थान विनाश की ध्वजा से नहीं, बल्कि शांति और प्रेम की ध्वजा से होगा। हमारी यह वृद्ध भारत माता पुनः एक बार जाग्रत होकर अपने सिंहासन पर पूर्ण वैभवता के साथ विराजमान होगी।

प्रश्न 2.त्याग और सेवा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी के क्या विचार हैं? Sig:........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंद के अनुसार "भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं- त्याग और सेवा। तुम काम में लग जाओ, फिर देखोगे इतनी शक्ति आयेगी कि तुम उसे सँभाल नहीं सकोगे। दूसरों के प्रति सोचने से व काम करने से भीतर की शांति जाग उठती है और धीरे-धीरे हृदय में सिंह का-सा बल आ जाता है। दुखियों का दर्द समझो और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो। प्रतिज्ञा करो कि अपना सारा जीवन लोगों के उद्धार कार्य में लगा देंगे।"

प्रश्न 3.स्वदेश-भक्ति के बारे में स्वामी विवेकानंद जी का आदर्श क्या है? Sig:........................
उत्तर:स्वदेशभक्ति के बारे में स्वामीजी कहते हैं- बड़े काम करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है- बुद्धि, विचारशक्ति और हृदय की महाशक्ति। अतः युवकों को चाहिए कि वे हृदयवान बने। यदि युवकों ने जान लिया है कि भारत के अपने गरीब, दीन-बन्धुओं की कई समस्याएँ हैं, तो समझ लो कि यही देशभक्ति की प्रथम सीढ़ी है। देशभक्ति का पहला पाठ है- स्वदेश-हितैषी होना। "उठो, जागो और तब-तक रुको नहीं, जब-तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय।"

प्रश्न 4.सर्व धर्म सहिष्णुता के बारे में स्वामी विवेकानंद जी के विचार लिखिए। Sig:........................
उत्तर:सर्व धर्म सहिष्णुता के बारे में स्वामीजी का विचार है- मैं सभी धर्मों को स्वीकार करता हूँ। और उन सबकी पूजा करता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ईश्वर की उपासना करता हूँ। वे स्वयं चाहे किसी भी रूप में उपासना करते हो, मैं मुसलमानों की मस्जिद में जाऊँगा, मैं ईसाइयों के गिरिजा में क्रास के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करूँगा, मैं बौद्धमंदिरों में जाकर बुद्ध और उनकी शिक्षा की शरण लूँगा। मैं जंगल में जाकर हिन्दुओं के साथ ध्यान करूँगा, जो हृदयस्थ ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं।

प्रश्न 5.शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी क्या कहते हैं? Sig:........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंदजी के अनुसार – शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूंस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता हैं। हमें उन विचारों की अनुभूति करनी चाहिए, जो जीवन-निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हों। यदि केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो हम पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करनेवाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं।

Chapter 3 निन्दा रस

प्रश्न 1.धृतराष्ट्र का उल्लेख लेखक ने क्यों किया है? Sig:.........................
उत्तर:लेखक के मित्र 'क' ने जब हर्ष के साथ मिलने का झूठा बहाना किया तो लेखक को उसके व्यवहार पर शक हो गया। क्योंकि वह सच्चे मन से खुश नहीं था। इसलिए लेखक ने धृतराष्ट्र का उल्लेख किया कि उसने भीम को दिखावे की खुशी में अपने पास बुलाया, जब कि मन में सोचा कुछ और थी।

प्रश्न 2.निन्दा की महिमा का वर्णन कीजिए। Sig:.........................
उत्तर:निन्दक लोग जहाँ कहीं इकट्ठे हो जाते हैं, वहाँ वे दूसरों की निन्दा में इतने तन्मय हो जाते हैं कि उन्हें अन्यों की चिन्ता ही नहीं होती। जितनी एकाग्रता और तन्मयता कोई भक्त भी भगवान के ध्यान में नहीं लगाता हो, उतनी ये निन्दा करने में लगा देते हैं। निन्दकों की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है।

प्रश्न 3.'मिशनरी' निन्दक से लेखक का क्या तात्पर्य है? Sig:.........................
उत्तर:मिशनरी निन्दक से लेखक का तात्पर्य उन निंदकों से है जो पूरी पवित्र भावना से निन्दा के कार्य में लगे रहते हैं। उनका किसी से वैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निंदा कार्य में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनंद से उछालते हैं जिस आनंद से अन्य लोग दुष्मनों की। निन्दा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

प्रश्न 4.निन्दकों के संघ के बारे में लिखिए। Sig:.........................
उत्तर:जिस प्रकार मजदूरों की ट्रेड-यूनियन होती है, वैसे निन्दकों का भी एक संघ होता है। संघ के सदस्य इधर-उधर की खबरें लाकर, संघ को सौंपते हैं। यह कच्चा माल माना जाता है। संघ इसे पक्का माल बनाकर, सभी सदस्यों को इस तरह बाँटते हैं, जैसे उनकी दृष्टि में वह 'बहुजन-हिताय' कार्य हो।

प्रश्न 5.ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दकों की कैसी दशा होती है? Sig:.........................
उत्तर:बुरे कर्मों में लगे व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकते। वही स्थिति निन्दकों की होती है। इनका अधिकांश समय ईर्ष्या, द्वेष से युक्त निन्दा करने में लगा रहता है। जैसे रात को कुत्ता चाँद को देखकर भौंकता है, वैसे ही निन्दक भौंकता है।

प्रश्न 6.निन्दा को पूँजी बनानेवालों के बारे में लेखक ने क्या कहा है? Sig:.........................
उत्तर:जिन लोगों के पास निन्दा के अलावा और कोई दूसरी सम्पत्ति नहीं होती। वे लोग इसी पूँजी या सम्पत्ति से अपना कारोबार बढ़ाते रहते हैं। उनका यह कलंकित कार्य ही उनकी प्रतिष्ठा मानी जाती है। वे सदा उसी का पारायण करते हैं।

प्रश्न 7.'निन्दा रस' निबंध का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। Sig:.........................
उत्तर:निन्दक निन्दा करके 'निन्दा-रस' का आनन्द लेता है। निन्दक दूसरों की निन्दा में सुख भोगता है। निन्दा के भी नमूने हैं। जैसे- कुछ लोग ईर्ष्या से निन्दा करते हैं, कुछ अपनी प्रसिद्धि के लिए निन्दा करते हैं, कुछ बिना कारण से ही निन्दा करते हैं। ऐसे लोगों के स्वभाव का उजागर करना ही लेखक का उद्धेश्य है।

Chapter 4 बिन्दा

प्रश्न 1.महादेवी वर्मा को बिन्दा की याद क्यों आ गई? Sig:........................
उत्तरःएक सज्जन बेटी को प्रवेश दिलाने स्कूल आये थे। उसकी कमजोर बेटी डरी हुई थी। उम्र ठीक न बताये जाने के कारण प्रवेश-पत्र लौटा दिया गया था। लेखिका ने सुना कि उन सज्जन की दूसरी पत्नी है, तो अचानक दो युगों से अधिक समय की धूल के नीचे दबी बिन्दा की याद आ जाती है।

प्रश्न 2.महादेवी वर्मा को पंडिताइन चाची का कौन-सा रूप आकर्षित करता था? Sig:....................
उत्तरःपंडिताइन चाची जब रंगीन साड़ी में सजकर, लाल स्याही की सिंदूर लगाकर, आँखों में काजल डालकर, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घुघरू वाले बिछुए पहनकर श्रृंगार करती, तो लेखिका महादेवी वर्मा को वह गुड़िया की तरह बहुत अच्छी लगती है।

प्रश्न 3.महादेवी वर्मा के कभी-कभी छत पर जाकर देखने पर बिन्दा क्या-क्या करते दिखाई देती थी? Sig:....................
उत्तरःजब कभी महादेवी वर्मा छत पर जाकर देखती, तो बिन्दा झाड़ू लगाती हुई, कभी आग जलाती हुई, कभी आँगन से पीने का पानी भरती हुई, तो कभी नयी अम्मा को दूध का कटोरा देती हुई दिखाई देती थी। ये सब बाजीगर के तमाशे की तरह लगता था।

प्रश्न 4.बिन्दा अपनी नयी अम्मा से किस प्रकार डरती थी? Sig:........................
उत्तरःबिन्दा नयी अम्मा से बहुत डरती थी। यहाँ तक कि थोड़ी बहुत ही आवाज आती अथवा आहट होती, तो वह काँपने लगती थी कि न जाने अब क्या होगा? नयी अम्मा की आवाज सुनते ही बिन्दा थर-थर काँपने लग जाती थी।

प्रश्न 5.महादेवी वर्मा ने दोपहर के समय सबकी आँख बचाकर बिन्दा के घर पहुंचने पर क्या देखा? Sig:...........
उत्तरःमहादेवी वर्मा एक दिन दोपहर को सबकी आँख बचाकर बिन्दा के घर पहुंची, तो देखा कि नीचे के सुनसान खंड में बिंदा अकेली खाट पर पड़ी थी। आँखें धंस गई थीं। मुख दानों से भरकर न जाने कैसे हो गया था। लेखिका चकित चारों ओर देखती रह गई। बिन्दा ने कुछ संकेत और कुछ अस्पष्ट शब्दों में बताया कि नयी अम्मा मोहन के साथ ऊपर रहती है, शायद चेचक के डर से।

प्रश्न 6.बिन्दा के घर के सामने भीड़ देखकर लेखिका के मन में क्या विचार आने लगे? Sig:.............
उत्तरःबिन्दा के घर के सामने भीड़ देखकर लेखिका ने सोचा कि पंडितजी का विवाह तो दूसरी पंडिताइन चाची के मरने के बाद होगा। मोहन तो अभी छोटा है। शायद बिन्दा का विवाह हो रहा होगा और उसने मुझे बुलाया तक नहीं। अपमानित होकर बिन्दा को किसी भी शुभकार्य में न बुलाने की ठान ली।

Chapter 5 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'

प्रश्न 1.अंबेडकर जी के बाल्य जीवन का परिचय दीजिए।Sig:........................
उत्तरःबचपन में डॉ. अम्बेडकर को भीमराव नाम रखा गया। घरवाले प्यार से 'भीवा' कहकर पुकारते थे। बचपन में उन्हें छुआछूत के भेदभाव को सहन करना पड़ा। स्कूल में प्रवेश भी मुश्किल से मिला। उन्हें कक्षा के भीतर अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठने की अनुमति नहीं थी। बैठने के लिए घर से बिछौना ले जाना पड़ता था। प्यास बुझाने के लिए स्कूल में पीने का पानी तक उन्हें नहीं मिल पाता था।

प्रश्न 2.अंबेडकर जी को शिक्षा प्राप्त करते समय किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? Sig:..................
उत्तरःडॉ. अम्बेडकर को शिक्षा प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने बैठने का टाट अपने साथ घर से ही ले जाना पड़ता था। पाठशाला में उन्हें कक्षा के भीतर अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठने की मनाही थी। वे अपनी कक्षा के बाहर सब छात्रों के जूतों के बीच दरवाजे के बाहर बैठते थे। भीमराव को पानी के घड़े को भी छूने की इजाजत नहीं थी। कारण यह था कि अछूतों के छू लेने से घड़े का जल भ्रष्ट हो जाता। चाहे कितनी भी प्यास लगे, बेशक प्यास के मारे प्राण ही क्यों न निकल जाएँ, मगर प्यासा अछूत घड़े से पानी लेकर नहीं पी सकता था। किसी चपरासी की कृपा हो गई, तो पानी मिल जाता, नहीं तो घर आकर ही पानी पीना पड़ता था। एक बार स्कूल में गुरु के प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए वे ब्लैक-बोर्ड की ओर चले, त्यों ही कक्षा के सवर्ण छात्रों ने विरोध किया की ब्लैक-बोर्ड के नीचे रखा भोजन इसके छूने से भ्रष्ट हो जाएगा।

प्रश्न 3.लंडन के गोलमेज सम्मेलन में अंबेडकर जी ने किन विषयों पर प्रकाश डाला? Sig:................
उत्तरःभारत की भावी शासन प्रणाली और संविधान के बारे में रूप-रेखा तय करने के लिए ब्रिटिश ... सम्राट में एक गोलमेज सम्मेलन लंडन में आयोजित किया। इस सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर जी ने अपने प्रभावशाली भाषण में अछूतों के उद्धार के लिए, उनके सुधार के लिए निर्भयता से अपने विचार रखे। उन्होने सिंह गर्जना करते हुए कहा "जब हम अपनी वर्तमान स्थिति और ब्रिटिश शासन से पहले की स्थिति की तुलना करते हैं, तो हम पाते हैं कि हम उन्नति करने की बजाय व्यर्थ में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।'

प्रश्न 4.पत्नी की मृत्यु का डॉ. अंबेडकर पर क्या प्रभाव पड़ा? Sig:........................
उत्तरः27 मई 1935 को अम्बेडकर जी की पत्नी रमाबाई का देहान्त हो गया। उन्होंने दुःखी होकर, भगवा वस्त्र पहनकर संन्यास लेने का निर्णय कर लिया। परन्तु परिवार के बड़ों तथा मित्रों के समझाने-बुझाने पर उन्होंने भगवा वस्त्र त्यागकर समाज-कल्याण के लिए संघर्ष करने का विचार किया। इस समय भगवा वस्त्र धारण करने के कारण लोगों ने उन्हें 'बाबासाहेब' कहना शुरू कर दिया।

Chapter 6 दिल का दौरा और एनजाइना

प्रश्न 1.दिल का दौरा और एनजाइना किसे कहते हैं? Sig:........................

उत्तरःदिल का दौरा और एनजाइना हृदय रोग के दो प्रकार है। एनजाइना में हृदय तक पहुंचने वाली ऊर्जा नहीं पहुंच पाती, जो कोरोनरी धमनी की शाखाओं में सिकुड़न की वजह से होता है। जब हृदय रक्त को पंप करने में असमर्थ हो जाता है, तो उसे 'एनजाइना' कहते हैं। इसी के भयंकर स्वरूप को 'दिल का दौरा' कहते हैं। किसी एक धमनी में रुकावट आ जाने में दिल का दौरा पड़ता है।

प्रश्न 2.दिल का दौरा और एनजाइना किन कारणों से होता है? Sig:........................

उत्तरःउच्च रक्तचाप, मोटापा, तनाव, धूम्रपान, वसा के खाद्य पदार्थों का सेवन, मदिरापन, कोलेस्ट्रोल का बढ़ना, परिवार में अन्य किसी को यह रोग होना, व्यायाम न करना, परिश्रम न करना ये सब दिल का दौरा और एनजाइना के मुख्य कारण माने गए हैं। उग्रता का स्वभाव, अकेलापन, शहरी जिन्दगी का तनाव, आधुनिकीकरण से जीवन के तौर तरीकों में बदलाव भी कारण हो सकते हैं।

प्रश्न 3.दिल का दौरा और एनजाइना रोग के प्रमुख लक्षण क्या हैं? Sig:........................

उत्तरःजब रोगी तनावपूर्ण स्थिति में होता है और उसके सीने में बाईं ओर दर्द होने लगता है, बेचैनी और भारीपन लगने लगता है, तो ये दिल के दौरे के लक्षण माने जाते हैं। खास तौर से सीने में असहनीय दर्द होता है और यह दर्द शरीर के विभिन्न भागों तक फैल जाता है। रोगी को ऐसा महसूस होता है जैसे उसकी छाती पर कोई बहुत भारी चीज रख दी गई हो। कभी-कभी असहनीय दर्द से रोगी बेहोश भी हो सकता है।

प्रश्न 4.दिल का दौरा पड़ने पर प्राथमिक उपचार के लिए क्या-क्या कदम उठाने चाहिए?

उत्तरःदिल का दौरा पड़ते ही डॉक्टर को बुलाना चाहिए। समाधान के लिए तब-तक कोई दर्द-निवारक गोली दी जा सकती है। पहले से ही यदि रोगी इसका शिकार है, तो उसे 'सार्बिट्रट' गोली दे देनी चाहिए। यदि रोगी की धड़कन रुक गई है, तो उसे पीठ के बल लिटाकर, उसके कपड़े ढीले करके, छाती पर मालिश करनी चाहिए। यथाशीघ्र अपनी साँस देने का प्रयास करें।

प्रश्न 5.हार्ट अटैक के रोगी का इलाज़ किस तरह किया जाता है? Sig:........................

उत्तरःरोगी को तुरन्त अस्पताल ले जाना जरूरी है। यदि धमनी का काम रुक गया हो, तो उसे ऐसी दवा दिलवानी चाहिए जिससे धमनी खुल जाये। स्ट्रेप्टोकाइनेज या यूरोकाइनेज जैसी दवा इंजेक्ट भी किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर दवा और पेसमेकर की जरूरत भी हो सकती है।

प्रश्न 6.'बैलून एंजियोप्लास्टी' तकनीक क्या है? Sig:........................

उत्तरःजब एक-दो धमनियाँ अवरुद्ध हो जाती है, तो उन्हें ठीक करने के लिए बैलून एंजियोप्लास्टी' की जाती है। एक पतली ट्यूब के द्वारा गुब्बारे को धमनी के सिकुड़े हुए भाग तक पहुँचाकर फुलाया जाता है। उससे वसा की परत दबकर धमनी खुल जाती है। फिर रक्त बहाव सामान्य होकर, रोग मिट जाता है।

प्रश्न 7.हृदय रोग से बचने व काबू पाने के लिए क्या-क्या एहतियात बरतने चाहिए?

उत्तरःरोजाना व्यायाम करें। इसके लिये सुबह-शाम की सैर अच्छी होती है। अपने वजन पर कड़ी नजर रखना चाहिए। उसे बिल्कुल न बढ़ने दें। मानसिक तनाव को भी दूर रखें। ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ हो या फिर शुगर या मधुमेह हो, तो ठीक समय दवा लेते रहें। इससे दिल को राहत मिलेगी। तले हुए, अधिक वसा वाले भोजन से बच कर रहें। घी-मक्खन, अंडे, चिकन, पूड़ी-कचौड़ी, समोसे, पराँठे, टिक्की, पकौड़ों आदि से दूर रहें। जहाँ तक हो सके, कॉफी और चाय भी कम से कम लें। धूम्रपान और मदिरा पर रोक लगा दें।

Chapter 7 मेरी बद्रीनाथ यात्रा

प्रश्न 1.हिमालय की विशेषता का वर्णन कीजिए।Sig:........................
उत्तरः हिमालय को कालिदास ने 'नगाधिराज' कहा है। यह विश्व का श्रेष्ठ एवं ऊँचा पर्वत है। बर्फीला नजारा देखते ही बनता है। इसके अंचल से कितनी ही नदियाँ अलख जगाते हुए, कलकल निनाद करते हुए बहती हैं। कस्तूरी मृग अपनी नाभि में सुगन्ध लिए यहीं घूमते हैं। देवदारू, चीनार आदि वृक्षों की छटा देखते ही बनती है। रंग-बिरंगे पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ता है। इस प्रकार हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करके किसी को कवि या किसी को दार्शनिक भी बना देता है।

प्रश्न 2.बद्रीनाथ यात्रा में लेखक और उनके साथियों की दिनचर्या लिखिए।Sig:........................
उत्तरः लेखक और उनके साथी प्रतिदिन प्रातः तीन बजे उठते हैं। अपने बिस्तर समेटकर, नित्यकर्म पूरा करके, भारवाहकों को अपने सामान देकर आगे बढ़ते हैं। प्रतिदिन 12 से 18 मील यात्रा करते हैं। बद्री विशाल की जयकार करते हुए, हँसी-मजाक की बातें करते हुए, आवश्यकतानुसार अल्पाहार लेते हुए, अगले पड़ाव तक पहुंचते हैं।

प्रश्न 3.तुंगनाथ शिखर के सौंदर्य के संबंध में लेखक ने क्या कहा है? Sig:........................
उत्तरः तुंगनाथ शिखर 12,080 फुट की ऊँचाई पर है। यद्यपि टेढ़ामेढ़ा उतार-चढ़ाव का रास्ता है, फिर भी थकान महसूस नहीं होती। गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, चौखंभा आदि रजत-शिखर सूर्य-प्रकाश में चमकते रहते हैं। हिम-शिखरों के दर्शनों का यात्री लाभ उठाते हैं। यहाँ की प्रकृति यात्रियों को मोह लेती है। शाम होने से पूर्व ही यहाँ कोहरा छा जाता है।

प्रश्न 4.बद्रीनाथ की घाटी का चित्रण कीजिए।Sig:........................
उत्तरः बद्रीनाथ की घाटी में केदारनाथ जैसा सौन्दर्य तो नहीं है, परन्तु अलकनंदा का रूपजाल जरूर है। यह नदी यहाँ उछल-कूद मचाती, गर्जन करती, जल-प्रपात बनाती आगे बढ़ती है। कहीं-कहीं बर्फीले-प्राकृतिक पुल देखने लायक होते हैं। नटखट धाराएँ अटखेलियाँ करती हुई, शोर मचाती हुई आगे बढ़ती हैं।

प्रश्न 5.बद्रीनारायण मंदिर की विशेषता पर प्रकाश डालिए।Sig:........................
उत्तरः अलकनंदा के दोनों ओर के पहाड़ नर-नारायण कहलाते हैं। कहा जाता है कि किसी जमाने में बद्रीनाथ में बेरी का वन था। बदरी को बेर कहा जाता है। यह मंदिर 10,480 फुट की ऊँचाई पर बना हुआ है। मंदिर की स्थापना आदि शंकराचार्य जी ने किया था। यह मंदिर नारायण मंदिर की गोद में बसा है। नीलकंठ के हिम-शिखर की छाया भी है। देश का अंतिम गाँव भी माना जाता है। यह मंदिर आकर्षण है- सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का। बद्रीनारायण का मंदिर एक तीरथ धाम हैं।

Chapter 8 नालायक

प्रश्न 1.अनट्रेण्ड अध्यापकों के चुनाव के माहौल का वर्णन कीजिए।Sig:.........................

उत्तरः उस दिन जिला परिषद में प्राइमरी स्कूलों के लिए अनट्रेण्ड अध्यापकों का चुनाव था। उसमें तीन सौ अध्यापक चुने जानेवाले थे। दस हजार उम्मीद्वार आये थे। हर एक उम्मीद्वार के साथ लगभग 5-6 सिफारिश करनेवाले थे। दर्शक भी काफी थे और वह एक मेला जैसा लग रहा था। अनट्रेण्ड अध्यापकों के चुनाव के लिए शहर में सुबह से ही इतनी भीड़ लग गई थी कि मानो कुंभ का मेला लग गया हो। सड़कों पर लोगों की चहल-पहल और शोरगुल शुरू हो गया था। ऐसा लग रहा था कि किसी नेता को देखने भीड़ इकट्ठी हो रही है।

प्रश्न 2.जिला परिषद के बाहर का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।Sig:.........................

उत्तरः जिला परिषद में प्राइमरी स्कूलों के लिए अनट्रेण्ड अध्यापकों की नियुक्ति होनी थी। इसलिए जिला परिषद् के बाहर अपार जनसागर उमड़कर जमा हो गया था। प्रवेश-द्वार से लेकर बाहर आँगन, लान, मैदान, चौक, सड़क और लगभग दो-तीन फर्लांग तक ठसमठस आदमी भरे हैं, किसी को पता नहीं कि क्यों खड़े हैं, बस खड़े हैं। जो पहले आये वे पहले से फाटक की ओर खड़े होते गए। जो आगे थे उनका निकलना कठिन हो रहा था। भीतर परिषद कार्यालय था, जो बन्द था।

प्रश्न 3.लाउड स्पीकर से क्या घोषणा की जा रही थी? Sig:.........................

उत्तरः चेयरमैन साहब के बंगले के बाहर भीड़ जमा होने के कारण, पुलिस की गाड़ियाँ भीड़ को नियंत्रित करने पहुंची। लाउड़ स्पीकर से घोषणा की जाने लगी कि "सज्जनों, ज्ञात हुआ है कि आप लोग थर्ड डिवीजनरों के सिफारिशी हैं। आप लोगों को बहुत समझाया गया कि सिफारिश से काम नहीं चलेगा, परन्तु आप लोग मानते ही नहीं हैं। अब स्कूल-मास्टर के लिए थर्ड डिवीजनर्स नहीं लिए जायेंगे। यदि आप लोग बिना उस सिफारिशी कागज को दिये टलनेवाले नहीं हैं तो दे दीजिये। पचास व्यक्ति खांची लेकर तैनात किये जाते हैं। इन्हीं खांचियों में डाल दें।"

प्रश्न 4.दौड़ कर आते हुए उम्मीदवार ने क्या कहा? Sig:.........................

उत्तरः दौड़कर आते हुए उम्मीदवार ने गुस्से में कहा – "साहब लोग कहते हैं कि अध्यापक पद के लिए थर्ड डिविजनर नहीं लिये जाएँगे। क्यों नहीं लिये जायेंगे? जिसका ज्यादा वोट होगा, उसे लिया जायेगा। हम सभी फर्स्ट और सेकेंड डिवीजनर के खिलाफ़ आंदोलन करेंगे।"

प्रश्न 5.थर्ड डिवीजनरों की व्यथा को प्रकट कीजिए।Sig:.....................

उत्तरः थर्ड डिवीजनरों का जीवन नरक के समान होता है। उनके लिए हर कहीं दरवाजा बंद रहता है जैसे वे आदमी नहीं, बैल हैं। उनकी उपेक्षा होती है। उन्हें नौकरी के लिए नाक रगड़नी पड़ती है। कदम, कदम पर निराशा होती है। अतः थर्ड डिविजनवालों को नालायक समझकर कोई नौकरी नहीं देता।

Chapter 9 राष्ट्र का स्वरूप

प्रश्न 1.राष्ट्र को निर्मित करनेवाले तत्वों का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तरःभूमि, भूमि पर बसनेवाले जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूपे बनता है। भूमि के प्रति हम जितने जागृत होंगे, उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती होगी। मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग है। पृथ्वी माता है और जन उसके पुत्र हैं। राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है।

प्रश्न 2.धरती 'वसुंधरा' क्यों कहलाती है? Sig:....................
उत्तरःधरती माता की कोख में अमूल्य निधियाँ भरी हैं, जिनके कारण वह वसुंधरा कहलाती है। लाखो, करोड़ों वर्षो से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेनेवाले जड़-पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य के प्रतीक बन जाते हैं। नाना प्रकार के अनगढ़ रत्न, विन्ध्य की नदियों के प्रवाह में चिलकते घाट से नई शोभा फूट पड़ती है।

प्रश्न 3.राष्ट्र निर्माण में जन का क्या योगदान होता है? Sig:....................
उत्तरःजन के हृदय में राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। जो जन मातृभूमि के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहता है, उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न 4.लेखक ने संस्कृति को जीवन-विटप का पुष्प क्यों कहा है? Sig:....................
उत्तरःराष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जायँ, तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौंदर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है। जीवन के विकास की युक्ति ही संस्कृति के रूप में प्रकट होती है।

प्रश्न 5.समन्वययुक्त जीवन के संबंध में वासुदेवशरण अग्रवाल के विचार प्रकट कीजिए।Sig:............
उत्तरःमाता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है। इसी प्रकार पृथ्वी पर बसनेवाले जन बराबर हैं। उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है। ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलनेवालेऔर अनेक धर्मों को माननेवाले हैं, फिर भी ये मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण इनका सौहार्द्र भाव अखंड है। समन्वय के मार्ग से भरपूर प्रगति और उन्नति करने का सबको समान अधिकार है। राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं। समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है।

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer

Chapter 10 रिहर्सल

प्रश्न 1.वैद्य परमानन्द बीमार स्त्री का इलाज किस प्रकार करते हैं? Sig:....................
उत्तरः 'बीमार स्त्री इलाज के लिए जब वैद्य परमानंद के पास जाती है तो वे उसे उसका बचना मुशकिल है कहकर खूब डराते है। बाद में उससे अजीब से प्रश्न पूछते है जिसका बीमारी से संबंध ही नहीं। उसके हृदय पर चंदन का लेप लगाने के लिए कहते है। उसके हाथ में अमर भास्कर चूर्ण देकर उसे इस तरह खाने को कहते है वह सिधे पेट में न जाकर हृदय में जाए। फिर उसे पंद्रह दिन तक खाना न खाने की सलाह देते हैं।

प्रश्न 2.वैद्य परमानंद गाय की बीमारी दूर करने का क्या उपाय बताते हैं? Sig:....................
उत्तरः परमानंद ने किसान से कहा – तुम बीमार हो या तुम्हारी गाय, मेरे लिए एक ही बात है। लाओ, नब्ज दिखाओं। किसान बोला – जी, नब्ज मैं दिखाऊँ? परमानंद – और कौन दिखाएगा? गाय तुम्हारी बीमार है या किसी और की? नब्ज देखते हुए कहा – गाय की हालत चिंताजनक है। उसे शीघ्र चारा खिलाओ, नहीं तो मरे बिना नहीं मानेगी। उसे उसी का दूध निकालकर पिलाओ। यह अमर भास्कर चूर्ण ले जाओ, गरम पानी के साथ खा लेना। "मैं खाऊँ या गाय को खिलाऊँ?" "तुम भी खा लो, गाय को भी खिला दो। दोनों को लाभ पहुंचेगा।'

प्रश्न 3.प्रोफेसर पांडुरंग बीमार स्त्री का इलाज किस ढंग से करते हैं? Sig:....................
उत्तरः जब स्त्री प्रोफेसर साहब के पास पहुँचकर बोली – बीमार हूँ प्रोफेसर साहब! मेरा हृदय धड़कता है, घबराहट बहुत रहती है, कमजोरी कैसे दूर हो सकती है?, प्रोफेसर ने कहा – आपको भ्रम हो गया है, हृदय तो मेरा भी.धड़कता है, दिल की कमजोरी है, बीमारी नहीं है। हिम्मत रखिए, आँखें मूंद लीजिए, अब आप बीहड़ जंगल में हैं, हाथियों की चिंघाड़, शेरों की दहाड़, शेर आपकी ओर बढ़ रहा है, घबराइए मत, लड़िए उससे, अब इसे घूसे से मार दीजिए। उसके दाँत तोड़ दीजिए। स्त्री आँखें खोलती है। पांडुरंग जी! मैं चलती हूँ, नमस्ते। जाइए, महसूस कीजिए कि आप लक्ष्मीबाई की तरह तलवार चलाती बढ़ रही हैं। इस प्रकार प्रोफेसर बीमार स्त्री का इलाज करते है।

प्रश्न 4.वैद्य और प्रोफेसर के आमने-सामने आने के बाद का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।Sig:....................
उत्तरः वैद्य परमानंद और प्रोफेसर पांडुरंग आमने-सामने आने के बाद एक-दूसरे पर व्यंग्य करते हैं। प्रोफेसर परमानंद को 'यमराज का सगा भाई' कहते हैं तो परमानंद प्रोफेसर को 'वात-पित्त-कफ' कहता है। प्रत्युत्तर व्यंग्य करते हुए वह कहता है कि तुम यदि किसी की नब्ज भी पकड़ लेते हो, तो उसकी जान चली जाती है। इस प्रकार आपस में हँसी-मजाक भी होती है और ताने भी दिए जाते हैं।

प्रश्न 5.रमेश ने बेहोशी का अभिनय क्यों किया? Sig:....................
उत्तरः रमेश अपने घर में बेहोश हो जाता है। उसके चिंतित पिता वैद्य परमानंद और प्रोफेसर पांडुरंग को बुला लाते है। परमानंद के अनुसार लड़के को सन्निपात है तथा प्रोफेसर पांडुरंग के अनुसार उसे स्नायुरोग है। यह सब सुनकर लड़का घबडा जाता है और चादर फेंककर उठते हुए कहता है कि वह पूरी तरह होश में है। न उसे भ्रम है और न उसे कुछ महसूस करने की जरूरत है। स्कूल में होने वाले नाटक जिसमें उसे दो घंटे बेहोशी का अभिनय करना है, वह उसीकी रिहर्सल कर रहा था।

प्रश्न 6.वैद्य परमानंद का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तरः वैद्य परमानंद का आयु लगभग 50 वर्ष है। आँखों पर चश्मा, लम्बी दाढ़ी, झुर्सदार मूंछे हैं। परमानंद स्वयं समझते हैं कि उनके रोगी उनके पास दुबारा नहीं लौटते। हर प्रकार के रोग के लिए उनके पास एक ही दवा है और वह है 'अमर भास्कर चूर्ण'। उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि उनकी दवा से कोई रोगी ठीक होगा या नहीं, उन्हें तो बस सभी को खिलाना है 'अमर भास्कर चूर्ण'। यहाँ तक कि गाय को भी वही चूर्ण खिलाने को कहते हैं।

प्रश्न 7.प्रोफेसर पांडुरंग का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................

उत्तरः प्रोफेसर पांडुरंग की उम्र बयालीस वर्ष है। उनकी दाढ़ी फ्रेंचकट है, मूंछे साफ, आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा लगाते हैं। सूट पहनते हैं और टाई लगाते हैं। बीमारियों का इलाज करते हैं। बीमार स्त्री को आँखें बंद करके जंगल में होने का महसूस करने को कहते हैं और शेर को घूसे से मारने को कहते हैं। किसान की बीमार गाय के इलाज के लिए उसका फोटो लाने को कहते हैं।

Chapter 11 कबीरदास के दोहे

प्रश्न 1.गुरु की महिमा के बारे में कबीर क्या कहते हैं? Sig:....................

उत्तर: गुरु की महिमा के बारे में कबीर कहते हैं कि गुरु के प्रताप से सब दुःख दर्द मिट जाते हैं। वह बड़ा भाग्यशाली है कि उसे रामानंद जैसे गुरु मिले। गुरु भगवान से बढ़कर हैं क्योंकि उन तक पहुंचने का मार्ग गुरु ही बताते हैं। अतः कबीर कहते हैं कि अगर गुरु और गोविन्द दोनों उसके सामने हो तो वह गोविन्द (भगवान) से पहले गुरु को ही प्रणाम करेंगे।

प्रश्न 2.जीवन की नश्वरता के बारे में कबीर के क्या विचार हैं? Sig:....................

उत्तर: जीवन की नश्वरता के बारे में कबीरदास कहते हैं कि यह मनुष्य जीवन क्षण-भंगुर है। इसलिए इसके प्रति अहंकार नहीं करना चाहिए। जो कुम्हार मिट्टी को रौंदता है, उससे मिट्टी कहती है- तू मुझे क्यों रौंदता है? एक दिन वह भी आयेगा, जब तू मर जायेगा, तो इसी मिट्टी में तुम्हें गाड़ दिया जाएगा। तब मैं तुझे रौंदूंगी। अतः मानुष-तन का गर्व नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 3.दया और धर्म के महत्व का वर्णन कीजिए।Sig:....................

उत्तर: दया और धर्म ये दोनों अच्छे गुण या आचरण हैं। जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म भी होता है और जहाँ लोभ (लालच) होता है, वहाँ पाप होता है। इसी प्रकार जहाँ क्रोध होता है, वहाँ काल या मृत्यु होती है और जहाँ क्षमा होती है, वहाँ ईश्वर होते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए दया और क्षमा को अपनाना चाहिए, लोभ व क्रोध को त्यागना चाहिए।

प्रश्न 4.समय के सदुपयोग के बारे में कबीर क्या कहते हैं? Sig:....................

उत्तर: समय के सदुपयोग के बारे में कबीरदास कहते हैं कि हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो आज करना है, वह अभी कर लेना चाहिए। क्योंकि कल क्या होगा, किसने जाना? पल भर में प्रलय हो सकता है, फिर कब करोगे? बाद में पछताने से क्या होगा?

प्रश्न 5.कबीर के अनुसार ज्ञान का क्या महत्व है? Sig:....................

उत्तर: कबीरदास ज्ञान का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि साधु की कभी जाति नहीं पूछनी चाहिए। यदि पूछना ही है, तो उसके ज्ञान के बारे में चर्चा कर सकते हैं। हमें खरीदनी है तलवार, तो तलवार का मूल्य जानना है, नाकि तलवार को रखने के म्यान का। अतः ज्ञान को महत्व देना चाहिए।

Chapter 12.तुलसीदास के दोहे

प्रश्न 1.तुलसीदास की रामभक्ति का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: तुलसीदास जी कहते हैं कि मुझे तो केवल मेरे इष्ट राम पर भरोसा है, उसी की आशा, उसी का बल है; जैसे स्वाति नक्षत्र में बारिश के पानी की पहली बूंद के लिए चातक पक्षी तरसता रहता है। अर्थात् मेरे राम यदि स्वाति-सलिल हैं, तो मैं चातक हूँ।

प्रश्न 2.तुलसीदास के अनुसार संत के स्वभाव का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: तुलसीदास जी के अनुसार संत का स्वभाव फलदार आम के वृक्ष की तरह होना चाहिए। आम का वृक्ष दूसरों की भलाई के लिए ही फलता और फूलता है। मनुष्य आम को पाने के लिए पेड़ को पत्थर मारता है, बदले में पेड़ मनुष्य को फल (आम) देता है। उसी प्रकार संतो को चाहिए कि वे लोक निंदा कि परवाह न कर समाज को सुधारने के कार्य में लगे रहें।

प्रश्न 3.तुलसीदास ने मधुर वचन के महत्व का कैसे वर्णन किया है? Sig:....................
उत्तर: मधुर वचन के बारे में तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठा बोलने से हमारे मन में रहनेवाला अहंकार मिट जाता है। ठीक वैसे ही, जैसे कि उफनते हुए दूध पर थोड़ा-सा ही शीतल (ठंडा) जल छिड़कने से उफनता हुआ दूध नीचे बैठ जाता है।

प्रश्न 4.तुलसीदास के अनुसार मनुष्य के जीवन में संतोष-धन का क्या महत्व हैं? Sig:....................
उत्तर: दुनिया में कई प्रकार के धन हैं। जैसे – गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन आदि। इन सबके रहते हुए भी अथवा इनको प्राप्त करने पर भी मनुष्य को संतुष्टि नहीं होती। तुलसीदास जी कहते हैं कि जब सन्तोष रूपी धन हमें मिल जाता है, तो ये सभी प्रकार के धन धूल के समान हो जाते हैं। अर्थात् 'सन्तोष' ही सबसे बड़ा धन है।

प्रश्न 5.तुलसीदास कुल रीति केFlow पालन करने के सम्बन्ध में क्या कहते हैं? Sig:....................
उत्तर: तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें अपने कुल के रीति-रिवाज अथवा कुल की परंपरा का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। जो लायक हो उसी से ब्याह कीजिए, जो लायक हो उसी से बैर कीजिए और जो लायक हो, उसी से प्रीति या प्रेम कीजिए।

Chapter 13 मीराबाई के पद

प्रश्न 1.मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: मीराबाई कृष्ण की अनन्य भक्त है। वह अपना सब कुछ कृष्ण के लिए समर्पित करती है। वह कहती है, मेरे तो केवल गिरधर गोपाल हैं, दूसरा कोई नहीं है। इसी कारण मैं ने उसे पाने के लिए भाई-बन्धु, समस्त परिवार को छोड़ दिया है। साधु-संतों की संगती में बैठकर लोक लाज़ खोया है। अपने आँसुओं से सींच-सींच कर अपने हृदय में कृष्ण के प्रेम की बेल बो लिया है। जब राणा ने मुझे कृष्ण भक्ति से विमुख करने के लिए विष का प्याला भेजा तो प्रसन्नता से पी लिया। मेरी लगन गिरधर कृष्ण से लग गई है, यह छूट नहीं सकती।

प्रश्न 2.मीराबाई ने जीवन के सार तत्व को कैसे अपना लिया? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने अपने इष्ट गिरधर गोपाल की सच्चे मन से भक्ति की है। उसने जीवन के सारतत्व को अपना लिया है। अर्थात् तीर्थाटन, व्रत-उपवास अथवा कासी में करवट लेने जैसे पाखंड (दिखावटी) भक्ति न करके, काया-वाचा-मनसा वाली सच्ची भक्ति की है।

प्रश्न 3.मीराबाई ने जीवन की नश्वरता के सम्बन्ध में क्या कहा हैं? Sig:....................

उत्तर: मीराबाई के अनुसार धरती और आसमान में जितनी दूर तक दृष्टि जाए, सबकुछ नश्वर है। जो जन्म लेता है, वह एक-न-एक दिन अवश्य मरता है। यह शरीर नश्वर है। मनुष्य को इस नाशवान शरीर के लिए गर्व नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह शरीर मिट्टी से बना है और मिट्टी में मिल जायेगा। यह जीवन चिड़ियों के खेल के समान है, जीवन की साँझ होते ही सबकुछ खतम हो जायेगा।

प्रश्न 4.मीराबाई सांसारिक बन्धन से क्यों मुक्ति चाहती हैं? Sig:....................

उत्तर: मीराबाई का मानना है कि इस संसार में जो आता है, वह मोह-माया के बन्धन में फँस जाता है और वह ऐसी स्थिति में ईश्वर को नहीं पा सकता। इतना ही नहीं, उसे मुक्ति या मोक्ष भी मिलना कठिन हो जाता है। इस आकाश और भूमि के बीच दिखाई पड़नेवाला सब नष्ट होनेवाला है। तीर्थयात्रा, वृत, ज्ञान की बातें, और काशी में करवट लेने की बात झूठी और आडंबर मात्र है। शरीर का घमण्ड नहीं करना है। यदि ईश्वर को पाना है और मोक्ष पाना है, तो संसार के बन्धनों से छुटकारा पाना अति आवश्यक है। इसलिए मीराबाई इस सांसारिक बन्धन से मुक्ति चाहती है।

Chapter 14 शरण वचनामृत

प्रश्न 1.अल्लमप्रभु देव ने माया के सम्बन्ध में क्या कहा है? Sig:....................

उत्तर: अल्लमप्रभु देव ने माया के बारे में कहा है कि – लोग कनक को माया मानते भी हैं और नहीं भी। कामिनी या स्त्री को माया मानते भी हैं और नहीं भी। माटी को माया मानते भी हैं और नहीं भी। अतः मन के आगे जो चाह है, वही माया है।

प्रश्न 2.कविता में व्यक्त बसवेश्वर के विचारों को स्पष्ट कीजिए।Sig:....................

उत्तर: महात्मा बसवेश्वर कहते हैं कि ज्ञान से अज्ञान मिटता है, ज्योति से अंधकार मिटता है, सत्यसे असत्य मिटता है, पारस से लोहत्व मिटता है। इसी प्रकार हे कूडलसंगम देव आपके शरणों के अनुभाव से या साक्षात्कार से या ज्ञान से मेरा सांसारिक मोह भी छूट गया, हे कूडलसंगम देव।

प्रश्न 3.अक्कमहादेवी के अनुसार भवसागर में कैसे रहना चाहिए? Sig:....................

उत्तर: अक्कमहादेवी कहती हैं कि पर्वतों पर घर बसाकर, जंगली जानवरों से क्या डरना? सागर के किनारे रहकर, लहरों से क्या डरना? हाट में रहकर, शोरगुल से कैसे डरना? हे चन्नमल्लिकार्जुन सुनो, संसार में जन्म लेने पर स्तुति-निंदा से क्या डरना? मन में क्रोध न करके हर हाल में समानभाव से, शांत चित्त रहना ही उचित है, यही सही मायने में जीना है।

Chapter 15 रसखान के सवैये

प्रश्न 1.रसखान ब्रजभूमि में क्यों जन्म लेना चाहते हैं? Sig:....................

उत्तर: रसखान को कृष्ण की क्रीड़ा-स्थली ब्रजभूमि से बड़ा लगाव है। अतः वे कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य बनूँ, तो गोकुल के ग्वालों के बीच मेरा जन्म हो, पशु हो तो नंदबाबा की गौओं में, पक्षी हों तो कालिंदी-कूल या यमुना के तट स्थित कदंब डालों पर और यदि पत्थर भी बनूँ तो गोवर्धन पर्वत के पत्थर के रूप में जन्म लूँ।

प्रश्न 2.गोपी क्या-क्या स्वांग भरती है? Sig:....................

उत्तर: गोपी अपने प्रियतम श्रीकृष्ण को पाने के लिए मोर-पंख का मुकुट पहनकर, गुंज की माला (रत्नों की माला) गले में धारण कर, पितम्बर ओढ़कर हाथ में लकुटिया लेना चाहती है। वह कृष्ण के सभी स्वाँग भरकर गोधन और ग्वालिनों के संग फिरना चाहती है परन्तु मुरलीधर की मुरली अपने अधरों पर नहीं रखना चाहती है।

प्रश्न 3.गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम कैसा है? Sig:....................
उत्तर: गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है। वे अपने कृष्ण को पाने के लिए. कृष्ण को रिझाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं; परन्तु अपनी मर्यादा के साथ रहना चाहती हैं। गोपियाँ ब्रजभूमि, ब्रज के पशु-पक्षी तथा ब्रज की गौएँ आदि को कृष्णभक्ति में सहायक मानती हैं।

Chapter 16 कुटिया में राजभवन

प्रश्न 1.सीता जी अपनी कुटिया में कैसे परिश्रम करती थीं? Sig:....................
उत्तर: सीता जब वनवास जाने के लिए राजभवन छोड़कर श्रीराम और लक्ष्मण सहित वन में कुटिया बसाती है, वहाँ उसका काम करने के लिए कोई दासी नहीं होती। वह स्वयं पसीना बहाकर सारे गृह कार्य जैसे भोजन बनाना, कुटिया की सफाई, पानी लाना आदी करती है जिससे उसका 'आत्म स्थैर्य बड़ता है और दूसरों पर निर्भर होने की आदत छूट जाती है। कुटिया में आकर उसे घर और परिवार के महत्व का पता चलता है।

प्रश्न 2.सीता जी प्रकृति-सौंदर्य के बारे में क्या कहती हैं? Sig:....................
उत्तर: सीता जी प्रकृति-सौंदर्य के बारे में कहती हैं कि – यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे प्रकृति में रहने का, विचरण करने का अवसर मिला है। यहाँ की हरियाली, शुद्ध हवा, पशु-पक्षियों का कलरव, लता-फूल आदि मन को प्रसन्न-चित्त करने वाली प्रकृति की शोभा है। यह प्रकृति का मायालोक किसी राजभवन से कम नहीं।

प्रश्न 3.सीता जी कुटिया में कैसे सुखी हैं? Sig:....................
उत्तर: 'सीता जी को कुटिया ही राजभवन की तरह लग रही है। क्योंकि उनके प्राणेश उनके साथ हैं, देवर लक्ष्मण भी सचिव की तरह प्रहरी बने हुए. है। इसके अलावा प्राकृतिक सौन्दर्य ने उनको मोह लिया है। सीताजी स्वावलम्बी बनी हुई हैं.। प्रकृति के कण-कण को सीता जी ने राजभवन के सुख-वैभव के रूप में अपना लिया है।

प्रश्न 4.'कुटिया में राजभवन' कविता का आशय संक्षेप में लिखिए।Sig:....................
उत्तर: 'कुटिया में राजभवन' इस कविता का आशय है- सीता जी वन में भी राजसुख भोगती हैं। श्रीरामचंद्र जी स्वयं सीता जी के साथ-साथ रहते हैं। देवर लक्ष्मण मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं। यहाँ धन और राज-वैभव का कोई मूल्य नहीं है।

Chapter 17   तोड़ती पत्थर

प्रश्न 1.इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर: इलाहाबाद के पथ पर वह महिला पत्थर तोड़ती थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं था, जहाँ वह बैठ सके। उसका तन साँवला था, पर वह भरे यौवन में थी। आँखें नीचे थी और काम में तत्पर थी। बड़ा हथौड़ा हाथ में लिए प्रहार करते हुए पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 2.किन परिस्थितियों में नारी पत्थर तोड़ रही थी? Sig:....................
उत्तर: एक साधनहीन और असहाय नारी इलाहाबाद के पथ पर बैठकर पत्थर तोड़ रही है। आसपास कोई छायादार पेड़ नहीं है। धूप चढ़ रही थी। गर्मी के दिन थे। शरीर को झुलसा देनेवाली धूप थी। गर्म हवा और धूल उड़ रही थी। दुपहर का समय था। इसी परिस्थिति में वह नारी पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 3.'तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। Sig:.....................

उत्तर: 'तोड़ती पत्थर' कविता में निरालाजी ने इलाहाबाद की एक सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री का चित्रण किया है। साथ ही एक मजदूरिन जिस परिस्थिति में काम कर रही थी, उसका यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है। स्त्री रुई की तरह तपती धरती और बरसती लू की दुपहरी में पत्थर तोड़ रही है। आसपास कोई छायादार पेड नहीं है। गर्म हवा और धूल उड़ रही है। यहाँ कवि ने उस सांवली सलोनी निर्धन मजदूरिन के कठिन परिश्रम का महत्व प्रकट किया है।

Chapter 18 उल्लास

प्रश्न 1.'उल्लास' कविता के आधार पर मानव हृदय में उठनेवाले भावों को अपने शब्दों में लिखिए।Sig:.....................

उत्तर: मानव हृदय में शैशव काल में नव विकास देखा जा सकता है। यौवन या युवावस्था में यौवन का उल्लास देखा जा सकता है। संसार के झंझा-झकोरों में आशा रूपी लताओं के विकास को देखा जा सकता है। इसी प्रकार आकांक्षा, उत्साह और प्रेम का भी क्रमिक प्रकाश देख सकते हैं।

प्रश्न 2.कवयित्री ने जीवन के सम्बन्ध में क्या कहा है? Sig:.....................

उत्तर: कवयित्री ने जीवन के सम्बन्ध में कहा है कि कभी निराश नहीं होना चाहिए, न निराशा में रोना चाहिए। यह जग या संसार झूठा है, यह विरक्ति है – ऐसे भाव भी मन में नहीं लाने चाहिए। शत्रु की पहचान के लिए न घृणा करें और न कभी अशांति का वातावरण लाएँ।

प्रश्न 3.'उल्लास' कविता का आशय संक्षेप में लिखिए।Sig:.....................

उत्तर: जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखना इस कविता का आशय है। जीवन में हर समय हर्ष व उल्लास से रहना चाहिए। अशांति घृणा को त्यागकर सब से प्रेम के साथ व्यवहार करना चाहिए। हम अगर लोगों में प्यार बांटेंगे तो हमें प्यार ही मिलेगा, घृणा से व्यवहार करेंगे तो समाज में घृणा और अशांति फैलेगी। यही इस कविता का आशय है।

Chapter 19 तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए

प्रश्न 1.बच्चन जी ने जग में क्या लुटाया और क्यों? Sig:.....................

उत्तर:समाज के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण रखनेवाले बच्चन जी ने गूंज-गूंज कर मिटनेवाले गीत बनाए। जब जब समाज के लोगों ने उनके सामने हाथ फैलाए, बच्चन जी ने अपने सुमधुर गीतों का कोष लुटाया जिससे उसका गीत सार्थक बन गया। इन वर्गों को लुटाकर अपने गीतों को लोगों से सुना-सुनाकर अपने गीतों को, वर्णों को खोकर वह गरीब हुआ है। यह कोष उनके लिए 'निधि' के समान था। इसे लुटाकर कवि अपने जीवन को सार्थक समझता है।

प्रश्न 2.बच्चन जी पाठकों को क्या-क्या भेंट देते हैं? Sig:.....................

उत्तर:बच्चन जी ने गूंज-गूंजकर मिटनेवाले गीत बनाये। वे चाहते है कि पाठक उनके गीत को गाकर उसे अमर कर दे। पाठकों के प्रति अपनी कृतज्ञता वे कुछ ऐसा भेंट देकर करना चाहते है जिसे देकर उन्हें कोई हानि न हो और बदले में पाठकों को सब कुछ मिल जाए। इस दान को स्वीकार करके पाठक उनके दान को अमर कर जायेंगे।

प्रश्न 3.बच्चन जी ने संसार और जीवन के संबंध में क्या कहा है? Sig:.....................

उत्तर:बच्चन जी संसार और जीवन के सम्बन्ध में कहते हैं कि जब-जब इस जग ने हाथ फैलाये, तो मैंने अपना कोष लुटा दिया। इतना ही नहीं, अपनी सम्पूर्ण निधि (संपत्ति) देकर स्वयं रंक हो गया। मैंने चाहा कि

कम-से-कम तुम मेरा गान अपना लो अर्थात गाओगे तो मैं और मेरा गान अमर हो जाएगा; पर ऐसा हुआ नहीं। इस बहुरूपी संसार को मैंने सराहा, इसे ममता भी दी; फिर भी मेरी तमन्ना है कि मेरा गान अमर हो जाए।

प्रश्न 4.बच्चन जी की कविता का मूल भाव लिखिए।Sig:.....................
उत्तर:समाज के प्रति मनुष्य का दायित्व एवं विश्व के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण इस कविता का विषय है। आज विश्व में हर जगह दुःख दर्द का ही प्रभाव है। हर्ष, उल्लास, प्रेम का भावना चाहते है। मधुर गान वाली कोकिला का गान दुःख दर्द का गान है। दुनिया के लोगों से कवि कहते है कि उसका जीवन दुःख में ही बीता है। आज जीवन के अंतिम दिनों में कवि पाठको से उनका गाना गाकर अमर करने को कहते है।

Chapter 20 प्रतिभा का मूल बिन्दु

प्रश्न 1.कवि प्रतिभा का मूल कहाँ-कहाँ ढूँढते हैं? Sig:.....................
उत्तर:कवि प्रतिभा के मूल को सर्वत्र ढूँढते हैं। कवि प्रतिभा को महलों में, गुलगुले गलीचों पर, गुलाब की क्यारी में, वृद्धों की चिंता में और बच्चों की किलकारी में, चित्रकार की तुलिका में, शिल्पी की कला में, गायिका के स्वर में ढूँढ़ते है। प्रतिभा का मूल ढूँढने के लिए इधर-उधर भागते हैं।

प्रश्न 2.कवि माचवे जी के अनुसार प्रतिभा के लक्षण लिखिए।Sig:.....................
उत्तर:कवि माचवे जी के अनुसार प्रतिभा दिवास्वप्न की रानी है, मिट्टी के लौंदे की ओर संकेत है, फलक, तूली, वर्ण, निरी कल्पना, नवीन विस्मय, उपजाऊ अनुमान, अलौकिक गूढ़ मंत्र, सिद्धों की वाणी या अनुभूति रसायन ये सब प्रतिभा के लक्षण हैं।

प्रश्न 3.'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता का भाव संक्षेप में लिखिए।Sig:.....................
उत्तर:प्रस्तुत 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता में कवि द्वारा सैद्धांतिक समीक्षा की गई है, जिसमें आत्यंतिक कल्पनाओं का, अनुमान का प्रयोग न करके जीवन के निरन्तर संघर्ष-पथ को कवि शानाता है। प्रतिभा सतत प्रयास तथा परिश्रम की जननी मानी जाती है।

Chapter 21 तुम आओ मन के मुग्धमीत

प्रश्न 1.अपने मुग्ध मीत से बिछुड़कर कवि की आत्मा कैसे तड़प रही है? Sig:.....................
उत्तर: कवि कहता है कि मेरा जीवन अंधकारमय हो गया है। अतः हे मित्र तुम प्रकाश की किरण बनकर आ जाओ। मैं सूर्य-चंद्र की तरह प्रकाशमान हो सकूँ। तुम्हारे आने से प्रातः हुई और कोमल प्रीति मुस्कुराई। हे मेरे मित्र! जीवन-मृत्यु के साथी। मेरे पाप मिट जाए और आत्मा पवित्र हो जाये। मैं नतमस्तक हो तुम्हारा स्वागत करता हूँ।

प्रश्न 2.कवि अपने मित्र को किन-किन शब्दों में पुकारता है? Sig:.....................
उत्तर: कवि डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति जी अपने मित्र को मुग्धमीत, मधुरमीत, जन्मों के जीवन-मृत्यु मीत, हारों की मधुर जीत, साकार-निराकार व सगुण-निर्गुण के मीत, देवताओं के आनंद गीत, आशा और शोभा के मीत आदि शब्दों से पुकारते हैं।

प्रश्न 3.कवि अपने मित्र की जुदाई से कैसे व्याकुल हो रहा है? Sig:.....................
उत्तर: कवि सरगु जी कहते हैं कि हे मेरे मीत! तुमसे बिछुड़कर इतने दिन हो गए हैं कि लग रहा है- युग बीत गए हैं। फिर भी मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जैसे पेड़-पौधे वर्षा की कामना करते हैं। सम्पूर्ण संसार किसी-न-किसी स्वार्थ में फँसा है, जब कि तुम एक हो जो निस्वार्थी हो।

प्रश्न 4.कवि की दुःखी आत्मा का परिचय दीजिए।Sig:....................
उत्तर: कवि अपनी दुखित और पीड़ित आत्मा के लिए कहता है कि हे मेरे मीत! मुझे चारों ओर से दुःख, दीनता व दरिद्रता ने घेर लिया है। इन सबसे मैं दुःखी हो गया हूँ। अब तुम आओ मेरे मित्र और मुझे इन झंझावातों से छुटकारा दिलाओ।

Chapter 22 मत घबराना

प्रश्न 1.'मत घबराना' कविता में प्रकृति को प्रेरणास्त्रोत क्यों कहा गया है? Sig:....................
उत्तर: हमारे साथ कोई रहे या न रहे, परन्तु ये चन्दा और तारे हमेशा साथ रहते हैं। ये हमारा दर्द बाँट लेंगे, अपनी बात कहेंगे। ये नदियाँ और झरने हरदम हँसते-गाते आगे बढ़ने को कहेंगे। इस प्रकार कवि प्रकृति को प्रेरणा का स्रोत मानता है। प्रकृति हमारा साथ देती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है।

प्रश्न 2.कवि ने जीवन की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है? Sig:....................
उत्तर: कवि कहता हैं कि जीवन में कई बाधाएँ आती हैं और वे हमें रोकती हैं। तितलियाँ भी अपने सुन्दर रंग-बिरंगे पंखों से हमें अपनी ओर आकर्षित करती हैं, रोकने की कोशिश करती है। ऐसी स्थिति में बाधाओं से न डरकर और तितलियों से न ललचाकर हमें बीच राह में नहीं रुकना चाहिए। हमें नदियों की तरह अकेले ही निडर होकर बहते रहना चाहिए। यही जीवन की विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 3.मंजिल किन्हें मिलती है? अपने शब्दों में लिखिए।Sig:....................
उत्तर: 'मत घबराना' कविता में कवि नवयुवकों को जीवनपथ पर हमेशा आगे बड़ने का संदेश देते हैं। प्रकृति को प्रेरणा के रूप में चित्रित करते हुए कवि ने कहा है 'मंजिल' उन्हीं को मिलती है जो बाधाओं को चुनौती देकर धीर वीर के समान आगे बड़ते हैं। जो काँटों को फूल समझकर विपदाओं को स्वीकार करते हैं, जो कायर नहीं है, जो बहाने बनाकर निष्क्रीय नहीं होते वही 'मंजिल' को हासिल कर लेते हैं।

प्रश्न 4.'मत घबराना' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।Sig:....................
उत्तर:'मत घबराना' कविता में कवि युवकों को सन्देश देते हैं कि जीवन के पथ पर सदा आगे बढ़ते रहना चाहिए। साथ कोई हो या न हो प्रकृति माता सदा हमारे साथ रहेगी। प्रकृति से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। यही इस कविता का सन्देश है।

Chapter 23 अभिनंदनीय नारी

प्रश्न 1.नारी के विभिन्न गुणों का परिचय दीजिए।Sig:....................
उत्तर: नारी पृथ्वी पर मृदल रस की तरह है, नारी सुख का सागर है, नारी वन्दनीय है, अभिनंदनीय है। इसलिए उसे सादर प्रणाम है। धरती की तरह नारी सहनशील है, जल की तरह निर्मल है, फूलों की तरह कोमल है और नारी जीवन की गति, जीवन की रति (प्रेम), जीवन की मति (बुद्धि) है। नारी ने क्षमा, करुणा, स्नेह और अपनी सेवा से इस धरती को धन्य बनाया है।

प्रश्न 2.नारी के बचपन का चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर: नारी बचपन में चिड़िया की तरह चहकती, फुदकती हुई इठलाती है जिसे देख माता-पिता के मन में आनंद की हिलोरें उठती हैं। जब वह ठुमक ठुमक कर चलती है, तो उसकी पैरों की पायलियाँ मधुर संगीत सुनाती है। नारी बचपन में आँगन की तुलसी की तरह घर की शोभा बढ़ाती है और सबको प्यारी लगती है।
प्रश्न 3.नारी के शक्ति रूपों का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: नारी शक्ति रूप है, कभी रणचंडी भी दैत्य नाशिनी दुर्गा माँ है। शक्ति, शिवानी तथा कात्यायिनी का सशक्त रूप भी नारी में प्रतिबिंबित होता है। समय की मांग अनुसार नारी दैत्यों का खून पीने वाली महाकाली का वेश धारण भी कर लेती है। इस तरह नारी सृष्टि का मूल है।

प्रश्न 4.नारी किस प्रकार से सृष्टि का श्रृंगार है? Sig:....................
उत्तर: विभिन्न रूपों में जी हुई यह नारी सृष्टि का श्रृंगार है। यदि इस संसार में नारी ही न हो, तो फिर यह संसार किस काम का? जिस घर में नारी का सम्मान होता है, वह घर आनंद का सागर है। यदि जीवन में नारी न हो, तो मानव जीवन ही व्यर्थ है।

Chapter 24 मधुआ

प्रश्न 1.शराबी ठाकुर सरदार सिंह को कौन-कौन सी कहानियाँ सुनाता था? Sig:....................
उत्तर: ठाकुर सरदार सिंह का लड़का लखनऊ में पढ़ता था। ठाकुर कभी-कभी लखनऊ जाते थे। उन्हें कहानी सुनने का बड़ा शौक था। वहाँ एक शराबी था। वह ठाकुर को मजेदार तथा लच्छेदार कहानियाँ सुनाकर खुश किया करता था। एक दिन शराबी ने गड़रिए की कहानी सुनायी तो ठाकुर हँसने लगा। इस प्रकार शराबी अमीरों की रंग-रेलियाँ, नवाबों के सोने-से दिन, दुखियों की दर्द-भरी आहे तथा रंगमहलों में घुट-घुटकर मरनेवाली बेगमों की कहानियाँ सुनाया करता था।

प्रश्न 2.शराबी को बच्चा कहाँ मिला? वह उसे अपने साथ क्यों लाया? Sig:....................
उत्तर: शराबी से बात करते करते ठाकुर साहब जब थक गए तो उन्होंने एक रुपया देकर शराबी को जाने का आदेश दिया। साथ ही लल्लू जम्मादार को भेज देने के लिए भी कहा। जमादार लल्लू को खोजते हुए शराबी फाटक के बगलवाली कोठरी के पास पहुंचा, तो एक बच्चा मारखाकर रोते हुए मिला। लल्लू उसे बुरी तरह डाँट रहा था। शराबी उस बच्चे को साथ ले आया और रोने का कारण पूछा। लड़के ने रोते-रोते ही कहा – मैंने आज दिन भर से कुछ नहीं खाया है। यह सुनकर शराबी को बालक पर दया आ गई। उसे वह अपनी गंदी कोठरी में रखा पराठे का टुकड़ा खिलाने के लिए साथ ले आया।

प्रश्न 3.शराबी एक रुपए से क्या खरीदना चाहता था और बाद में क्या खरीद लिया? Sig:................
उत्तर: शराबी मधुआ को अपने घर में शरण देता है। उसके हाथ में पराठे का एक टुकड़ा देकर बालक का पेट भरने के लिए कुछ खरीदने दुकान पहुंचता है। वह एक रुपए से बारह आने का एक देशी अद्धा और दो आने की चाय, दो आने की पकौड़ी, आलू मटर या फिर चारों आने का मांस खरीदना चाहता था। परन्तु मधुआ का ख्याल आते ही वह अद्धा लेना भूल गया और मिठाई पूरी खरीद लाया।

प्रश्न 4.शराबी के जीवन में मधुआ के आने के बाद क्या परिवर्तन आया? Sig:....................
उत्तर: मधुआ के मिलने से पहले शराबी का जीवन दिशाहीन तथा अस्तव्यस्त था। वह ठाकुर को कहानियाँ सुनाकर मिले हुए पैसों से शराब पीता था। जीवन में मधुआ आने के बाद शराबी ने शराब पीना छोड़ दिया। उसे जिम्मेदारी का एहसास हुआ। पारिवारिक बंधन का अर्थ समझ में आया। शराबी मधुआ के आने से इतना संवेदनशील हो गया कि मधुआ को पालने के लिए कुछ न कुछ काम करना चाहा तथा हमेशा मधुआ को साथ रखने का निर्णय लिया।

प्रश्न 5.मधुआ पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर: मधुआ एक गरीब बच्चा था। देखने में सुन्दर तथा गोरे बदनवाला। वह ठाकुर सरदार सिंह के यहाँ काम करता था। दिनभर कुँवर साहब का ओवरकोट लिए साथ घूमता। रात को नौ बजे तक काम करता, रोटी माँगने पर जमादार लल्लू से मार खाता। इस निर्धन बालक को पाकर शराबी का दिल पिघल जाता है। वह उसे अपने यहाँ ले जाकर पेट भर खिलाता है। सान धरने की कल से दोनों मिलकर कुछ कमाने लगे

Chapter 25 श्मशान

प्रश्न 1.श्मशान ने आह भरकर पहाड़ी से क्या कहा? Sig:....................

उत्तर: श्मशान ने आह भरकर पहलू में खड़ी पहाड़ी से कहा – "मैं इन्सान को जितना प्यार करता हूँ, उतनी ही घृणा उससे पाता हूँ। सभी मनुष्य यही चाहते हैं कि कभी उन्हें मेरा मुँह न देखना पड़े। पर वास्तव में मैं इतना बुरा नहीं हूँ। संसार में जब मनुष्य को एक दिन के लिए भी स्थान नहीं रह जाता, तब मैं उसे अपनी गोद में स्थान देता हूँ। अमीर-गरीब, वृद्ध-बालक सबको मैं समान दृष्टि से देखता हूँ। पर मेरे पास प्रेम नहीं, मुहब्बत का चिराग नहीं। नहीं जानता खुदा ने मेरे साथ ऐसी बेईमानी का सलूक क्यों किया?"

प्रश्न 2.मनुष्य के प्रेम के बारे में श्मशान के विचार प्रकट कीजिए।Sig:....................

उत्तर: श्मशान कि दृष्टि में 'मनुष्य प्रेम' बहुत महत्वपूर्ण है। वह मनुष्य प्रेम को अलौकिक समझता है। वह मनुष्य के मन में अपने लिए भी थोड़ी जगह बनाना चाहता है। वह मनुष्य प्रेम को 'निधि' के समान मानता है जो उसके नसीब में नहीं है। उसका मानना है 'मनुष्य प्रेम से ही जीवन को परिपूर्णता प्राप्त होती है। उसे अपना जीवन बेकार और निरर्थक लगता है। मनुष्य के पास जैसा प्रेममय हृदय है, उसे पाने के लिए वह अपने जैसे सौ जीवन भी कुर्बान करने के लिए तैयार है।

प्रश्न 3.पहली पत्नी की मृत्यु पर युवक किस प्रकार विलाप करने लगा? Sig:....................

उत्तर: युवक पहली पत्नी की राख बटोरते बटोरते विलाप करने लगा – "तुम मुझे छोड़कर कहाँ चली गई सुकेशी? दो वर्षों में ही तुम मुझे अकेला छोड़कर चली गई। अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता। तुम मुझे अपने पास बुला लो। तुम्हारे बिना यह जीवन व्यर्थ है, नीरस है। तुम मेरी प्रेरणा थीं। अब मैं जीवित रहकर करूँगा ही क्या?" इसी प्रकार वह रोता रहा, सिर फोड़ता रहा।

प्रश्न 4.युवक अपनी तीसरी पत्नी की मृत्यु के उपरांत उसे सबसे अधिक गुणी क्यों समझता है? Sig:..

उत्तर: युवक अपनी तीसरी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उसके पहले वाले रूप में और आज के रूप में कोई अन्तर न था। उसकी बातें भी वही थीं, केवल इतना अंतर था कि आज उसे अपनी तीसरी पत्नी ही सबसे अधिक गुणी दिखाई दे रही थी। वह दावा कर रहा था कि तीसरी पत्नी से ही उसका सच्चा प्रेम था, पहली दो स्त्रियों का प्रेम बचपना था, नासमझी थी। पहली उसकी अनुगामिनी थीं, दूसरी सहगामिनी, तो तीसरी अग्रगामिनी थी, उसकी पथ-प्रदर्शिका थी, जिसके बिना वह एक कदम भी जीवित नहीं रह सकता।

प्रश्न 5.अंततः पहाड़ी ने तरस खाकर श्मशान से क्या कहा? Sig:....................

उत्तर: तीसरी पत्नी के देहान्त पर युवक का क्रंदन कंठस्थ पाठ की तरह लगने लगा था। मनुष्य के अलौकिक प्रेम की जिस भावना को श्मशान अपने हृदय में बडे यत्न से सँजोए बैठा था, उसका वही हृदय इस दृश्य से पत्थर हो गया। श्मशान की हालत देखकर पहाड़ी ने दिलासा देते हुए कहा, जो इंसान प्रेम करता है उसे जीवन भी कम प्यारा नहीं। वह प्रेम की स्मृति, कल्पना और आध्यात्मिक भावना पर ही जिंदा नहीं रहता। जीवन की पूर्णता के लिए वह फिर प्रेम करता है। स्वयं जीवित रहने की ललक में हर वियोग को झेल लेता है, व्यथा सह लेता है क्यों कि मनुष्य केवल अपने आपसे अधिक प्रेम करता है।

Chapter 26 खून का रिश्ता

प्रश्न 1.वीरजी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।Sig:....................

उत्तर: वीरजी का परिवार संपन्न था। वीरजी पढ़े-लिखे थे और शहर में रहते थे। परिवार में उनके माता-पिता थे, एक शरारती मिजाज़वाली छोटी बहन थी जिसका नाम मनोरमा था। घर पर मंगलसेन नाम के रिश्ते के चाचा रहते थे जो स्वयं को इनके परिवार का अभिन्न अंग मानते थे। घर का पुराना नौकर संतु था जो मंगलसेन को ज्यादा हिलमिल गया था। वीरजी अविवाहित थे किन्तु प्रभा नाम की पढ़ी-लिखि सुन्दर कन्या से उनकी सगाई होनेवाली थी। वीरजी बहुत भावुक थे, वे प्रभा से प्रेम करते थे और उससे सरल विवाह करना चाहते थे।

प्रश्न 2.मंगलसेन को अपनी हैसियत पर क्यों नाज़ था? Sig:....................

उत्तर: मंगलसेन को अपनी हैसियत पर बड़ा नाज़ था। किसी ज़माने में फौज में रह चुका था, इस कारण अब भी सिर पर खाकी पगड़ी पहनता था। खाकी रंग सरकारी रंग है, पटवारी से लेकर बड़े-बड़े इन्स्पेक्टर तक सभी खाकी पगड़ी पहनते हैं। इस पर ऊँचा खानदान और शहर के धनीमानी भाई के घर में रहना, ऐंठता नहीं तो क्या करता?

प्रश्न 3.सन्तू का परिचय दीजिए। Sig:....................

उत्तर: सन्तू वीरजी के घर का एक नौकर है। यह इस घर का पुराना नौकर है। वह चिलम का कश खुद भी लेता है और अन्यों से भी आग्रह करता है। बाबूजी वीरजी की सगाई में तुम्हें नहीं ले जाएंगे, कहकर मंगलसेन का मजाक उड़ाया करता था। मंगलसेन का स्वप्न साकार होते देख वह बोला – तुम जीत गये, बस वेतन मिलते ही तुम्हें दो रुपये दे दूंगा। काम दोनों ही करते थे, जब कि सन्तू नौकर था और मंगलसेन समधी थे। सन्तू कभी-कभी कामकाजों में उदासीन भी था। तब उसे डाँट खानी पड़ती थी।

प्रश्न 4.समधियों के घर मंगलसेन की आवभगत कैसे हुई? Sig:....................

उत्तर: समधियों के घर मंगलसेन की आवभगत बहुत ही जोरदार तरीके से की गई। मंगलसेन एक आरामकुर्सी पर बैठा था। एक आदमी पीछे पंखा चला रहा था। सभी आगे-पीछे घूम रहे थे। "क्या लाऊँ? क्या सेवा करूँ?" कहते थकते नहीं थे समधी। इस प्रकार मंगलसेन की आवभगत श्रद्धा के साथ ठाटबाट से की गई।

प्रश्न 5.बाबूजी सगाई में केवल सवा रुपए ही क्यों लेना चाहते थे? Sig:....................

उत्तर: बाबूजी पुरानी रस्मों को बदलना चाहते थे। समधियों को दुःख देना नहीं चाहते थे। और वीरजी का भी यही मत था। बाबूजी शादी-ब्याह में पैसे बर्बाद करना नहीं चाहते थे। उनसे दिये गए सवाँ रुपया बाबूजी के लिए सवा लाख के बराबर था। इन चीजों में उनका विश्वास नहीं था। यदि कुछ लिया तो वसूल की बात होगी। इसलिए बाबूजी सगाई में केवल सवा रुपया ही लेना चाहते थे।

प्रश्न 6.समधी अंदर से थाल में क्या-क्या ले कर आए? Sig:....................

उत्तर: समधी अंदर से एक थाल ले आये और बाबूजी के सामने रख दिया। उस पर लाल रंग का रेशमी रूमाल बिछा था। बाबूजी ने रूमाल उठाया, तो नीचे चाँदी के थाल में चाँदी की तीन चमचम करती कटोरियाँ रखी थीं, एक में केसर, दूसरी में राँगला धागा, तीसरी में एक चमकता चाँदी का रुपया और चमकती चवन्नी। इसके अलावा तीनों कटोरियों में तीन छोटे-छोटे चाँदी के चम्मच रखे थे।

प्रश्न 7.चम्मच खो जाने पर वीरजी की क्या प्रतिक्रिया हुई? Sig:....................
उत्तर: जब मंगलसेन बाबूजी के साथ वीरजी को सगाई लेकर जाते हैं, वहाँ समधी उसका आवभगत करते हैं। बहुत मना करने पर भी समधी बाबूजी को सगाई में तीन कठोरियां और तीन चम्मच और सवा रुपए देते हैं। वापस लौटने पर उसमें से एक चम्मच नहीं रहता है। यह सुनकर वीरजी को क्रोध होता हैं कि प्रभा द्वारा भेजा गया चम्मच मंगलसेन ने खो दिया है। मंगलसेन की तलाशी ली जाती है। और वीरजी की बहन उसका मजाक उडाती है। वीरजी सहसा सहसा आवेश में आकर, मंगलसेन के पास जाकर दोनों कंधों से पकड़कर झिंझोड़ कर कहते हैं "आपको इसीलिए भेजा था कि आप चीजें गँवा आयें?"

प्रश्न 8."खून का रिश्ता' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।Sig:....................
उत्तर: 'खून का रिश्ता' कहानी में भीष्म साहनी जी ने सगाई की रस्म, रिश्तेदारों की अहमियत, सगाई में सवा रुपये लेना, आतिथ्य-सत्कार आदि घटनाओं का सजीव चित्रण किया है। वर्तमान परिवेश में कहानी अत्यंत प्रासंगिक है। आज के चकाचौंध भरे माहौल में सरल विवाह की महत्ता तथा खून के रिश्तों एवं पारिवारिक रिश्तों को निभाने पर बल देने के उद्देश्य से यह कहानी सफल कहानी है।

Chapter 27 शीत लहर

प्रश्न 1.चंद्रप्रकाश सोसाइटी के फ्लैट में क्यों नहीं रहते थे? Sig:....................
उत्तर:चंद्रप्रकाश का फ्लैट द्वारका टाऊनशिप के एक ग्रूप-हाऊसिंग सोसाइटी में था जो कि दिल्ली शहर से काफी दूर था। यहाँ बहुत कम लोग रहते थे। चंद्रप्रकाश के पास लक्ष्मीबाई नगर में चार कमरों वाला सरकारी आवास था, जो दिल्ली के बीचोंबीच था तथा सभी सुविधाएँ वहाँ उपलब्ध थी। इसलिए वह अपने फ्लैट में अभी जाना नहीं चाहता था। निवृत्त होने तक वह लक्ष्मीबाई नगर के सरकारी आवास में ही रहना चाहता था।

प्रश्न 2.दिल्ली में शीत लहर के प्रकोप का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर:जनवरी के आस-पास दिल्ली में शीत-लहर का प्रकोप प्रायः रहता है। दिल्ली में कड़ाके की ठंड थी। शरीर के भीतर से पार हो जानेवाली तेज हवा चल रही थी। कई दिन से सूरज नहीं निकला था। दिन में तापमान पन्द्रह डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं जा रहा था। रात में पारा चार डिग्री सेल्सियस तक नीचे जा रहा था। कई साल के बाद दिल्ली में इतनी तेज ठंड पड़ी थी। समूचा उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में था। दिल्ली में दर्जनों लोगों की मौत हो चुकी थी। जगह-जगह अलाव जलाने की व्यवस्था की गई, गरीब लोगों को कम्बल बाँटे गए और स्कूलों को छुट्टी दी गई।

प्रश्न 3.'क्या जिन्दगी है इन लोगों की...! चंद्रप्रकाश के इस उद्गार पर टिप्पणी कीजिए।Sig:..............
उत्तर:जब चन्द्रप्रकाश की पत्नी सरकारी रैन बसेरों को देखकर उनके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करती है, तब चंद्रप्रकाश कहते हैं- रैन बसेरों में वे ही रात गुजार सकते हैं, जो सुविधा शुल्क दे सकते हैं। गरीब लोगों के लिए नहीं हैं ये रैन बसेरे। इनके पास न खाने के लिए है, न पहनने के लिए। कुछ रुका और फिर धीरे से बुदबुदाया, "क्या जिंदगी है इन लोगों की.....।"

प्रश्न 4.चंद्रप्रकाश अपने फ्लैट में बेघर लोगों को क्यों नहीं रख पाया? Sig:....................
उत्तर:बेघर लोगों को ठंड में देखकर चंद्रप्रकाश को दया आ गई और वह उन लोगों को अपने खाली फ्लैट में रहने देना चाहता था। परन्तु उसकी पत्नी ने कहा – एक बार फ्लैट में आने के बाद तुम इनको बाहर नहीं निकाल पाओगे। अनजान आदमी का क्या भरोसा कि वह कैसा निकल जाए। यदि निकल भी जाए तो फ्लैट

का सत्यानाश कर देंगे। सोसाइटी के सदस्यों ने भी विरोध किया। इसलिए चन्द्रप्रकाश चाहते हुए भी उन लोगों को अपने फ्लैट में नहीं रख पाया।

प्रश्न 5.चंद्रप्रकाश का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................

उत्तर:चन्द्रप्रकाश दिल्ली में निवास करनेवाला केन्द्र सरकार का अधिकारी था। आलीशान सरकारी आवास मिला हुआ था। यद्यपि अपना एक फ्लैट भी खरीदा था, परन्तु दूर होने तथा सुविधाविहीन होने के कारण वहाँ नहीं गया। चन्द्रप्रकाश पत्नी पूनम को बहुत चाहता था। बेघर लोगों को रहने के लिए अपना फ्लैट देना चाहता था, परन्तु पत्नी के समझाने और सोसाइटी के सदस्यों के विरोध के कारण नहीं दे पाया। स्वभाव से दयालु था, परन्तु मजबूरी थी

प्रश्न 6.चंद्रप्रकाश को अपनी विवशता पर क्यों क्षोभ हुआ? Sig:....................

उत्तर:सर्दी में बेघर लोगों को ठिठुरते देख चंद्रप्रकाश का हृदय पिघल गया। वह अपना खाली फ्लैट उन्हें रहने के लिए देना चाहता था, परन्तु पत्नी के समझाने के बाद और सोसाइटी के सदस्यों का भी विरोध होने का कारण, इच्छा होते हुए भी चन्द्रप्रकाश उन गरीब लोगों की मदद नहीं कर पाया। वह चिंता जताता है- "इतनी भयंकर सर्दी का मुकाबला कैसे करेंगे ये बच्चे?" उसने बच्चों को सौ रुपये देने चाहे और कोट की जेब में हाथ डाला, लेकिन फिर यह सोचकर रुक गया कि "सौ रुपये देने से भी इनका क्या भला होगा? सौ रुपये इनको सर्दी से नहीं बचा सकते। फिर इनकी मदद कैसे करूँ?" उसे अपनी इस विवशता पर क्षोभ हुआ। अपना क्षोभ उसने सोसाइटी के पदाधिकारियों पर उतारा – "यदि सोसाइटी वाले अलाऊ कर दें, तो इसमें क्या हर्ज है!"

Chapter 28 सिलिया

प्रश्न 1.हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में छपे विज्ञापन के बारे में लिखिए।Sig:....................

उत्तर: सन् 1970 की बात है। सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। लोग उसकी शादी के विषय में चर्चा करने लगे थे। उसी साल हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में एक विज्ञापन छपा – 'शूद्रवर्ण की वधू चाहिए।' मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के जाने-माने युवा नेता सेठीजी, एक अछूत कन्या के साथ विवाह करके, समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। उनकी केवल एक ही शर्त थी कि लड़की कम-से-कम मैट्रिक हो।

प्रश्न 2.सिलिया की माँ ने गाँव वालों की सलाह को क्यों नहीं माना? Sig:....................

उत्तर: गाँव के बहुत-से पढ़े-लिखे लोगों ने, ब्राह्मणों, बनियों ने सिलिया की माँ को सलाह दी – "सिलिया की माँ, तुम्हारी सिलिया मैट्रिक पढ़ रही है, बहुत होशियार है, समझदार भी हैं। तुम उसका फोटो, परिचय, नाम, पता लिखकर भेज दो। तुम्हारी बेटी के भाग्य खुल जाएँगे – राज करेगी। सेठी जी बहुत बड़े आदमी हैं। तुम्हारी बेटी की किस्मत अच्छी है।" – सिलिया की माँ अधिक जिरह में न पड़कर केवल इतना कहती – 'हाँ, भैया जी', 'हाँ, दादा जी', सोच-विचार करेंगे। माँ घरवालों को समझाकर कहती – "नहीं भैया, ये सब बड़े लोगों के चोंचले हैं। आज शादी कर लेंगे और कल छोड़ देंगे तो? अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर भी हो सकती है। हमारी बेटी न इधर की, न उधर की रह जायेगी। हम से भी दूर कर दी जाएगी। हम तो नहीं देंगे अपनी बेटी को।" इन बातों से सिलिया के मन में आत्मविश्वास जाग उठा।

प्रश्न 3.सिलिया के स्वभाव का परिचय दीजिए।Sig:....................

उत्तर: सिलिया साँवली-सलौनी, मासूम-भोली, सरल व गंभीर स्वभाव वाली लड़की थी। स्वस्थ देह के कारण वह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही लगती थी। सिलिया की सहेलियाँ उसे छेड़ती, हँसती। मगर सिलिया इन बातों पर कोई ध्यान नहीं देती। सिलिया गंभीर और सीधे सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लड़की

है। अपने जाति पर होनेवाले भेदभाव पर क्रोध था। विरोध था। भेदभाव को जड़ से निकालकर फेंकना चाहती है। अपनी माँ से हमेशा कहती थी कि – "मैं शादी नहीं करूँगी, खूब पढ़ूंगी और अच्छा नाम कमाऊँगी।" वह किसी के सामने सिर झुकाना नहीं चाहती है।

प्रश्न 4.हेमलता की मौसी ने सिलिया के साथ कैसा बर्ताव किया? Sig:....................
उत्तर: हेमलता ठाकुर सिलिया के साथ ही पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी। वह एक दिन सिलिया को लेकर अपनी बहन के घर आई। सिलिया के हाथ में पानी का गिलास देखकर मौसी ने पूछा – "कौन है....? किसकी बेटी है.....? कौन ठाकुर है.....?" हेमलता ने कहा – "मौसी जी, मेरी सहेली है, हमारे साथ ही आई है। इसके मामा-मामी इधर रहते हैं, मगर इसे उनका पता मालूम नहीं है। मौसी ने सिलिया की जाति पूछी। हेमलता ने धीरे से बता दिया। जाति का नाम सुनकर मौसीजी चौंक गई। सिलिया से पूछा – "गाडरी मुहल्ला के पास रहते हैं....?" तब मौसीजी ने प्रेम से कहा – "कोई बात नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पर बिठाके वहाँ छोड़ आयेगा।" ऐसा कहते हुए मौसीजी पानी का गिलास लेकर अंदर चली गई।

प्रश्न 5.सिलिया ने मन ही मन क्या दृढ़ संकल्प किया? Sig:....................
उत्तर: सिलिया ने मन ही मन दृढ़ संकल्प किया कि वह बहुत आगे तक पढ़ेगी, पढ़ती रहेगी। उन सभी परम्पराओं के मूल कारणों का पता लगाएगी, जिन्होंने उन्हें समाज में अछूत बना दिया है। वह विद्या, बुद्धि और विवेक से स्वयं को ऊँचा साबित करके रहेगी। किसी के सामने नहीं झुकेगी। न ही कभी अपना अपमान सहन करेगी। सिलिया मन ही मन इन बातों का चिंतन-मनन करने लगी। एक दिन अपनी माँ और नानी के सामने उसने बड़े दृढ़ निश्चय के साथ कहा – "मैं शादी नहीं करूँगी। मुझे बहुत आगे तक पढ़ना है।"

प्रश्न 6.सिलिया ने अपने संकल्प को किस प्रकार साकार किया? Sig:....................
उत्तर: सिलिया ने सोचा – वह एक चिनगारी है, जो मशाल बनकर अपने समाज की प्रगति के मार्ग को प्रकाशित करेगी। वह जीवन भर कोशिश करेगी कि समाज इन सब बातों को समझे और सही रूप में समाज का हकदार बने। जहाँ चाह होती है, वहाँ राह खुद बनने लगती है। सिलिया ने अपनी मंजिल को जान लिया। वह देश के कोने-कोने में जाकर सामाजिक जागृति का कार्य करने लगी। लगभग बीस वर्ष के बाद देश की राजधानी के प्रख्यात सभागृह में एक प्रतिष्ठित साहित्य संस्था द्वारा एक महिला को सम्मानित किया जा रहा है। दलित मुक्ति आन्दोलन की कार्यकर्ता, विदुषी... समाजसेवी... कवयित्री... प्रसिद्ध लेखिका को मंत्रि महोदय ने शाल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। वह महिला कोई और नहीं, सिलिया थी।

Chapter 29 दोपहर का भोजन

प्रश्न 1.सिद्धेश्वरी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।Sig:....................
उत्तर: सिद्धेश्वरी का परिवार निर्धन था। उनके तीन बेटे थे। बड़ा बेटा रामचंद्र इक्कीस साल का था। दुबला, पतला, गोरे रंग का लड़का था जिसकी बड़ी बड़ी आँखें थी। वह किसी अखबार में प्रूफ-रीडरी का काम करता था, स्वभाव से गंभीर था। मंझला लड़का मोहन अट्ठारह वर्ष का था, हाईस्कूल का प्राइवेट इम्तेहान देने की तैय्यारी में लगा था, पढ़ाई में उसकी रुचि नहीं थी। छोटा बेटा प्रमोद छह वर्ष का था जो बहुत कमजोर और बीमार रहता था। उसके पति मुंशि चंद्रिका प्रसाद 45 साल की उम्र में, पारिवारिक समस्याओं के कारण 50 या 55 साल के लगते थे। डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छंटनी हो गई थी।

प्रश्न 2.बीमार प्रमोद की हालत कैसी थी? Sig:....................
उत्तर: छोटा बेटा प्रमोद बीमार पड़ा है। उम्र छः वर्ष है। अध-टूटे खटोले पर नंग-धडंग पड़ा हुआ है। इतना क्षीण हो गया है कि उसके शरीर की हड्डियाँ स्पष्ट दिखाई देने लगी हैं। उसके हाथपैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे हुए बेजान हो गये हैं। पेट हंडिया की तरह फूला हुआ है। मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। माँ सिद्धेश्वरी ने उसके चेहरे पर एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया। इस दयनीय स्थिति में प्रमोद बीमार था।

प्रश्न 3.रामचंद्र का परिचय दीजिए।Sig:....................
उत्तर: रामचंद्र मुंशी चंद्रिका प्रसाद और सिद्धेश्वरी का बड़ा लड़का है। उसके बाल अस्त-व्यस्त है, मुँह लाल है। उसके फटे-पुराने जूतों पर गर्द जमी हुई है। उसकी उम्र करीब 21 वर्ष है। दुबलापतला, लंबा, गोरा रंग, बड़ी-बड़ी आँखें व ओंठों पर झुरियाँ। वह एक स्थानीय समाचार-पत्र के ऑफिस में प्रूफरीडरी का काम सीखता है। इंटर पास किया है।

प्रश्न 4.मँझले लड़के मोहन के रूप-रंग और स्वभाव के बारे में लिखिए।Sig:....................
उत्तर: मोहन सिद्धेश्वरी का मँझला लड़का था। उम्र अठारह वर्ष थी और वह इस साल हाईस्कूल का प्राईवेट इम्तहान देने की तैयारी कर रहा था। वह न मालूम कब से घर से गायब था और सिद्धेश्वरी को स्वयं पता नहीं था कि वह कहाँ गया है। वह कुछ साँवला था और उसकी आँखे छोटी थीं। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे। वह अपने भाई रामचंद्र की तरह दुबला-पतला था किन्तु उतना लंबा न था। वह अपने उम्र की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर और उदास दिखाई पड़ रहा था।

प्रश्न 5.सिद्धेश्वरी की आँखों से आँसू क्यों टपकने लगे? Sig:....................
उत्तर: घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पूरा परिवार संकटग्रस्त था। जैसे-तैसे सात रोटियाँ बनाई गई। बड़े बेटे को, पति को, मंझले बेटे को दो-दो रोटियाँ परोस दी गईं। अंत में सिर्फ एक रोटी बची थी। पति की जूठी थाली में बची चने की तरकारी के साथ बनी जली रोटी रखने जा रही थी कि उसका ध्यान छोटे बेटे प्रमोद की ओर गया। रोटी के दो टुकड़े किए और एक अलग से रख दिया। फिर खाने बैठ गई। घर कि इस स्थिति से वह दुखी हुई और उसकी आँखों से आँसू टपकने लगी।

प्रश्न 6.मुंशी चंद्रिका प्रसाद की लाचारी का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: मुंशी चंद्रिका प्रसाद की डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया नियंत्रण विभाग की क्लर्की से छंटनी हो गयी थी। दूसरी कहीं भी नौकरी नहीं मिली थी। घर में बीमार लड़का। बड़े लड़के को कहीं अच्छी नौकरी नहीं। मँझला प्राईवेट ही हाईस्कूल परीक्षा के लिए बैठा है। दो वक्त का भोजन भी नहीं मिल पाता। इनके फटे-पुराने गर्द लगे जूते, पत्नी की गंदी साड़ी, गंदगी से भरा मक्खियाँ से भिनभिनाता घर, बच्चों का खाने-पीने के लिए तरसना आदि.... इस लाचारी के सामने वे बेबस थे।

गध्य भाग का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए

Chapter 1 बड़े घर की बेटी

प्रश्न 1. अभी परसों घी आया है, इतनी जल्दी उठ गया? Sig:....................
उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' की कहानी 'बड़े घर की बेटी' से लिया गया है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।
संदर्भ : इस वाक्य को देवर लाल बिहारी अपनी भाभी आनंदी से कहता है।
स्पष्टीकरण : जब लालबिहारी आनन्दी से माँस पकाने को कहता है तो आनन्दी थोड़ा ही घी होने के कारण सारा घी माँस में डाल देती है। जब लालबिहारी आनन्दी से पूछता है कि दाल में घी क्यों नहीं डाला, तो आनन्दी कहती है कि सारा घी खत्म हो गया। गुस्से में लालबिहारी आकर कहता है कि अभि परसों ही घी खरीदकर लाया था इतनी जल्दी खत्म हो गया?

प्रश्न 2."स्त्री गालियाँ सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मैके की निंदा उनसे नहीं सही जाती।"Sig:....................
उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' की कहानी 'बड़े घर की बेटी' से लिया गया है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।
संदर्भ : इस वाक्य में लेखक प्रेमचंद आनंदी के बारे में टिप्पणी करते हुए पाठकों को उसके चरित्र का परिचय करा रहे हैं।
स्पष्टीकरण : दाल में घी न डालने से तथा घी खत्म हो जाने से लालबिहारी ने गुस्से में भला-बुरा कहा और मायकेवालों के बारे में खरी-खोटी बातें सुनायी। इसी से आनंदी को गुस्सा आ गया। क्योंकि स्त्रियाँ सब कुछ सह सकती है, मार भी खा सकती हैं, पर मायके की निंदा नहीं सह सकती।

प्रश्न 3. "पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है।"Sig:....................
उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' की कहानी 'बड़े घर की बेटी' से लिया गया है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।
संदर्भ : इस वाक्य को श्रीकंठ अपनी पत्नी आनंदी से कहता है।
स्पष्टीकरण : श्रीकंठ जब शनिवार को घर पहुंचे तो लालबिहारी ने आनंदी के बारे में सबकुछ बता दिया था। आनंदी के बारे में शिकायतें सुनकर जब श्रीकंठ आनंदी के पास जाता है, तो पूछता है – आजकल यह सब क्या हो रहा है? तुमने क्या उपद्रव मचा रखा है?

प्रश्न 4."उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा करो" Sig:....................
उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' की कहानी 'बड़े घर की बेटी' से लिया गया है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं।
संदर्भ : इस वाक्य को पिता बेनीमाधव सिंह अपने बड़े पुत्र श्रीकंठ से कहते है।
स्पष्टीकरण : लालबिहारी के हाथों अपने स्त्री का अपमान होते देख श्रीकंठ आपे से बाहर हो जाता है। वह अपने पिता बेनीमाधव के सामने अपने क्रोध को प्रकट करता है। बेनीमाधव सिंह अनुभवी आदमी थे। वे इन भावों को ताड़कर अपने बेटे को शांत करने के उद्देश्य से बोलते है कि श्रीकंठ को अपने छोटे भाई को क्षमा करके अपने बड़प्पन का परिचय देना चाहिए।

प्रश्न 5.“बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।”Sig:....................
उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ की कहानी ‘बड़े घर की बेटी’ से लिया गया है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं। ..
संदर्भ : पिता बेनीमाधव सिंह ने अपने पुत्रों के समक्ष यह वाक्य अपनी बहू की प्रशंसा करते हुए कहते हैं।
स्पष्टीकरण : श्रीकंठ और लालबिहारी के बीच वाद-विवाद होने से तथा उनकी आपसी नाराजगी के कारण भाइयों में प्रेम टूटने तथा घर बिखरने की नौबत आ गई। इससे आनंदी अपने गुस्से को छोड़कर, लालबिहारी को रोक लेती है। सब कुछ ठीक हो जाता है। बड़े घर की बेटियाँ. ऐसे ही बिगड़ा काम बना लेती हैं।

Chapter 2 युवाओं से

प्रश्न 1.‘यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘युवाओं से’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।
संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को स्वामी विवेकानंद जी नवयुवकों को मार्गदर्शन देते हुए अपने भाषण में कहते है।
स्पष्टीकरण : स्वामी विवेकानंद कहते है कि युवा दुर्बल नहीं हैं। वे सब ईश्वर की संतान हैं, उनकी आत्मा पवित्र और पूर्ण है। वे स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं। उनका बल उन्ही के भीतर है। इन शब्दों द्वारा वे युवकों को राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा दे रहे हैं।

प्रश्न 2.‘उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘युवाओं से’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।
संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में स्वामी विवेकानंद जी ने नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि अज्ञानता से जागकर, देश को आगे बढ़ाने के लक्ष्यपथ पर तेजी से बढ़ना है।
स्पष्टीकरण : यह उद्‌घोष स्वामी जी के सभी उपदेशों में श्रेष्ठ माना जाता है। कार्य करने के लिए बुद्धि, विचार और हृदय की आवश्यकता है। साथ-साथ प्रेम से असंभव भी संभव हो जाता है। अतः उठो, जागो और अपने स्वरूप को पहचानो, आगे बढ़ो, सफल होने तक बढ़ो।

प्रश्न 3.‘भय से ही दुःख होता है, यह मृत्यु का कारण है तथा इसी के कारण सारी बुराई तथा पाप – होता है। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘युवाओं से’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।
संदर्भ : स्वामी विवेकानंद नवयुवकों को जागृत करते हुए कहते हैं कि भय से मनुष्य दुर्बल बन जाता है और वही उसके पतन का कारण होता है।
स्पष्टीकरण : युवा पीढ़ी को स्वामीजी हिम्मत देते हुए कहते हैं कि तुम्हें कमजोर, भयभीत नहीं होना चाहिए। निर्भीकता से ही किसी राष्ट्र की उन्नति साध्य है। भय ही. मृत्यु का कारण बनता है और इसी से पाप का जन्म होता है।

प्रश्न 4.‘ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है।’ Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘युवाओं से’ नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।

संदर्भ : स्वामी विवेकानंद नवयुवकों को उद्बोधित करते हुए कहते हैं कि धर्म में अंधविश्वास रखनेवालों से बेहतर नास्तिक हैं।
स्पष्टीकरण : ईश्वर की भक्ति सच्चे मन से, विश्वास के साथ करनी चाहिए। दिखावटी या ढोंगी भक्ति से तो नास्तिक बनना बेहतर है। स्वामीजी के ये विचार हैं।

प्रश्न 5.'मैं तुम सबसे यही चाहता हूँ कि तुम आत्मप्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड़ दो।' Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'युवाओं से' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक स्वामी विवेकानंद हैं।
संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि स्वार्थ भावना को त्यागकर उचित मार्ग पर चलना अनिवार्य है।
स्पष्टीकरण : स्वामीजी के अनुसार संगठन के लिए जो बातें चाहिए, आज उनका अभाव है। वास्तव में देशभक्तों की एकता के लिए आपसी ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार – ये सारी बातें नहीं होनी चाहिए। इनसे एकता में बाधा पहुँचती है।

Chapter 3 निन्दा रस

प्रश्न 1.आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'निन्दा रस' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : लेखक का मित्र 'क' लेखक के साथ छल पूर्वक दिखावे की खुशी व्यक्त करते हुए यह वाक्य कहता है।

स्पष्टीकरण : लेखक सुबह की चाय पीकर अखबार देख रहे थे कि उनके एक मित्र तूफान की तरह कमरे में घुसकर उन्हें अपनी भुजाओं में जकड़ा तो उन्हें तो धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। तब अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा था "कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।"

प्रश्न 2.अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'निन्दा रस' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : लेखक को ज्ञात है कि वह कल रात ही आ गया था। लेकिन उसे अकारण ही झूठ बोलने की आदत है।
स्पष्टीकरण : लेखक जानता है कि 'क' तो कल रात ही आ गया था। वह झूठ बोल रहा है कि अभी-अभी गाड़ी से उतरकर सीधे उससे मिलने आया है। लेखक को ज्ञात है कि वह अकारण ही झूठ बोलता है और उसको झूठ बोलने की आदत पड़ गई है।
प्रश्न 3.कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। Sig:........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'निन्दा रस' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : लेखक यह वाक्य पाठकों से कहता है कि कुछ लोग आदतन, स्वभाव के कारण झूठ बोलते हैं।
स्पष्टीकरण : कुछ लोग हमेशा झूठ बोलते हैं। इससे उनको कोई लाभ भी नहीं होता, फिर भी झूठ बोलेंगे। ऐसे लोगों को लेखक ने निर्दोष मिथ्यावादी कहा है।

प्रश्न 4.निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। Sig:.........................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'निन्दा रस' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : लेखक कहता हैं कि निन्दा करने वाले ज्यादातर ईर्ष्या वश किसी की निन्दा करते हैं, उनमें हीनता की भावना होती है।
स्पष्टीकरण : लेखक कहते हैं कि हीनता और कमजोरी की भावना से निन्दा की उत्पत्ति होती है। ऐसे लोग सदा दूसरों की बुराई करते हैं। ऐसे लोग अपने को अच्छा और दूसरों को बुरा मानते हैं।

प्रश्न 5.ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। Sig:..................
उत्तर:प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'निन्दा रस' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।
संदर्भ : लेखक यहाँ निन्दा करने वालों के स्वभाव के बारे में कह रहे हैं।
स्पष्टीकरण : निखटू आदमी हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाता है। तब वह केवल निन्दा करना ही अपना परम कर्तव्य समझने लगता है। धीरे-धीरे उसकी वह आदत बढ़ती जाती है।

Chapter 4 बिन्दा

प्रश्न 1.'उठती है या आऊँ', 'बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं' आदि। Sig:.........................
उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बिन्दा' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं।
संदर्भ : पंडिताइन चाची यह शब्द बिन्दा को सुनाते हुए कहती हैं। इन वाक्यों में कठोरता की धारा बहती है।
स्पष्टीकरण : जब सर्दी के दिनों में लेखिका को देरी से उठाया जाता, गरम पानी से हाथ-मुँह धुलाये जाते, जूते और ऊनी कपड़े पहनाये जाते, जबरदस्ती गरम दूध पिलाया जाता, तब पड़ोस के घर में पंडिताइन चाची की आवाज कठोर शब्दों में सुनाई देती – अभागी तू अभी उठी नहीं? ...... जल्दी से जाकर दूध ला ..... अभागी मर भी नहीं जाती।

प्रश्न 2.'तुम नयी अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नयी रहेगी और न डाँटेंगी।' Sig:.........................
उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बिन्दा' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं।
संदर्भ : जब बिन्दा महादेवी वर्मा को बताती है कि तारा बनकर मेरी माँ ऊपर से देखती रहती है और जो सजधज कर घर में आयी है वह नयी अम्मा है। तभी यह वाक्य महादेवी वर्मा अपनी सहेली बिन्दा से कहती है।
स्पष्टीकरण : बिन्दा की सौतेली माँ का उस पर अत्याचार होते देखकर लेखिका को बहुत दुख होता है। उनके बालसुलभ मन में यह बात बैठ जाती है कि जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती रहती है और जो बहुत सजधज से घर में आती है, वह बिन्दा की नयी अम्मा जैसी होती है। लेखिका की बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती। इसी से उन्होंने सोचकर कहा कि यदि बिन्दा अपनी नयी अम्मा को पुरानी अम्मा कहेगी तो फिर वे नयी नहीं रहेगी और न डाँटेगी।

प्रश्न 3..... पंडिताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार। Sig:........................

उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बिन्दा' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं।

संदर्भ : नयी अम्मा अर्थात् पंडिताइन चाची के दिल में न दया थी और न क्षमा। वह बिन्दा को साधारण सी गलती पर भी उसे कठोर से कठोर दण्ड देती थी।

स्पष्टीकरण : एक दिन दूध गर्म करते समय दूध उफन कर बाहर निकलने लगा। तब बिन्दा उसे उतारने की कोशिश करने लगी पर वह दूध उसके पैरो पर गिर गया और पैर जल गया। लेकिन माँ के पास जाने की बजाय वह छुपना चाहती थी। वह अपनी सहेली के घर की कोठरी में छुप जाती है। तभी उन्हें पण्डिताइन चाची की उग्र आवाज सुनाई देती है। लेखिका की माँ बिन्दा के जले पैरों पर तिल का तेल लगाती है, और उसे उसके घर भिजवा देती है। पर चाची उसके प्रति सहानुभूति न दर्शाते हुए सेवा करने के बजाय कठोर शब्दों से डाटना, मारना शुरु करती है। इससे यही लगता है कि पंडिताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

Chapter 5 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'

प्रश्न 1."वर्षों का समय बीत जाने फ भी पारसी सराय में मेरे साथ हुए दुर्व्यवहार का स्मरण करते ही मेरी आँखों में आँसू छलक पड़ते हैं।"Sig:........................

उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक शान्ति स्वरूप बौद्ध हैं।

संदर्भ : बड़ौदा महाराज की नोकरी करते हुए डॉ. अंबेडकर को अनेक अपमान सहने पड़े थे। उनमें से एक घटना पारसी सराय में रहते हुए अंबेडकर के साथ घटी थी।

स्पष्टीकरण : बड़ौदा रियासत की नौकरी करते हुए अंबेडकर को बड़ौदा में रहने के लिए घर की जरूरत थी। मगर छूतछात की दूषित भावना के कारण अंबेडकर को कोई घर नहीं मिला। वे नाम बदलकर पारसी सराय में रहने लगे। मगर पारसियों को जब उनकी जाति का पता चला, तो उन्होंने डॉ. अंबेडकर को अपमानित करके खदेड़ दिया। अंबेडकर इस घटना को जीवन भर भूले नहीं। वे लिखते हैं – 'वर्षों का समय बीत जाने पर भी पारसी सराय में मेरे साथ हुए दुर्व्यवहार का स्मरण करते ही मेरी आँखों में आँसू छलक पड़ते हैं।'

प्रश्न 2."भीमराव इस प्रकार के असंख्य अपमान के खून के चूट चुपचाप पी जाते।Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक शान्ति स्वरूप बौद्ध हैं।

संदर्भ : बालक भीमराव को स्कूल में पढ़ते हुए भी कई बार अपमान का सामना करना पड़ा। लेखक उन घटनाओं को बता रहे हैं।

स्पष्टीकरण : भीमराव सब प्रकार के अत्याचार, अनाचार और भेदभाव सहन करके भी शिक्षा प्राप्त करते रहे। वे घड़े से पानी नहीं पी सकते थे। पाठशाला में उन्हें दरवाजे के बाहर जूतों के पास बैठना होता था। एक बार अध्यापक ने एक प्रश्न पूछा। भीमराव उस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए ज्यों ही ब्लैक बोर्ड की तरफ चले, त्यों ही कक्षा के सवर्ण छात्रों ने शोर मचाकर कहा – रोको इस अछूत को। यह हमारे भोजन को छूकर भ्रष्ट कर देगा। भीमराव इस प्रकार के असंख्य अपमान के खून के चूट चुपचाप पी जाते।

प्रश्न 3."हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, फिर भी मैं भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने का भरसक प्रयास करूँगा Sig:........................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक शान्ति स्वरूप बौद्ध हैं।

संदर्भ : भीमराव ने जब मैट्रिक की परीक्षा पास की तो उनके पिता ने उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने के लिए यह घोषणा की।

स्पष्टीकरण : डॉ. अंबेडकर ने तमाम विपरीत परिस्थितियों में अपनी स्कूली एवं हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त कर ली थी। 1907 में भीमराव ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। इस अवसर पर भीमराव के सम्मान में एक सभा का आयोजन किया गया। इसी समय उनके पिता रामजी सूबेदार ने घोषणा की कि 'हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, फिर भी मैं भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने का भरसक प्रयास करूंगा।'

प्रश्न 4."मगर धन्य है डॉ. अम्बेडकर। उन्होंने तलवार या बंदूक का नहीं, अहिंसात्मक तरीके से अपने समाज के कष्टों को दूर करने का निर्णय लिया।"Sig:........................

उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक शान्ति स्वरूप बौद्ध हैं।

संदर्भ : डॉ. अंबेडकर को जीवन में पग पग अपमान के खून के चूंट पीने पड़े लेकिन उन्होंने इसका प्रतिरोध अहिंसात्मक तरीके से किया।

स्पष्टीकरण : लेखक अंबेडकर के जीवन पर रोशनी डालते हुए कहते हैं कि भीमराव को स्कूल में पढ़ाई से लेकर नौकरी तक अछूत होने का दंश झेलना पड़ा। उन्हें पारसी सराय से अपमानित कर बाहर किया गया। यहाँ तक कि सिडनेहम कॉलेज, मुंबई में भी जातिवादी लोगों ने उन्हें प्रताड़ित किया। अंबेडकर इन अत्याचारों से पीड़ित हो कई बार बंदूक उठाने के बारे में सोचते थे। मगर धन्य है डॉ. अंबेडकर उन्होंने तलवार या बंदूक का नहीं अहिंसात्मक तरीके से अपने समाज की पीड़ा दूर करने का बीड़ा उठाया।

Chapter 6 दिल का दौरा और एनजाइना

प्रश्न 1."हृदय ही शरीर का वह महत्वपूर्ण अंग है जो शरीर के समस्त भागों को जीवनदायी रक्त को पंप करता है|" Sig:........................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'दिल का दौरा और एनजाइना' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. यतीश अग्रवाल हैं।

संदर्भ : लेखक शरीर में दिल के महत्वपूर्ण स्थिति के बारे में एवं उसके महत्व के बारे में बता रहे हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक दिल के महत्त्व के बारे में बताते हुए कह रहे हैं कि यह हमारे संपूर्ण शरीर में जीवनदायी रक्त का संचरण करता है। पूरे शरीर में रक्त का प्रवाह सुचारू रूप से होता रहे इसके लिए दिल का स्वस्थ रहना निहायत जरूरी है। इसके लिए दिल को दिन-रात कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

प्रश्न 2."इस काम के लिए वह दिन-रात कड़ी मेहनत करता है और उसे स्वयं भी ऊर्जा की ज़रूरत पड़ती है|"Sig:........................

उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'दिल का दौरा और एनजाइना' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. यतीश अग्रवाल हैं।

संदर्भ : लेखक शरीर में दिल की कार्यक्षमता के बारे में बता रहे हैं।

स्पष्टीकरण : हृदय हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। वह पूरे शरीर में जीवन प्रदायक रक्त को पंप करता है। इस कार्य को वह दिन रात करता है। जाहिर सी बात है कि इसके लिए दिल को भी उर्जा की जरूरत पड़ती है। दिल को यह उर्जा दो मुख्य कोरोनरी धमनियों से प्राप्त होती है।

प्रश्न 3."जिन्दगी में मानसिक तनाव को दूर रखें। उतार-चढ़ाव, लाभ-हानि – इसे जीवन का अंग मान लें|" Sig:........................

उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'दिल का दौरा और एनजाइना' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. यतीश अग्रवाल हैं।

संदर्भ : लेखक हृदय रोग से बचाव के बारे में पाठकों को बता रहे हैं।

स्पष्टीकरण : हृदय रोग से बचने के लिए नियमित व्यायाम करना चाहिए। हृदय रोग जिनको है वे भी सुबह-शाम सैर करें। अपने वजन का ध्यान रखें। लेखक कहते हैं कि जिंदगी में मानसिक तनाव को दूर रखें। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लाभ-हानि यह सब जीवन का अभिन्न अंग है। इसे स्वीकार कर लेना चाहिए अर्थात् सकारात्मक सोच के साथ जीवन यापन करना चाहिए।

Chapter 7 मेरी बद्रीनाथ यात्रा

प्रश्न 1.ऐसे प्रदेश में पहुँचकर अकवि भी कवि और अदार्शनिक भी दार्शनिक बन जाता है।Sig:.......

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर है।

संदर्भ : लेखक जब अपने साथियों के साथ बद्रीनाथ यात्रा के लिए गए थे, तब सदा बर्फ से ढके हिमालय पर्वत तथा उसकी सुन्दरता देखकर लेखक यह वाक्य कहते हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यहाँ पहुँचने वाला प्रत्येक यात्री कवि और दार्शनिक होने का अनुभव करने लगता है। ऐसे यहाँ के हिमशिखर, नदियों की अलख, पक्षियों का कलरव, कुहरा आदि मोहक हैं।

प्रश्न 2.यह मार्ग अपेक्षाकृत भयानक है, इसलिए इसका सौंदर्य भी अभी अछूता है।Sig:................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर है।

संदर्भ : केदारनाथ से वापस लौटते वक्त बीच में ऐसे मार्ग पर मुड़ गये जो चमौली पहुंचाता था। उसी मार्ग के बारे में बताते हुए लेखक यह वाक्य कहते हैं।

स्पष्टीकरण : यात्रा के नियमानुसार लेखक चमौली पहुंचते हैं। केदारनाथ की शीत-ऋतु की राजधानी उषीमठ और तुंगनाथ मंदिर यहीं है। मार्ग चाहे कितना कठिन क्यों न हो, फिर भी यात्री यहाँ आते हैं।

प्रश्न 3.हायं राम, वह तो सचमुच बिच्छू लग रहा था, पर वह चलता क्यों नहीं? Sig:.........................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' नामक – पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर है।

संदर्भ : लेखक जब अपनी बद्रीनाथ, केदारनाथ यात्रा पर गये, तब उनकी यात्रा में लोगों के बीच बहुत हँसी-मजाक हुआ करता था।

स्पष्टीकरण : बद्रीनाथ यात्रा के दौरान लेखक को कई रोचक अनुभव हुए जिसमे कभी-कभी अनायास ही उनमें से कोई हँसी का पात्र बन जाता। एक दिन वे अपने दल के साथ एक छोटी सी चट्टी पर खाना खा रहे थे कि सहसा उनके दल के एक वयोवृद्ध सज्जन चिल्ला उठे, 'अरे बिच्छू, बिच्छू', जिसे सुनकर सभी चौंककर उस ओर देखने लगे। देखने पर बिच्छू सा कुछ दिखाई दिया परन्तु उसमें कोई हरकत न थी।

मोमबत्ती की रोशनी में ध्यान से देखने पर ज्ञात हुआ कि जिसे सब बिच्छू समझ रहे थे वह चाबियों का गुच्छा था जो सज्जन की जेब से लटक-कर जाँघ पर आ गया था।

प्रश्न 4.जम कैसे सकता था, हमने वहाँ पानी लगने ही नहीं दिया।Sig:........................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर है।
संदर्भ : लेखक जब केदारनाथ घाटी से गरूड़ गंगा पहुंचे, तब उन्हें स्नान करना था, लेकिन उनमें से एक मित्र यात्रा में नहाना आवश्यक नहीं समझते थे।
स्पष्टीकरण : बद्रीनाथ की घाटी में बहनेवाली 'अलकनंदा' नदी का पानी बहुत थंडा था। लेखक के मित्र यात्रा में नहाना आवश्यक नहीं समझते थे किन्तु यात्रा कि प्रथा के अनुसार सभी को नदी में नहाना जरूरी था। विवश होकर लेखक के मित्र नहा कर आये पर बुरी तरह काँप रहे थे; उन्हें छेड़ने के लिए लेखक ने पूछा "दिल जम गया या बच गया"। इसके उत्तर में उन्होंने भी हास्यपूर्ण ढंग से बताया कि "जम कैसे सकता है, दिल पर पानी लगने ही नहीं दिया।'

प्रश्न 5.वह आकर्षण है- सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का।Sig:........................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर है। .
संदर्भ : लेखक बद्रीनाथ के मंदिर के बारे में बताते हुए यह वाक्य कहते हैं।
स्पष्टीकरण : अत्यधिक ऊँचाई पर बसे इस मंदिर ने भयंकर तूफानों को झेला, नष्ट भी हुआ; फिर भी संघर्षशील मानव अपनी श्रद्धा और भक्ति समर्पण करने यहाँ आता है, जो प्रकृति का वैभव है। बद्रीनारायण मंदिर कला की दृष्टी से कोई महत्व नहीं रखता, फिर भी उसमें एक आकर्षण है। वह आकर्षण है सरल भक्ति का, प्रकृति के

Chapter 8 नालायक

प्रश्न 1.जीवन में पहली बार सिफारिश का यह तरीका जाना।Sig:........................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'नालायक' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विवेकी राय हैं।
संदर्भ : स्कूलों के लिए अध्यापक के चुनाव के लिए आए उम्मीदवारों के साथ उनके शिफारिश करनेवाले तथा साथ में एक कागज पर उम्मीदवार का नाम, ग्राम, शिक्षा आदि लिखकर हस्ताक्षर किए थे।
स्पष्टीकरण : पता चला कि थर्ड डिविजनर्स को प्राइमरी अध्यापक की नौकरी नहीं दे रहे हैं, तो जो युवक उम्मीद लगाए बैठे थे, वे गुस्से में लाल-पीले होकर जवानों की तरह लड़ने-मारने को तैयार हो गए।

प्रश्न 2.सुबह का सिकुड़ा वह बालक अब तनकर जवान की तरह लग रहा था।Sig:........................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'नालायक' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विवेकी राय हैं। .
संदर्भ : एक उम्मीदवार दौड़ता हुआ लेखक के पास आया और उसने कहा – लोग कह रहें है कि थर्ड डिवीजनर्स को नहीं लेंगे। हम आन्दोलन करेंगे।
स्पष्टीकरण : सुबह जो उम्मीदवार लेखक के पास आया था, वही दौड़ता हुआ लेखक के पास आया और उसने कहा – कि लोग कहते हैं वे थर्ड डिवीजनर्स को नहीं लेंगे? हम फर्स्ट डिवीजन और सेकेण्ड डिवीजन वालों के खिलाफ आंदोलन करेंगे। वे हमारा हक मार रहे है, यही बालक जो सुबह से सिकुड़ा बैठा था अब वह तनकर जवान की तरह बातें कह रहा है।

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer

प्रश्न 3.हम हरगिज़ नहीं मानते कि कागज की तीन लकीरों के कारण हम लोग नालायक हैं।Sig:......
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'नालायक' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विवेकी राय हैं।
संदर्भ : इस वाक्य को मंच पर खड़े युवा उम्मीदवार ने कहा। अंको के आधार पर नहीं बल्कि प्रतिभा के आधार पर युवकों को नौकरी मिलनी चाहिए।
स्पष्टीकरण : जब थर्ड डिविजनरों को खारिज कर दिया गया, तो वे लोग इसका दोष शिक्षाविभाग तथा अध्यापकों पर डालने लगे। सिर्फ कागज पर थर्ड डिविजन लिख देने से हम नालायक हो गए क्या? नहीं।

प्रश्न 4.किसको मिले मास्टरी चाँस, थर्ड डिवीज़न मैट्रिक पास।Sig:.........................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'नालायक' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक विवेकी राय हैं।
संदर्भ : थर्ड डिवीजन वालों को नालायक समझकर कोई नौकरी नहीं देता। फर्स्ट और सेकेण्ड डिवीजन वालों के खिलाफ उनका आंदोलन होता है। उसी में यह नारा लगाते हुए लेखक ने यह नारा सुना।
स्पष्टीकरण : थर्ड डिवीजनरों के अधिकार छिन जाने से वे उत्तेजित हो गए और सभी मिलकर 'थर्ड डिविजनर्स जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए आन्दोलन पर उतर गए।

Chapter 9 राष्ट्र का स्वरूप

प्रश्न 1.भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।Sig:.....................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।
संदर्भ : जब तक लोगों के मन में भूमि के प्रति स्वाभाविक प्रेम, आदर सेवाभाव नहीं रहता – राष्ट्र की प्रगति नहीं हो सकती।
स्पष्टीकरण : मनुष्य अपनी माँ की कोख से जन्म लेता है, लेकिन बाद में उसका उदर पोषण करनेवाली माता पृथ्वी माता है। पृथ्वी न हो तो अन्न नहीं, जीवन नहीं, संस्कृती नहीं। पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप संपादित होता है। इसलिये लेखक कहते है कि भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।

प्रश्न 2.यह प्रणाम भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बंधन होता है।Sig:.....................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।
संदर्भ : लेखक के अनुसार कि जिस समय जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को पहचानता है, उसी समय (क्षण) आनंद और श्रद्धा से भरा हुआ इसका प्रणाम भाव मातृभूमि के लिए दृढ़ बंधन बन जाता है।
स्पष्टीकरण : लेखक कहते हैं कि – लोगों के हृदय में भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ। इसी भावना के द्वारा मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे संबंध को प्राप्त करते हैं। जहाँ यह भाव नहीं है, वहाँ जन और भूमि का संबंध अचेतन और जड़ बना रहता है। जिस समय जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को पहचानता है, उसी क्षण आनंद और श्रद्धा से भरा हुआ उसका प्रणाम भाव मातृभूमि के लिए इस प्रकार होता है कि यह प्रणाम भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बंधन होता है।

प्रश्न 3. जन का प्रवाह अनंत होता है।Sig:....................
उत्तरःप्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।
संदर्भ : जन का प्रवाह अनंत होता है यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से अलग कर दिये जाए तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए।
स्पष्टीकरण : हजारों वर्षों से भूमि के साथ राष्ट्रीय जन ने तादात्मय स्थापित किया है। उसका प्रवाह अनंत है। जब तक सूरज की किरणें संसार को अमृत से भरता रहेगा तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर है। जन का संततवाही जीवन नदी के प्रवाह की तरह है, जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

प्रश्न 4.संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है।Sig:....................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।
संदर्भ : संस्कृति ही सारे जन-मानस को जोड़ती है। इसलिए संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है।
स्पष्टीकरण : संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रश्न 5.उन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर निर्भर है।Sig:....................
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल हैं।
संदर्भ : लेखक उदाहरण के रूप में वन और समुद्र को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार नदियाँ जाकर समुद्र का स्वरूप बनाते है उसी प्रकार विभिन्न संस्कृतियाँ राष्ट्र का स्वरूप बनाते है।
स्पष्टीकरण : प्रत्येक जाति अपनी-अपनी विशेषताओं के साथ संस्कृति का विकास करती है। प्रत्येक जन की अपनी-अपनी भावनाओं के अनुसार अलग-अलग संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित होती हैं, परन्तु उन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर निर्भर है।

Chapter 10 रिहर्सल

प्रश्न 1.मरना तो कोई नहीं चाहता, लेकिन मैंने अपने रोगियों को अक्सर मरते देखा है।Sig:............
उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रिहर्सल' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश आदित्य हैं।
संदर्भ : बीमार स्त्री जब वैद्य परमानंद के पास इलाज के लिए आती है तब स्त्री की नब्ज पकड़ते हुए परमानंद यह वाक्य कहते हैं।
स्पष्टीकरण : वैद्य परमानन्द के पास एक अधेड़ उम्र की स्त्री आती है और आकर बेंच पर बैठती है। वह बीमार है। स्त्री वैद्य परमानन्द को बतलाती है कि उसका दिल धड़कता है, नीन्द नहीं आती, आदि-आदि। यह सुनकर वैद्य जी उस स्त्री से कहते हैं कि उसका बचना मुश्किल हैं। स्त्री मरना नहीं चाहती। वैद्य से प्रार्थना करती है कि उसे बचाले। तब वैद्य परमानंद उक्त वाक्य को स्त्री से कहते हैं।

प्रश्न 2.हृदय का गुण ही धड़कना है।Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रिहर्सल' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश आदित्य हैं।

संदर्भ : प्रोफेसर पाण्डुरंग के पास बीमार स्त्री जब इलाज के लिए फिर आती है तब पाण्डुरंग कहते हैं कि उसे भ्रम हो गया है। स्त्री बतलाती है कि उसका हृदय धड़कता है।

स्पष्टीकरण : जब बीमार स्त्री ने कहा कि उसका हृदय धड़कता है तो प्रोफेसर पांडुरंग ने उससे कहा – हृदय तो मेरा भी धड़कता हैं, दुनिया में हर आदमी का धड़कता है। इसमें नयी बात क्या है? हृदय का काम ही धड़कना है। आप को दिल की कमजोरी है, बीमारी नहीं है जिसे धैर्य और कल्पना के सहारे ठीक किया जा सकता है।

प्रश्न 3.मुझे डर है कि कहीं यहाँ बैठे-बैठे मेरा दिल धड़कना बंद न कर दे।Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रिहर्सल' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश आदित्य हैं।

संदर्भ : प्रोफेसर के इलाज के दौरान स्त्री झटके के साथ उठकर तेजी से बाहर जाते हुए यह वाक्य कहती है।

स्पष्टीकरण : जब प्रोफेसर ने कहा – आपका दिल लोहे की तरह मजबूत हो जाएगा, तब स्त्री ने कहा – पांडुरंग जी! मुझे डर है कि कहीं यहाँ बैठे-बैठे मेरा दिल धड़कना बन्द न कर दे। मैं चलती हूँ, नमस्ते।

प्रश्न 4.इसे भ्रम हो गया है कि यह बेहोश है।Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रिहर्सल' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश आदित्य हैं।

संदर्भ : माँ कहती है कि यह बेहोश है और आपको कहानियाँ सूझ रही है प्रोफेसर परमानन्द तब कहते हैं कि इसे भ्रम हुआ है कि यह बेहोश है। .

स्पष्टीकरण : जब माँ कहती है – यह बेहोश है, आपको कहानियों की सूझ रही है। प्रोफेसर ने कहा – यह बेहोश नहीं है। परमानंद ने कहा – तो क्या है? तब प्रोफेसर ने कहा – इसे भ्रम हो गया है कि यह बेहोश है। असल में यह होश में ही है।

प्रश्न 5.सन्निपात है वैद्य परमानंद को और स्नायुरोग है प्रोफेसर पांडुरंग को।Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रिहर्सल' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक ओमप्रकाश आदित्य हैं।

संदर्भ : जब लड़का बेहोश हो जाता है तभी दोनों आपस में एक दूसरे से कहते हैं कि इसे स्नायु रोग है तो दूसरा इसे सन्निपात रोग कहता है।

स्पष्टीकरण : जब माँ ने कहा – हाय राम! ये तो रोग पर रोग बढ़ाये जा रहे हैं, तब लड़का कहता है – सन्निपात है वैद्य परमानंद को और स्नायुरोग है प्रोफेसर पांडुरंग को। मैं पूरी तरह होश में हूँ। न मुझे भ्रम है और न कुछ महसूस करने की जरूरत।

पध्य भाग का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए

Chapter 11 कबीरदास के दोहे

प्रश्न 1. **माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।**
इक दिन ऐसो होयगो, मैं रौंदुंगी तोय॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी हमें यह संदेश देते हैं कि दुनिया नश्वर है। हमें किसी चीज का घमंड या अहंकार नहीं करना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कवि मनुष्य के अहंकार तथा क्षणभंगुर जीवन के बारे में कहते हैं कि – मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्यों रौंदता है? इतना क्यों अहंकार करता है? एक दिन वह भी आएगा, जब मैं तुझे रौंदूंगी, तब तुम्हारा अहंकार कहाँ रहेगा? हे मानव! अहंकार मत कर। यह जीवन क्षणभंगुर है। मिट्टी का मानव मिट्टी में मिल जाएगा। यानी मनुष्य अपनी मृत्यु के बाद मिट्टी में ही मिल जाता है। इससे मनुष्य जीवन के अस्थायी होने का परिचय मिलता है।

प्रश्न 2. निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी, साबुन बिना निर्मल करै सुभाय॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : यहाँ कबीर कहते हैं कि आलोचना करने वाले का हमें सदैव सम्मान करना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कबीर के अनुसार हमें अपनी निंदा करनेवाले अर्थात आलोचना करनेवाले को अपने समीप रखना चाहिए। हमें उसकी कड़वी, बुरी लगनेवाली बातों से नाराज नहीं होना चाहिए। कड़वी लगने वाली बातों में हमारी भलाई की, हमारे कल्याण का भाव निहित होता है। कबीर कहते हैं ऐसे व्यक्ति को घर में जगह देनी चाहिए। उसके पास रहने से हमको यह लाभ होगा कि वह बिना पानी-साबुन के हमारे स्वभाव को स्वच्छ बना देगा अर्थात् हम उसके द्वारा निन्दा होने के डर से कोई बुरा कार्य नहीं करेंगे। आशय यह है कि निंदको की निंदा भरी बातें सुन-सुनकर हमेंआत्मसुधार करने का मौका मिलता है।

प्रश्न 3. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन मांहि।
ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नांहि॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : यहाँ कबीरदास जी कहते हैं कि हमें प्रत्येक प्राणी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, सच्ची भक्ति के साथ जीवन को सार्थक बनाना चाहिए, क्योंकि वही सच्ची भक्ति है।

स्पष्टीकरण : संत कवि कहते हैं कि मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए इधर-उधर भटकता है, जब कि ईश्वर उसी के अन्दर या उसी के पास है। जैसे कि – कस्तूरी मृग की नाभि में ही है, पर मृग नहीं जानता और भ्रमित होकर सारे वन में उसे ढूँढ़ता फिरता है। इसी प्रकार घट-घट में राम समाया हुआ है, पर मानव उसे भ्रम के कारण देख नहीं पाता।

प्रश्न 4. दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे होय॥ Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : यहाँ कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर का हमेशा स्मरण करते रहना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कबीरदास के अनुसार हम दुःख-तकलीफ में ईश्वर को याद करते है परन्तु सुख में ईश्वर को भूल जाते है। मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के लिए ईश्वर को याद करता है। कबीर का मत है कि जिस दिन मनुष्य सुख में ईश्वर का ध्यान करेगा उस दिन से उसे दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा। ईश्वर के स्मरण से मिलने वाली शक्ति द्वारा उसका दुःख सुख में परिवर्तित हो जायेगा

Chapter 12 तुलसीदास के दोहे

प्रश्न 1.तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि फलहिं पर-हेत। इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत॥ Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुलसीदास के दोहे' नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

संदर्भ : यहाँ तुलसीदास संत लोगों की विशेषता पर प्रकाश डाल रहे हैं।

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहते हैं कि संत पुरुष उस आम के पेड़ की तरह होते हैं जो हमेशा दूसरों को मीठे फल देता रहता है। बदले में वह कुछ भी नहीं लेता। वह तो दूसरों का उपकार करने के लिए ही फलता-फूलता है। लोग धरती से पत्थर भी फेंकते हैं तो भी वह उन्हें फल ही देता है। संत पुरुष भी ठीक वैसे ही होते है। उनका कितना भी अपमान किया जाए, वे विनम्रता नहीं त्यागते हैं। क्रोध नहीं करते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य दूसरों का हित करना ही होता है। एक जगह तुलसी यह भी कहते हैं कि 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' अर्थात् दूसरों की भलाई से बड़ा और कोई धर्म नहीं हो सकता। संत पुरुषों के लिए परहित ही धर्म होता है।

प्रश्न 2.तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुलसीदास के दोहे' नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

संदर्भ : यहाँ तुलसीदास जी कहते हैं कि हम जैसे कर्म करते हैं, हमें वैसा ही फल मिलता है, इसलिए हमें हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए।

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि हमारा शरीर खेत है और हमारा मन किसान है। पाप और पुण्य ये दो प्रकार के बीज हैं। अब हम इनमें से जो बीज बोएँगे, हमें वैसा ही फल मिलेगा।
अतः अच्छा या बुरा फल पाना हमारे ही हाथ में है।

प्रश्न 3. तुलसी एहि संसार में, भाँति भाँति के लोग।
सब सो हिल मिल बोलिए, नदी नाव संयोग।। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुलसीदास के दोहे' नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

संदर्भ : तुलसीदास कहते हैं कि इस जगत में भिन्न भिन्न विचारों के लोग रहते हैं। हमें उनसे मेल मिलाप के साथ रहना चाहिए।

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार में भिन्न-भिन्न विचारों को, धर्मों को मानने वाले लोग रहते है। हमें सबके साथ सहिष्णुता के साथ रहना चाहिए। हमें उनके विचारों, मान्यताओं का सम्मान करना चाहिए। सबसे प्रेमपूर्वक बोलना चाहिए। भिन्न विचारों के साथ समन्वय जरूरी होता है।

प्रश्न 4. काम, क्रोध, मद, लोभकी, जौ लौं मन में खान।
तौं लौ पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान।। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुलसीदास के दोहे' नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

संदर्भ : तुलसीदास जी कहते है कि व्यक्ति चाहें जितना बड़ा विद्वान क्यों न हो, जब तक उसके पास अहंकार और लोभ जैसे संस्कार उसमें विद्यमान रहते हैं तब तक वह मूर्ख के समान ही होता है।

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहतें हैं- जब तक हमारे मनरूपी खजाने में काम-क्रोधा आदी अरिषड्वर्ग स्थिर रहते हैं तब तक मूर्ख और पंड़ित एक समान होते हैं। एक साधारण मनुष्य जो उपरोक्त मनोविकारों से बचकर रहता है, वही महान होता है। नहीं तो बड़ा पंडित भी मूर्ख बन जाता है।

Chapter 13 मीराबाई के पद

प्रश्न 1. म्हारां री गिरधर गोपाल दूसरां न कूयां।
दूसरां न कोवां साधां सकल लोक जूयां।
भाया छांड्या बंधां छांड्या सगां सूयां।
साधां संग बैठ बैठ लोक लाज खूया।
भगत देख्यां राजी ह्ययां जगत देख्यां रुयां। Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मीराबाई के पद' से लिया गया है, जिसकी रचयिता मीराबाई हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं कि मैंने सारा संसार देख लिया है इस संसार में कोई किसी का नहीं होता है, एक प्रभु कृष्ण ही हैं और कोई नहीं है।

स्पष्टीकरण : मीराबाई कहती हैं कि मेरे तो गिरधर गोपाल हैं, दूसरा कोई नहीं है। साधुसंतों के बीच बैठकर मैं खुश हूँ और अपने इष्ट की प्राप्ति के लिए ही मैंने भाई-बन्धु तथा अपने सगे-संबंधियों को छोड़ दिया है। साधुसंग बैठकर मैंने लोकलाज त्याग दी है। भक्तों की संगत उन्हें खुशी देती है। जगत के लोगों का इस तरह संसार रूपी मायाजाल में फँसा देखकर उन्हें रोना आता है। लोग इस बात को नहीं जानते। मैं तो कृष्ण की दीवानी हूँ।

प्रश्न 2. या देही रो गरब ना करना माटी मा मिल जासी।
यो संसार चहर री बाजी साँझ पड्या उठ जासी। Sig:....................

उत्तरः प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'मीराबाई के पद' से लिया गया है। इसकी रचयिता मीराबाई हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पद में मीराबाई शरीर की नश्वरता, क्षणभंगुरता के बारे में बता रही हैं।

स्पष्टीकरण : मीराबाई आमजन को संदेश देती हुई कहती हैं कि इस शरीर पर घमंड नहीं करना चाहिए। इसका नष्ट होना तय है। यह मिट्टी का शरीर मिट्टी में ही मिल जाएगा। इस पर क्या गर्व करना? अर्थात् पंचमहाभूत से बना यह शरीर पंचमहाभूत में ही विलिन हो जाएगा। इसलिए अपने जीवन को सार्थक कामों में लगाना चाहिए। यह संसार चिड़िया के खेल की तरह है। जिस प्रकार चिड़िया दिनभर कलरव करती हैं, व्यस्त रहती हैं और शाम होते ही अपने घौंसलों में लौट जाती है, वैसे ही यह जीवन भी है। इसको भी एक दिन अपना काम समेटकर उठ जाना है। विशेष : भाषा राजस्थानी मिश्रित हिन्दी।
शरीर की क्षणभंगुरता का संदेश।

Chapter 14 शरण वचनामृत

प्रश्न 1. कहते हैं कनक माया है, कनक माया नहीं
कहते हैं कामिनी माया है, कामिनी माया नहीं.
कहते हैं माटी माया है, माटी माया नहीं
मन के आगे जो चाह है, वही माया है, गुहेश्वर। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत वचनों को हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'शरण वचनामृत' नामक काव्यपाठ से लिया गया है, जिसके रचयिता अल्लमप्रभु हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वचन में अल्लमप्रभु मन की ईच्छा को माया बता रहे हैं। मन की चाह ही माया है।

स्पष्टीकरण : इस वचन में अल्लमप्रभु कहते हैं – कई लोग कहते हैं, कनक माया है। सोने को ही कनक कहा गया है। वहीं कुछ लोग स्त्री को माया कहते हैं। माया को महाठग भी कहा गया है जो हमें धोखा देती है, भ्रमित करती है, सांसारिक चीजों में उलझाती है। परन्तु अल्लमप्रभु कहते हैं कि स्त्री भी माया नहीं है। कुछ लोग माटी को अर्थात् जमीन जायदाद को माया कहते हैं लेकिन वह भी माया नहीं है। असल बात यह है कि जो मन की इच्छा है, चाह है, वहीं वास्तविकता में माया है। वही हमें भटकाती है।
विशेष : कन्नड़ से हिन्दी अनुवाद। कन्नड़ भक्ति कालीन संतों के उपदेशपरक वचनों में जनकल्याण का भाव निहित है।

प्रश्न 2. ज्ञान से अज्ञान दूर होता है,
ज्योति से तमंध दूर होता है,
सत्य से असत्य दूर होता है,
पारस से लोहत्व दूर होता है,
आपके शरणों के अनुभाव से
मेरा भव छूट गया, कूडलसंगम देवा। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत वचनों को हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'शरण वचनामृत' नामक काव्यपाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महात्मा बसवेश्वर हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वचन के माध्यम से बसवेश्वर कहते हैं कि ज्ञान प्राप्त करने से अज्ञानता अपने आप चली जाती है। अर्थात परमात्मा का ज्ञान पाकर इस संसार के मोह माया से व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

स्पष्टीकरण : महात्मा बसवेश्वर इस वचन के माध्यम से कहते हैं कि ज्ञान से अज्ञान, ज्योति से अंधकार, सत्य से असत्य, पारस से लोहत्व दूर होता है। इसी तरह हे कूडलसंगम देव! आपके शरणों के अनुभाव से मेरा यह भव छूट गया है।

M.K.Z

Chapter 15 रसखान के सवैये

प्रश्न 1. मानुष हों, तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो, चरौ नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं, तो वही गिरि कौ, जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं, बसेरो करौं मिलि कालिन्दी-कूल-कदम्ब की डारन॥ Sig:...............

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत सवैया हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रसखान के सवैये' नामक शीर्षक से लिया गया है जिसके रचयिता रसखान हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत सवैये में रसखान हर स्थिति में ब्रज गोकुल में ही जन्म लेना चाहते हैं। वह अपना संबंध उन्हीं से जोड़ना चाहते हैं जिनके साथ कृष्ण का संबंध रहा है।

स्पष्टीकरण : इस सवैये के माध्यम से कृष्णभक्त कवि रसखान श्रीकृष्ण पर अनन्य भक्ति तथा ब्रजभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। कवि अपना संबंध उन्हीं से जोड़ना चाहते हैं जिनका संबंध श्रीकृष्ण से है। रसखान को ब्रजभूमि से इतना लगाव हो गया है कि वे कहते हैं – यदि मेरा अगला जन्म मनुष्य रूप में हो तो मैं ब्रजभूमि में रहनेवाले गोकुल गाँव के ग्वालों में जन्म लूँ। पशु के रूप में मेरा जन्म हो जाये तो मैं नंदबाबा द्वारा चराई जानेवाली गौओं के झुंड में कोई एक गौ बनूँ। पत्थर भी बन जाऊँ, तो गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे ब्रज की रक्षा के लिए कृष्ण ने छाते के रूप में उठाया था। यदि पक्षी बनूँ, तो कालिंदी नदी के किनारे स्थित कदम्ब के पेड़ों पर वास करने वाले पक्षियों में जन्म लूँ। अर्थात् "कहीं भी रहूँ, कैसे भी रहूँ, ब्रजभूमि का होकर रहूँ" यह भाव स्पष्ट होता है।

प्रश्न 2. मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माला गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो 'रसखानि', सो तेरे कहें सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धरौंगी॥ Sig:...................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत सवैया हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'रसखान के सवैये' नामक शीर्षक से लिया गया है जिसके रचयिता रसखान हैं।

संदर्भ : गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है। वे अपने कृष्ण को पाने के लिए, कृष्ण को रिझाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं।

स्पष्टीकरण : एक गोपी अपनी सखी से कहती है कि कृष्ण मेरा प्रिय है और उसे प्राप्त करने के लिए तेरे कहने पर सारा स्वांग भर लूँगी। वह मोर का पंख अपने सिर पर रख लेगी, गुंज की माला गले में पहन लेगी, पीला वस्त्र बदन पर ओढ़कर हाथ में लकुटी लेकर गोधन को ले ग्वालों के साथ वन में फिरेगी। जैसी सखी की इच्छा वह सब करेगी परन्तु कृष्ण की मुरली को अपने होटों से छूकर अपवित्र नहीं कर सकती।

Chapter 16 कुटिया में राजभवन

प्रश्न 1. औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ,
श्रमवारि-बिन्दु फल स्वास्थ्य-शुक्ति फलती हूँ
अपने अचल से व्यंजन आप झलती हूँ। **Sig:....................**

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कुटिया में राजभवन' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में सीता जी खुद फल-फूल लाकर उनसे खाना पकाती हैं सुखी और स्वस्थ जीवन का आनंद उठाती है।

स्पष्टीकरण : उक्त पंक्तियों में सीता जी अपने स्वावलंबन के बारे में कह रही हैं कि मैं यहाँ अपने पैरों पर खड़ी हूँ, दूसरों पर निर्भर नहीं हूँ। मेरे शरीर का वास्तविक आनंद तो परिश्रम से ही प्राप्त होता है। अपने हाथों से हवा स्वयं झलती हूँ।

प्रश्न 2.कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुंछ करने में अब हाथ लगा है मेरा,
वन में ही तो गार्हस्थ्य जगा है मेरा। **Sig:....................**

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कुटिया में राजभवन' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं।

संदर्भ : जब सीता जी प्रभु रामचन्द्र के साथ वन में कुटिया बनाकर रहती है, वन में एक साधारण नारी की तरह अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाने का सौभाग्य पाती हैं।

स्पष्टीकरण : गृहस्थ जीवन का आनंद वन में अनुभव करते हुए सीता जी कहती हैं कि कौन कहता है कि हमारा भाग्य ठगा गया है? वास्तव में यहाँ हमारा भय मिट गया है। यहाँ रहकर कुछ न कुछ करने में मन लगता है। ऐसा लग रहा है कि वन में ही गृहस्थ जाग गया है।

Chapter 17 तोड़ती पत्थर

प्रश्न 1.गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : यह पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

संदर्भ : निराला जी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती महिला की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

स्पष्टीकरण : गर्मियों की तपती दुपहरी में निराला जी ने एक स्त्री को पत्थर तोड़ते हुए देखा था। उसके हाथ में भारी हथौड़ा था और वह उससे पत्थर पर बार-बार चोट का रही थीं। वह पत्थर तोड़ रही थी। जहाँ वह बैठी थी वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं था लेकिन उसके सामने एक विशाल भवन था जिसमें पंक्तियों में पेड़ लगे थे। निराला कहना चाहते हैं कि गरीबों को सुख नसीब नहीं है। सुख धनी लोगों के पास है। वे साधन संपन्न है। समाज में विषमता व्याप्त है।

विशेष : छायावादी प्रगतिशील कविता। अर्थ-वैषम्य पर प्रकाश डालती है। मुक्त छंद का प्रयोग

प्रश्न 2.चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।
उठी झुलसाती हुई लू Sig:....................

उत्तर: **प्रसंग** : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

संदर्भ : इलाहाबाद के पथ पर तमतमाती धूप में पत्थर तोड़नेवाली नारी के परिश्रम के बारे में कवि कहता है।
स्पष्टीकरण : पत्थर तोड़नेवाली नारी झुलसाती धूप में, पसीना टपकाती अपने कार्य में मग्न है। उसकी विवशता पर कवि का मन दुखी होता है किन्तु उस नारी के धैर्य तथा कार्य में लगन देखकर उसके प्रति सम्मान बड़ जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी वह अपना कार्य लगन से कर रही थी।

प्रश्न 3.देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं। Sig:....................

उत्तर: **प्रसंग** : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

संदर्भ : एक गरीब मजदूरिन की असहाय हालत का वर्णन कवि ने सरल परन्तु मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है जो पाठकों के मन को द्रवित कर देता हैं।

स्पष्टीकरण : कवि मजदूरिन की दयनीय दशा को देख रहा था। तभी मजदूरिन ने कवि को अपनी ओर देखते हुए देख लिया। उसने दृष्टि उठाकर छन भर के लिए उस वैभवशाली विशाल भवन की ओर देखा। जब उसे वहाँ कोई दिखाई नहीं दिया तो उसने विवशता से कवि के तरफ देखा। उसकी दृष्टि वैसी थी जैसे कोई व्यक्ति लगातार शोषण से भयभीत होकर रोता नहीं है। शोषण ने उसके आँसू सुखा दिए थे।

Chapter 18 उल्लास

प्रश्न 1. जीवन में न निराशा मुझको,
कभी रुलाने को आई।
'जग झूठा है' यह विरक्ति भी,
नहीं सिखाने को आई॥ Sig:....................

उत्तर: **प्रसंग** : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'उल्लास' नामक कविता से ली गई हैं जिसकी रचयिता कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान हैं।

संदर्भ : कवयित्री कहती हैं कि मुझे जिन्दगी में कभी मायूसी, निराशा नहीं हुई। दुनिया के किसी प्रकार के दुख ने मुझे नहीं रुलाया।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्रि का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त होता है। उनके अनुसार जीवन 'आशा' की भावना को दर्शाता है। निराशा या विरक्ति को उन्होंने अपने जीवन में स्थान नहीं दिया। जग के प्रति निर्मोह या जग का झूठा होने का एहसास उन्हें नहीं हुआ। जीवन के प्रति उसे वैराग्य नहीं बल्कि प्रेम है। उनकी नज़र में मनुष्य का आशापूर्ण मनोभाव ही उसके 'सुख' की पूँजी है। लौकिक जीवन में प्रत्येक जन या वस्तु के प्रति विश्वास रखकर सुख और शांति से जीना चाहिए।

प्रश्न 2. मैं हूँ प्रेममयी, जग दिखता
मुझे प्रेम का पारावार।
भरा प्रेम से मेरा जीवन,
लुटा रहा है निर्मल प्यार॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'उल्लास' नामक कविता से ली गई हैं जिसकी रचयिता कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान हैं।

संदर्भ : कवयित्री जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। उन्होंने दुनिया से सिर्फ प्रेम करना सीखा, और जीभर के प्यार लुटाया, बदले में उन्हें भी ढेर सारा प्यार मिला।

स्पष्टीकरण : कवयित्री जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए कहती है कि मैं प्रेममयी हूँ, मेरा जीवन प्रेम से भरा हुआ है। यह संसार मुझे प्रेम रूपी सागर समान दिखता है। संसार के कण-कण में प्रेम बसा है एवं मैं इस निर्मल प्रेम को सभी पर लुटा रही हूँ।

Chapter 19 तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए

प्रश्न 1.जब-जब जग ने कर फैलाये
मैंने कोष लुटाया,
रंक हुआ मैं निज निधि खोकर,
जगती ने क्या पाया? **Sig:....................**

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए' से लिया गया है जिसके रचयिता डॉ. हरिवंशराय बच्चन' हैं।

संदर्भ : इन पंक्तियों में कवि कह रहें है कि दुनिया के लिए मैंने क्या नहीं किया। निज निधि खोकर उन्होंने अपने कल्पना और भावनाओं से भरे काव्य रूपी खजाने को उन्होने दुनिया के लिए लुटाया है लेकिन जग ने उन्हें क्या दिया।

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि जब भी इस जग ने हाथ फैलाए, तो मैंने अपना कोष लुटा दिया और अपनी सम्पत्ति दूसरों को देकर मैं स्वयं रंक हो गया। इस संसार ने आखिर क्या पाया?

प्रश्न 2. दुःख से जीवन बीता फिर भी
शेष अभी कुछ रहता,
जीवन की अंतिम घड़ियों में
भी तुम से यह कहता। **Sig:....................**

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए' से लिया गया है जिसके रचयिता डॉ. हरिवंशराय बच्चन' हैं।

संदर्भ : कवि बच्चन जी अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहते हैं कि उनका सारा जीवन दुःख में ही बीता है। और अंतिम घड़ी तक वह पाठकों से विनती करते है कि तुम गा दो मेरा गान अमर हो जाए।

Chapter 20 प्रतिभा का मूल बिन्दु

प्रश्न 1.“कहाँ जन्म है तेरा?” मैंने पूछा जब प्रतिभा से,
“महलों में? गुलगुले गलीचों पर? गुलाब की क्यारी में?
वृद्धों की चिंता में? बच्चों की दंतहीन किलकारी में?
बोलो तुम रहती कहाँ? जानने को हम सब हैं कितने प्यासे!” Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘प्रतिभा का मूल बिन्दु’ नामक कविता से ली गई हैं जिसके रचयिता डॉ. प्रभाकर माच्वे हैं।

संदर्भ : कवि सतत प्रयास तथा परिश्रम से जन्म लेनेवाली ‘प्रतिभा’ के मूल को प्रश्नों के द्वारा जानने की उत्सुकता प्रकट करता है।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि माचवेजी “प्रतिभा के मूल को जानने कि इच्छा से, उसके जन्म स्थान के बारे में स्वयं प्रतिभा से ही प्रश्न करते हैं कि वह महलों में, फूलोवाले गलिचों पर, गुलाब की क्यारियों में, वृद्धों की चिंतनशीलता का अनुभव में, बच्चों कि मुग्धता में, कहाँ पैदा होती है। कवि ‘प्रतिभा’ के मूल की सैद्धांतिक समीक्षा का प्रयास इन पंक्तियों द्वारा करता है।

प्रश्न 2. प्रतिभा बोली – “यातना, निरन्तर कष्ट-सहन की ताकत में
मैं बसती हूँ संघर्ष-निरत साधक में, असिधारा-व्रत में।” Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘प्रतिभा का मूल बिन्दु’ नामक कविता से ली गई हैं, जिसके रचयिता डॉ. प्रभाकर माचवे हैं।
संदर्भ : माचवे जी ने प्रतिभा की व्याख्या प्रस्तुत की है। प्रतिभा का विकास किस तरह होता है, यह समझाने का वे प्रयत्न करते हैं।

स्पष्टीकरण : प्रतिभा कई सारे रूपों में प्रकट होती है। वह महलों की स्थापत्य कला में, गलीचों की बनावट में और बच्चों की किलकारी में प्रकट होती है। यह सब कलाएँ मनुष्य की प्रतिभा की ही देन है। यह प्रतिभा निरंतर कष्ट सहने या यातना सहने से ही प्रकट होती है। यह भी एक साधना की तरह है। विचार के स्तर पर, कल्पना के स्तर पर खूब संघर्ष करने के बाद ही कोई नई चीज प्रतिभा दे पाती है। प्रतिभा बैठे बैठाये विकसित नहीं होती है। उसे निरन्तर अभ्यास से हासिल करना पड़ता है। प्रतिभा को साधना तलवार की धार पर खड़े होने के समान है। प्रतिभा अनुशासन से आती है।

Chapter 21 तुम आओ मन के मुग्धमीत

II.संदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

प्रश्न 1. "कहाँ जन्म है तेरा?" मैंने पूछा जब प्रतिभा से,
"महलों में? गुलगुले गलीचों पर? गुलाब की क्यारी में?वृद्धों की चिंता में?
बच्चों की दंतहीन किलकारी में?
बोलो तुम रहती कहाँ? जानने को हम सब हैं कितने प्यासे!" Sig:..................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' नामक कविता से ली गई हैं जिसके रचयिता डॉ. प्रभाकर माच्चे हैं।

संदर्भ : कवि सतत प्रयास तथा परिश्रम से जन्म लेनेवाली 'प्रतिभा' के मूल को प्रश्नों के द्वारा जानने की उत्सुकता प्रकट करता है।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि माचवेजी "प्रतिभा के मूल को जानने कि इच्छा से, उसके जन्म स्थान के बारे में स्वयं प्रतिभा से ही प्रश्न करते हैं कि वह महलों में, फूलोवाले गलिचों पर, गुलाब की क्यारियों में, वृद्धों की चिंतनशीलता का अनुभव में, बच्चों कि मुग्धता में, कहाँ पैदा होती है। कवि 'प्रतिभा' के मूल की सैद्धांतिक समीक्षा का प्रयास इन पंक्तियों द्वारा करता है।

प्रश्न 2. प्रतिभा बोली – "यातना, निरन्तर कष्ट-सहन की ताकत में
मैं बसती हूँ संघर्ष-निरत साधक में, असिधारा-व्रत में।" Sig:.....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' नामक कविता से ली गई हैं, जिसके रचयिता डॉ. प्रभाकर माचवे हैं।

संदर्भ : माचवे जी ने प्रतिभा की व्याख्या प्रस्तुत की है। प्रतिभा का विकास किस तरह होता है, यह समझाने का वे प्रयत्न करते हैं।

स्पष्टीकरण : प्रतिभा कई सारे रूपों में प्रकट होती है। वह महलों की स्थापत्य कला में, गलीचों की बनावट में और बच्चों की किलकारी में प्रकट होती है। यह सब कलाएँ मनुष्य की प्रतिभा की ही देन है। यह प्रतिभा निरंतर कष्ट सहने या यातना सहने से ही प्रकट होती है। यह भी एक साधना की तरह है। विचार के स्तर पर, कल्पना के स्तर पर खूब संघर्ष करने के बाद ही कोई नई चीज प्रतिभा दे पाती है। प्रतिभा बैठे बैठाये विकसित नहीं होती है। उसे निरन्तर अभ्यास से हासिल करना पड़ता है। प्रतिभा को साधना तलवार की धार पर खड़े होने के समान है। प्रतिभा अनुशासन से आती है।

Chapter 22 मत घबराना

प्रश्न 1. कोई साथ न रहने पर भी
चन्दा-तारे साथ रहेंगे।
दर्द तुम्हारा बाँटेंगे वे,
तुमसे अपनी बात कहेंगे। Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘मत घबराना’ नामक कविता से ली गई हैं, जिसके रचयिता डॉ. रामनिवास ‘मानव’ हैं।

संदर्भ : कवि नवयुवकों को संदेश देते हैं कि जीवन के पथ पर तुम सदा आगे बढ़ों। प्रकृति हमें प्रेरणा देती है।

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि बाधाओं से, प्रतिकूल परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। इनसे बिना डरे निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए, कोई साथ दे या न दे। आप मंजिल तय करते समय अकेले पड़ जाएँ तब घबराना नहीं। यह चाँद, यह तारे तुम्हारे साथ हर पल रहेंगे। यह कभी भी साथ नहीं छोड़ते। प्रकृति मनुष्य का कभी भी साथ नहीं छोड़ती। मनुष्य का प्रकृति के साथ रिश्ता अटूट है। तुम उनसे बात करना। अपना कष्ट सुनाना। वे बिना परेशान हुए तुम्हारी बात को गंभीरता से सुनेंगे। वे अपनी बात तुमसे कहेंगे। उन्हें अपना सच्चा मित्र समझकर आगे बढ़ते जाओ।

प्रश्न 2. मंजिल सदा उसी को मिलती
धीर-वीर जो बढ़ता जाता।
काँटों को भी फूल समझता,
विपदाओं से हाथ मिलाता।
कायर तो घबराते वे ही,
वीर न करते कभी बहाना Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘मत घबराना’ नामक कविता से ली गई हैं जिसके रचयिता डॉ. रामनिवास ‘मानव’ हैं।

संदर्भ : कवि यहाँ नव युवकों को संदेश देते हुए कह रहे हैं कि तुम वीर हो, विपदाओं का सामना करते हुए मंजिल के पथ पर तुम आगे बढ़ते रहो। कवि ने इस कविता में प्रकृति को प्रेरणा के रूप में चित्रित किया है।स्पष्टीकरण : कवि कहता है कि मंजिल सदा उसी को मिलती है, जो धीर-वीर बनकर आगे बढ़ता है। जो काँटों को फूल समझकर, विपत्तियों से हाथ मिलाकर आगे बढ़ता है और डरने का बहाना न बनाकर जो आगे बढ़ता है, वही जीवन में सफल होता है।

Chapter 23 अभिनंदनीय नारी

प्रश्न 1. इस धरा पर मृदुल रस धार-सी तुम सुख का सार हो नारी
तुम वंदनीय हो, अभिनंदनीय हो, सादर नमन तुम्हें हे नारी...!
धरा सी सहनशील, जल-सी निर्मल, फूलों सी कोमल तुम नारी
जीवन की गति, जीवन की रति, जीवन की मति हो तुम नारी...! Sig:.................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'अभिनंदनीय नारी' नामक कविता से लिया गया हैं जिसके रचयिता जयन्ती प्रसाद नौटियाल हैं।

संदर्भ : नारी की महत्ता का गौरव बताते हुए कवि कहते हैं कि वह वंदनीय, अभिनंदनीय है, वह धरती जैसी सहनशील, पानी जैसी निर्मल और कोमल है।

स्पष्टीकरण : नारी धरती की कोमल रस-धारा और सुख की सागर है। नारी वंदनीय, पूजनीय है। उसे सादर प्रणाम! नारी में धरती-सी सहनशीलता, जल-सी निर्मलता, फूलों-सी कोमलता है। नारी जीवन की गति, जीवन की रति और जीवन की मति है।

प्रश्न 2. नारी अबला नहीं बल्कि यह नारी रणचंडी भी है,
कृत्या है यह दुर्दम, दैत्य नाशिनी दुर्गा माँ भी है।
शक्ति और शिवानी है यह और कात्यायिनी भी है
दैत्यों के शोणित को पीने वाली महाकाली भी है॥ Sig:....................

उत्तर: प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'अभिनंदनीय नारी' नामक कविता से लिया गया हैं जिसके रचयिता जयन्ती प्रसाद नौटियाल हैं।

संदर्भ : नारी की शक्ति का परिचय देते हुए कवि कहते हैं कि नारी अबला नहीं। अन्याय और अत्याचार के विरोध में वह रणचण्डी से कम नहीं है।

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि नारी अबला नहीं, बल्कि रणचंडी है। राक्षसों का संहार करने वाली माँ दुर्गा है। नारी शक्ति-स्वरूपा, शिवानी और कात्यायनी है। नारी राक्षसों के खून को पीनेवाली महाकाली भी है।

अभ्यास Chapter 1 To Chapter 29

Chapter 1 बड़े घर की बेटी

प्रश्न 2. आनंदी ने अपने ससुराल में क्या रंग-ढंग देखा? Sig:.........................
उत्तर: आनंदी एक बड़े घर की बेटी थी। वह अपने घर में सभी सुख-सुविधाओं में पली थी। वे सारी सुख-सुविधाएँ यहाँ ससुराल में नहीं थीं। यहाँ न तो बाग-बगीचे थे, न मकान में खिड़की और जमीन पर फर्श। फिर भी आनंदी ने कुछ ही दिनों में अपने आपको इस घर के अनुकूल बना लिया।

प्रश्न 3. लालबिहारी आनंदी पर क्यों बिगड़ पड़ा? Sig:........................
उत्तर: एक दिन लालबिहारी सिंह ने माँस पकाने के लिए कहा। आनंदी ने माँस पकाते समय हाँड़ी में जो घी था, वह सब डाल दिया। जब लालबिहारी ने दाल में घी डालने के लिए कहा, तो आनंदी ने कहा कि माँस पकाने में घी खत्म हो गया। इसी कारण लालबिहारी आनंदी पर बिगड़ गया।

प्रश्न 4. आनंदी बिगड़ता हुआ काम कैसे बना लेती है? Sig:........................
उत्तर: श्रीकंठ सिंह के छोटे भाई लालबिहारी सिंह के अभद्र व्यवहार से आनंदी क्रोधित हो जाती है। गुस्से में उसने अपने पति से सारी शिकायतें कीं। झगड़ा इतना बढ़ गया कि घर टूटने तक पहुँच गया। तब बिखरते हुए घर को देखकर आनंदी शांत हो जाती है और लालबिहारी को घर छोड़कर जाने से रोक लेती है। इस प्रकार आनंदी बिगड़ते काम को बना लेती है।

Chapter 2 युवाओं से

प्रश्न 1.भारतवर्ष का पुनरुत्थान कैसे होगा? Sig:.........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत का पुनरुत्थान शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से होगा। वह उत्थान विनाश की ध्वजा से नहीं, बल्कि शांति और प्रेम की ध्वजा से होगा। हमारी यह वृद्ध भारत माता पुनः एक बार जाग्रत होकर अपने सिंहासन पर पूर्ण वैभवता के साथ विराजमान होगी।

प्रश्न 5.शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानंद जी क्या कहते हैं? Sig:.........................
उत्तर:स्वामी विवेकानंदजी के अनुसार – शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ढूंस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता हैं। हमें उन विचारों की अनुभूति करनी चाहिए, जो जीवन-निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हों। यदि केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो हम पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करनेवाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं।

Chapter 3 निन्दा रस

प्रश्न 3.'मिशनरी' निन्दक से लेखक का क्या तात्पर्य है? Sig:........................
उत्तर:मिशनरी निन्दक से लेखक का तात्पर्य उन निंदकों से है जो पूरी पवित्र भावना से निन्दा के कार्य में लगे रहते हैं। उनका किसी से वैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निंदा कार्य में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनंद से उछालते हैं जिस आनंद से अन्य लोग दुष्मनों की। निन्दा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

प्रश्न 4.निन्दकों के संघ के बारे में लिखिए। Sig:........................
उत्तर:जिस प्रकार मजदूरों की ट्रेड-यूनियन होती है, वैसे निन्दकों का भी एक संघ होता है। संघ के सदस्य इधर-उधर की खबरें लाकर, संघ को सौंपते हैं। यह कच्चा माल माना जाता है। संघ इसे पक्का माल बनाकर, सभी सदस्यों को इस तरह बाँटते हैं, जैसे उनकी दृष्टि में वह 'बहुजन-हिताय' कार्य हो।

Chapter 4 बिन्दा

प्रश्न 1.महादेवी वर्मा को बिन्दा की याद क्यों आ गई? Sig:........................
उत्तरःएक सज्जन बेटी को प्रवेश दिलाने स्कूल आये थे। उसकी कमजोर बेटी डरी हुई थी। उम्र ठीक न बताये जाने के कारण प्रवेश-पत्र लौटा दिया गया था। लेखिका ने सुना कि उन सज्जन की दूसरी पत्नी है, तो अचानक दो युगों से अधिक समय की धूल के नीचे दबी बिन्दा की याद आ जाती है।

प्रश्न 2.महादेवी वर्मा को पंडिताइन चाची का कौन-सा रूप आकर्षित करता था? Sig:....................
उत्तरःपंडिताइन चाची जब रंगीन साड़ी में सजकर, लाल स्याही की सिंदूर लगाकर, आँखों में काजल डालकर, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घुघरू वाले बिछुए पहनकर श्रृंगार करती, तो लेखिका महादेवी वर्मा को वह गुड़िया की तरह बहुत अच्छी लगती है।

प्रश्न 4.बिन्दा अपनी नयी अम्मा से किस प्रकार डरती थी? Sig:........................
उत्तरःबिन्दा नयी अम्मा से बहुत डरती थी। यहाँ तक कि थोड़ी बहुत ही आवाज आती अथवा आहट होती, तो वह काँपने लगती थी कि न जाने अब क्या होगा? नयी अम्मा की आवाज सुनते ही बिन्दा थर-थर काँपने लग जाती थी।

Chapter 5 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'

प्रश्न 1.अंबेडकर जी के बाल्य जीवन का परिचय दीजिए।Sig:........................
उत्तरःबचपन में डॉ. अम्बेडकर को भीमराव नाम रखा गया। घरवाले प्यार से 'भीवा' कहकर पुकारते थे। बचपन में उन्हें छुआछूत के भेदभाव को सहन करना पड़ा। स्कूल में प्रवेश भी मुश्किल से मिला। उन्हें कक्षा के भीतर अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठने की अनुमति नहीं थी। बैठने के लिए घर से बिछौना ले जाना पड़ता था। प्यास बुझाने के लिए स्कूल में पीने का पानी तक उन्हें नहीं मिल पाता था।

प्रश्न 2.अंबेडकर जी को शिक्षा प्राप्त करते समय किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? Sig:.................

उत्तरःडॉ. अम्बेडकर को शिक्षा प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने बैठने का टाट अपने साथ घर से ही ले जाना पड़ता था। पाठशाला में उन्हें कक्षा के भीतर अन्य विद्यार्थियों के साथ बैठने की मनाही थी। वे अपनी कक्षा के बाहर सब छात्रों के जूतों के बीच दरवाजे के बाहर बैठते थे। भीमराव को पानी के घड़े को भी छूने की इजाजत नहीं थी। कारण यह था कि अछूतों के छू लेने से घड़े का जल भ्रष्ट हो जाता। चाहे कितनी भी प्यास लगे, बेशक प्यास के मारे प्राण ही क्यों न निकल जाएँ, मगर प्यासा अछूत घड़े से पानी लेकर नहीं पी सकता था। किसी चपरासी की कृपा हो गई, तो पानी मिल जाता, नहीं तो घर आकर ही पानी पीना पड़ता था। एक बार स्कूल में गुरु के प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए वे ब्लैक-बोर्ड की ओर चले, त्यों ही कक्षा के सवर्ण छात्रों ने विरोध किया की ब्लैक-बोर्ड के नीचे रखा भोजन इसके छूने से भ्रष्ट हो जाएगा।

Chapter 6 दिल का दौरा और एनजाइना

प्रश्न 1.दिल का दौरा और एनजाइना किसे कहते हैं? Sig:........................

उत्तरःदिल का दौरा और एनजाइना हृदय रोग के दो प्रकार है। एनजाइना में हृदय तक पहुंचने वाली ऊर्जा नहीं पहुंच पाती, जो कोरोनरी धमनी की शाखाओं में सिकुड़न की वजह से होता है। जब हृदय रक्त को पंप करने में असमर्थ हो जाता है, तो उसे ‘एनजाइना’ कहते हैं। इसी के भयंकर स्वरूप को ‘दिल का दौरा’ कहते हैं। किसी एक धमनी में रुकावट आ जाने में दिल का दौरा पड़ता है।

प्रश्न 2.दिल का दौरा और एनजाइना किन कारणों से होता है? Sig:........................

उत्तरःउच्च रक्तचाप, मोटापा, तनाव, धूम्रपान, वसा के खाद्य पदार्थों का सेवन, मदिरापन, कोलेस्ट्रोल का बढ़ना, परिवार में अन्य किसी को यह रोग होना, व्यायाम न करना, परिश्रम न करना ये सब दिल का दौरा और एनजाइना के मुख्य कारण माने गए हैं। उग्रता का स्वभाव, अकेलापन, शहरी जिन्दगी का तनाव, आधुनिकीकरण से जीवन के तौर तरीकों में बदलाव भी कारण हो सकते हैं।

प्रश्न 5.हार्ट अटैक के रोगी का इलाज़ किस तरह किया जाता है? Sig:........................

उत्तरःरोगी को तुरन्त अस्पताल ले जाना जरूरी है। यदि धमनी का काम रुक गया हो, तो उसे ऐसी दवा दिलवानी चाहिए जिससे धमनी खुल जाये। स्ट्रेप्टोकाइनेज या यूरोकाइनेज जैसी दवा इंजेक्ट भी किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर दवा और पेसमेकर की जरूरत भी हो सकती है।

प्रश्न 6.‘बैलून एंजियोप्लास्टी’ तकनीक क्या है? Sig:........................

उत्तरःजब एक-दो धमनियाँ अवरुद्ध हो जाती है, तो उन्हें ठीक करने के लिए बैलून एंजियोप्लास्टी’ की जाती है। एक पतली ट्यूब के द्वारा गुब्बारे को धमनी के सिकुड़े हुए भाग तक पहुँचाकर फुलाया जाता है। उससे वसा की परत दबकर धमनी खुल जाती है। फिर रक्त बहाव सामान्य होकर, रोग मिट जाता है।

Chapter 7 मेरी बद्रीनाथ यात्रा

प्रश्न 1.हिमालय की विशेषता का वर्णन कीजिए।Sig:........................

उत्तरः हिमालय को कालिदास ने ‘नगाधिराज’ कहा है। यह विश्व का श्रेष्ठ एवं ऊँचा पर्वत है। बर्फीला नजारा देखते ही बनता है। इसके अंचल से कितनी ही नदियाँ अलख जगाते हुए, कलकल निनाद करते हुए बहती

हैं। कस्तूरी मृग अपनी नाभि में सुगन्ध लिए यहीं घूमते हैं। देवदारू, चीनार आदि वृक्षों की छटा देखते ही बनती है। रंग-बिरंगे पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ता है। इस प्रकार हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करके किसी को कवि या किसी को दार्शनिक भी बना देता है।

प्रश्न 5.बद्रीनारायण मंदिर की विशेषता पर प्रकाश डालिए।Sig:........................
उत्तरः अलकनंदा के दोनों ओर के पहाड़ नर-नारायण कहलाते हैं। कहा जाता है कि किसी जमाने में बद्रीनाथ में बेरी का वन था। बदरी को बेर कहा जाता है। यह मंदिर 10,480 फुट की ऊँचाई पर बना हुआ है। मंदिर की स्थापना आदि शंकराचार्य जी ने किया था। यह मंदिर नारायण मंदिर की गोद में बसा है। नीलकंठ के हिम-शिखर की छाया भी है। देश का अंतिम गाँव भी माना जाता है। यह मंदिर आकर्षण है- सरल भक्ति का, प्रकृति के वैभव का। बद्रीनारायण का मंदिर एक तीरथ धाम हैं।

Chapter 8 नालायक

प्रश्न 2.जिला परिषद के बाहर का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।Sig:........................
उत्तरः जिला परिषद में प्राइमरी स्कूलों के लिए अनट्रेण्ड अध्यापकों की नियुक्ति होनी थी। इसलिए जिला परिषद् के बाहर अपार जनसागर उमड़कर जमा हो गया था। प्रवेश-द्वार से लेकर बाहर आँगन, लान, मैदान, चौक, सड़क और लगभग दो-तीन फर्लांग तक ठसमठस आदमी भरे हैं, किसी को पता नहीं कि क्यों खड़े हैं, बस खड़े हैं। जो पहले आये वे पहले से फाटक की ओर खड़े होते गए। जो आगे थे उनका निकलना कठिन हो रहा था। भीतर परिषद कार्यालय था, जो बन्द था।

प्रश्न 3.लाउड स्पीकर से क्या घोषणा की जा रही थी? Sig:........................
उत्तरः चेयरमैन साहब के बंगले के बाहर भीड़ जमा होने के कारण, पुलिस की गाड़ियाँ भीड़ को नियंत्रित करने पहुंची। लाउड़ स्पीकर से घोषणा की जाने लगी कि "सज्जनों, ज्ञात हुआ है कि आप लोग थर्ड डिवीजनरों के सिफारिशी हैं। आप लोगों को बहुत समझाया गया कि सिफारिश से काम नहीं चलेगा, परन्तु आप लोग मानते ही नहीं हैं। अब स्कूल-मास्टर के लिए थर्ड डिवीजनर्स नहीं लिए जायेंगे। यदि आप लोग बिना उस सिफारिशी कागज को दिये टलनेवाले नहीं हैं तो दे दीजिये। पचास व्यक्ति खांची लेकर तैनात किये जाते हैं। इन्हीं खांचियों में डाल दें।"

Chapter 9 राष्ट्र का स्वरूप

प्रश्न 3.राष्ट्र निर्माण में जन का क्या योगदान होता है? Sig:....................
उत्तरःजन के हृदय में राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से राष्ट्र-निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। जो जन मातृभूमि के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहता है, उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न 4.लेखक ने संस्कृति को जीवन-विटप का पुष्प क्यों कहा है? Sig:....................
उत्तरःराष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जायँ, तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए। जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौंदर्य और सौरभ में ही राष्ट्रीय जन के जीवन का सौन्दर्य और यश अन्तर्निहित है। जीवन के विकास की युक्ति ही संस्कृति के रूप में प्रकट होती है।

Chapter 10 रिहर्सल

प्रश्न 4.वैद्य और प्रोफेसर के आमने-सामने आने के बाद का दृश्य प्रस्तुत कीजिए।Sig:....................
उत्तरः वैद्य परमानंद और प्रोफेसर पांडुरंग आमने-सामने आने के बाद एक-दूसरे पर व्यंग्य करते हैं। प्रोफेसर परमानंद को 'यमराज का सगा भाई' कहते हैं तो परमानंद प्रोफेसर को 'वात-पित्त-कफ' कहता है। प्रत्युत्तर व्यंग्य करते हुए वह कहता है कि तुम यदि किसी की नब्ज भी पकड़ लेते हो, तो उसकी जान चली जाती है। इस प्रकार आपस में हँसी-मजाक भी होती है और ताने भी दिए जाते हैं।

प्रश्न 5.रमेश ने बेहोशी का अभिनय क्यों किया? Sig:....................
उत्तरः रमेश अपने घर में बेहोश हो जाता है। उसके चिंतित पिता वैद्य परमानंद और प्रोफेसर पांडुरंग को बुला लाते है। परमानंद के अनुसार लड़के को सन्निपात है तथा प्रोफेसर पांडुरंग के अनुसार उसे स्नायुरोग है। यह सब सुनकर लड़का घबडा जाता है और चादर फेंककर उठते हुए कहता है कि वह पूरी तरह होश में है। न उसे भ्रम है और न उसे कुछ महसूस करने की जरूरत है। स्कूल में होने वाले नाटक जिसमें उसे दो घंटे बेहोशी का अभिनय करना है, वह उसीकी रिहर्सल कर रहा था।

प्रश्न 6.वैद्य परमानंद का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तरः वैद्य परमानंद का आयु लगभग 50 वर्ष है। आँखों पर चश्मा, लम्बी दाढ़ी, झुर्सदार मूंछे हैं। परमानंद स्वयं समझते हैं कि उनके रोगी उनके पास दुबारा नहीं लौटते। हर प्रकार के रोग के लिए उनके पास एक ही दवा है और वह है 'अमर भास्कर चूर्ण'। उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि उनकी दवा से कोई रोगी ठीक होगा या नहीं, उन्हें तो बस सभी को खिलाना है 'अमर भास्कर चूर्ण'। यहाँ तक कि गाय को भी वही चूर्ण खिलाने को कहते हैं।

Chapter 11 कबीरदास के दोहे

प्रश्न 1.गुरु की महिमा के बारे में कबीर क्या कहते हैं? Sig:....................
उत्तर: गुरु की महिमा के बारे में कबीर कहते हैं कि गुरु के प्रताप से सब दुःख दर्द मिट जाते हैं। वह बड़ा भाग्यशाली है कि उसे रामानंद जैसे गुरु मिले। गुरु भगवान से बढ़कर हैं क्योंकि उन तक पहुंचने का मार्ग गुरु ही बताते हैं। अतः कबीर कहते हैं कि अगर गुरु और गोविन्द दोनों उसके सामने हो तो वह गोविन्द (भगवान) से पहले गुरु को ही प्रणाम करेंगे।

प्रश्न 3.दया और धर्म के महत्व का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: दया और धर्म ये दोनों अच्छे गुण या आचरण हैं। जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म भी होता है और जहाँ लोभ (लालच) होता है, वहाँ पाप होता है। इसी प्रकार जहाँ क्रोध होता है, वहाँ काल या मृत्यु होती है और जहाँ क्षमा होती है, वहाँ ईश्वर होते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए दया और क्षमा को अपनाना चाहिए, लोभ व क्रोध को त्यागना चाहिए।

Chapter 12.तुलसीदास के दोहे

प्रश्न 2.तुलसीदास के अनुसार संत के स्वभाव का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: तुलसीदास जी के अनुसार संत का स्वभाव फलदार आम के वृक्ष की तरह होना चाहिए। आम का वृक्ष दूसरों की भलाई के लिए ही फलता और फूलता है। मनुष्य आम को पाने के लिए पेड़ को पत्थर मारता है, बदले में पेड़ मनुष्य को फल (आम) देता है। उसी प्रकार संतो को चाहिए कि वे लोक निंदा कि परवाह न कर समाज को सुधारने के कार्य में लगे रहें।

प्रश्न 3.तुलसीदास ने मधुर वचन के महत्व का कैसे वर्णन किया है? Sig:....................
उत्तर: मधुर वचन के बारे में तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठा बोलने से हमारे मन में रहनेवाला अहंकार मिट जाता है। ठीक वैसे ही, जैसे कि उफनते हुए दूध पर थोड़ा-सा ही शीतल (ठंडा) जल छिड़कने से उफनता हुआ दूध नीचे बैठ जाता है।

Chapter 13 मीराबाई के पद

प्रश्न 1.मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर: मीराबाई कृष्ण की अनन्य भक्त है। वह अपना सब कुछ कृष्ण के लिए समर्पित करती है। वह कहती है, मेरे तो केवल गिरधर गोपाल हैं, दूसरा कोई नहीं है। इसी कारण मैं ने उसे पाने के लिए भाई-बन्धु, समस्त परिवार को छोड़ दिया है। साधु-संतों की संगती में बैठकर लोक लाज़ खोया है। अपने आँसुओं से सींच-सींच कर अपने हृदय में कृष्ण के प्रेम की बेल बो लिया है। जब राणा ने मुझे कृष्ण भक्ति से विमुख करने के लिए विष का प्याला भेजा तो प्रसन्नता से पी लिया। मेरी लगन गिरधर कृष्ण से लग गई है, यह छूट नहीं सकती।

प्रश्न 2.मीराबाई ने जीवन के सार तत्व को कैसे अपना लिया? Sig:....................
उत्तर: मीराबाई ने अपने इष्ट गिरधर गोपाल की सच्चे मन से भक्ति की है। उसने जीवन के सारतत्व को अपना लिया है। अर्थात् तीर्थाटन, व्रत-उपवास अथवा कासी में करवट लेने जैसे पाखंड (दिखावटी) भक्ति न करके, काया-वाचा-मनसा वाली सच्ची भक्ति की है।

Chapter 14 शरण वचनामृत

प्रश्न 1.अल्लमप्रभु देव ने माया के सम्बन्ध में क्या कहा है? Sig:....................
उत्तर: अल्लमप्रभु देव ने माया के बारे में कहा है कि – लोग कनक को माया मानते भी हैं और नहीं भी। कामिनी या स्त्री को माया मानते भी हैं और नहीं भी। माटी को माया मानते भी हैं और नहीं भी। अतः मन के आगे जो चाह है, वही माया है।

Chapter 15 रसखान के सवैये

प्रश्न 2.गोपी क्या-क्या स्वांग भरती है? Sig:....................
उत्तर: गोपी अपने प्रियतम श्रीकृष्ण को पाने के लिए मोर-पंख का मुकुट पहनकर, गुंज की माला (रत्नों की माला) गले में धारण कर, पितम्बर ओढ़कर हाथ में लकुटिया लेना चाहती है। वह कृष्ण के सभी स्वाँग भरकर गोधन और ग्वालिनों के संग फिरना चाहती है परन्तु मुरलीधर की मुरली अपने अधरों पर नहीं रखना चाहती है।

Chapter 16 कुटिया में राजभवन

प्रश्न 2.सीता जी प्रकृति-सौंदर्य के बारे में क्या कहती हैं? Sig:....................
उत्तर: सीता जी प्रकृति-सौंदर्य के बारे में कहती हैं कि – यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे प्रकृति में रहने का, विचरण करने का अवसर मिला है। यहाँ की हरियाली, शुद्ध हवा, पशु-पक्षियों का कलरव, लता-फूल आदि मन को प्रसन्न-चित्त करने वाली प्रकृति की शोभा है। यह प्रकृति का मायालोक किसी राजभवन से कम नहीं।

प्रश्न 3.सीता जी कुटिया में कैसे सुखी हैं? Sig:....................
उत्तर: 'सीता जी को कुटिया ही राजभवन की तरह लग रही है। क्योंकि उनके प्राणेश उनके साथ हैं, देवर

लक्ष्मण भी सचिव की तरह प्रहरी बने हुए. है। इसके अलावा प्राकृतिक सौन्दर्य ने उनको मोह लिया है। सीताजी स्वावलम्बी बनी हुई हैं.। प्रकृति के कण-कण को सीता जी ने राजभवन के सुख-वैभव के रूप में अपना लिया है।

Chapter 17 तोड़ती पत्थर

प्रश्न 1.इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर: इलाहाबाद के पथ पर वह महिला पत्थर तोड़ती थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं था, जहाँ वह बैठ सके। उसका तन साँवला था, पर वह भरे यौवन में थी। आँखें नीचे थी और काम में तत्पर थी। बड़ा हथौड़ा हाथ में लिए प्रहार करते हुए पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न 3.'तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। Sig:....................
उत्तर: 'तोड़ती पत्थर' कविता में निरालाजी ने इलाहाबाद की एक सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री का चित्रण किया है। साथ ही एक मजदूरिन जिस परिस्थिति में काम कर रही थी, उसका यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है। स्त्री रुई की तरह तपती धरती और बरसती लू की दुपहरी में पत्थर तोड़ रही है। आसपास कोई छायादार पेड नहीं है। गर्म हवा और धूल उड़ रही है। यहाँ कवि ने उस सांवली सलोनी निर्धन मजदूरिन के कठिन परिश्रम का महत्व प्रकट किया है।

Chapter 18 उल्लास

प्रश्न 2.कवयित्री ने जीवन के सम्बन्ध में क्या कहा है? Sig:....................
उत्तर: कवयित्री ने जीवन के सम्बन्ध में कहा है कि कभी निराश नहीं होना चाहिए, न निराशा में रोना चाहिए। यह जग या संसार झूठा है, यह विरक्ति है – ऐसे भाव भी मन में नहीं लाने चाहिए। शत्रु की पहचान के लिए न घृणा करें और न कभी अशांति का वातावरण लाएँ।

Chapter 19 तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए

प्रश्न 2.बच्चन जी पाठकों को क्या-क्या भेंट देते हैं? Sig:....................
उत्तर:बच्चन जी ने गूंज-गूंजकर मिटनेवाले गीत बनाये। वे चाहते है कि पाठक उनके गीत को गाकर उसे अमर कर दे। पाठकों के प्रति अपनी कृतज्ञता वे कुछ ऐसा भेंट देकर करना चाहते है जिसे देकर उन्हें कोई हानि न हो और बदले में पाठकों को सब कुछ मिल जाए। इस दान को स्वीकार करके पाठक उनके दान को अमर कर जायेंगे।

Chapter 20 प्रतिभा का मूल बिन्दु

प्रश्न 3.'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता का भाव संक्षेप में लिखिए।Sig:....................
उत्तर:प्रस्तुत 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता में कवि द्वारा सैद्धांतिक समीक्षा की गई है, जिसमें आत्यंतिक कल्पनाओं का, अनुमान का प्रयोग न करके जीवन के निरन्तर संघर्ष-पथ को कवि शानाता है। प्रतिभा सतत प्रयास तथा परिश्रम की जननी मानी जाती है।

Chapter 21 तुम आओ मन के मुग्धमीत

प्रश्न 2.कवि अपने मित्र को किन-किन शब्दों में पुकारता है? Sig:....................
उत्तर: कवि डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति जी अपने मित्र को मुग्धमीत, मधुरमीत, जन्मों के जीवन-मृत्यु मीत, हारों की मधुर जीत, साकार-निराकार व सगुण-निर्गुण के मीत, देवताओं के आनंद गीत, आशा और शोभा के मीत आदि शब्दों से पुकारते हैं।

Chapter 22 मत घबराना

प्रश्न 4.'मत घबराना' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।Sig:....................
उत्तर:'मत घबराना' कविता में कवि युवकों को सन्देश देते हैं कि जीवन के पथ पर सदा आगे बढ़ते रहना चाहिए। साथ कोई हो या न हो प्रकृति माता सदा हमारे साथ रहेगी। प्रकृति से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। यही इस कविता का सन्देश है।

प्रश्न 1.'मत घबराना' कविता में प्रकृति को प्रेरणास्त्रोत क्यों कहा गया है? Sig:....................
उत्तर: हमारे साथ कोई रहे या न रहे, परन्तु ये चन्दा और तारे हमेशा साथ रहते हैं। ये हमारा दर्द बाँट लेंगे, अपनी बात कहेंगे। ये नदियाँ और झरने हरदम हँसते-गाते आगे बढ़ने को कहेंगे। इस प्रकार कवि प्रकृति को प्रेरणा का स्रोत मानता है। प्रकृति हमारा साथ देती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है।

Chapter 23 अभिनंदनीय नारी

प्रश्न 2.नारी के बचपन का चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर: नारी बचपन में चिड़िया की तरह चहकती, फुदकती हुई इठलाती है जिसे देख माता-पिता के मन में आनंद की हिलोरें उठती हैं। जब वह ठुमक ठुमक कर चलती है, तो उसकी पैरों की पायलियाँ मधुर संगीत सुनाती है। नारी बचपन में आँगन की तुलसी की तरह घर की शोभा बढ़ाती है और सबको प्यारी लगती है।

Chapter 24 मधुआ

प्रश्न 2.शराबी को बच्चा कहाँ मिला? वह उसे अपने साथ क्यों लाया? Sig:....................
उत्तर: शराबी से बात करते करते ठाकुर साहब जब थक गए तो उन्होंने एक रुपया देकर शराबी को जाने का आदेश दिया। साथ ही लल्लू जम्मादार को भेज देने के लिए भी कहा। जमादार लल्लू को खोजते हुए शराबी फाटक के बगलवाली कोठरी के पास पहुंचा, तो एक बच्चा मारखाकर रोते हुए मिला। लल्लू उसे बुरी तरह डाँट रहा था। शराबी उस बच्चे को साथ ले आया और रोने का कारण पूछा। लड़के ने रोते-रोते ही कहा – मैंने आज दिन भर से कुछ नहीं खाया है। यह सुनकर शराबी को बालक पर दया आ गई। उसे वह अपनी गंदी कोठरी में रखा पराठे का टुकड़ा खिलाने के लिए साथ ले आया।

प्रश्न 3.शराबी एक रुपए से क्या खरीदना चाहता था और बाद में क्या खरीद लिया? Sig:................
उत्तर: शराबी मधुआ को अपने घर में शरण देता है। उसके हाथ में पराठे का एक टुकड़ा देकर बालक का पेट भरने के लिए कुछ खरीदने दुकान पहुंचता है। वह एक रुपए से बारह आने का एक देशी अद्धा और दो आने की चाय, दो आने की पकौड़ी, आलू मटर या फिर चारों आने का मांस खरीदना चाहता था। परन्तु मधुआ का ख्याल आते ही वह अद्धा लेना भूल गया और मिठाई पूरी खरीद लाया।

Chapter 25 श्मशान

प्रश्न 1.श्मशान ने आह भरकर पहाड़ी से क्या कहा? Sig:....................
उत्तर: श्मशान ने आह भरकर पहलू में खड़ी पहाड़ी से कहा – "मैं इन्सान को जितना प्यार करता हूँ, उतनी ही घृणा उससे पाता हूँ। सभी मनुष्य यही चाहते हैं कि कभी उन्हें मेरा मुँह न देखना पड़े। पर वास्तव में मैं इतना बुरा नहीं हूँ। संसार में जब मनुष्य को एक दिन के लिए भी स्थान नहीं रह जाता, तब मैं उसे अपनी गोद में स्थान देता हूँ। अमीर-गरीब, वृद्ध-बालक सबको मैं समान दृष्टि से देखता हूँ। पर मेरे पास प्रेम नहीं, मुहब्बत का चिराग नहीं। नहीं जानता खुदा ने मेरे साथ ऐसी बेईमानी का सलूक क्यों किया?"

प्रश्न 3.पहली पत्नी की मृत्यु पर युवक किस प्रकार विलाप करने लगा? Sig:....................
उत्तर: युवक पहली पत्नी की राख बटोरते बटोरते विलाप करने लगा – "तुम मुझे छोड़कर कहाँ चली गई सुकेशी? दो वर्षों में ही तुम मुझे अकेला छोड़कर चली गई। अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता। तुम मुझे अपने पास बुला लो। तुम्हारे बिना यह जीवन व्यर्थ है, नीरस है। तुम मेरी प्रेरणा थीं। अब मैं जीवित रहकर करूँगा ही क्या?" इसी प्रकार वह रोता रहा, सिर फोड़ता रहा।

Chapter 26 खून का रिश्ता

प्रश्न 1.वीरजी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।Sig:....................
उत्तर: वीरजी का परिवार संपन्न था। वीरजी पढ़े-लिखे थे और शहर में रहते थे। परिवार में उनके माता-पिता थे, एक शरारती मिजाज़वाली छोटी बहन थी जिसका नाम मनोरमा था। घर पर मंगलसेन नाम के रिश्ते के चाचा रहते थे जो स्वयं को इनके परिवार का अभिन्न अंग मानते थे। घर का पुराना नौकर संतु था जो मंगलसेन को ज्यादा हिलमिल गया था। वीरजी अविवाहित थे किन्तु प्रभा नाम की पढ़ी-लिखि सुन्दर कन्या से उनकी सगाई होनेवाली थी। वीरजी बहुत भावुक थे, वे प्रभा से प्रेम करते थे और उससे सरल विवाह करना चाहते थे।

प्रश्न 2.मंगलसेन को अपनी हैसियत पर क्यों नाज़ था? Sig:....................
उत्तर: मंगलसेन को अपनी हैसियत पर बड़ा नाज़ था। किसी ज़माने में फौज में रह चुका था, इस कारण अब भी सिर पर खाकी पगड़ी पहनता था। खाकी रंग सरकारी रंग है, पटवारी से लेकर बड़े-बड़े इन्स्पेक्टर तक सभी खाकी पगड़ी पहनते हैं। इस पर ऊँचा खानदान और शहर के धनीमानी भाई के घर में रहना, ऐंठता नहीं तो क्या करता?

Chapter 27 शीत लहर

प्रश्न 2.दिल्ली में शीत लहर के प्रकोप का वर्णन कीजिए।Sig:....................
उत्तर:जनवरी के आस-पास दिल्ली में शीत-लहर का प्रकोप प्रायः रहता है। दिल्ली में कड़ाके की ठंड थी। शरीर के भीतर से पार हो जानेवाली तेज हवा चल रही थी। कई दिन से सूरज नहीं निकला था। दिन में तापमान पन्द्रह डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं जा रहा था। रात में पारा चार डिग्री सेल्सियस तक नीचे जा रहा था। कई साल के बाद दिल्ली में इतनी तेज ठंड पड़ी थी। समूचा उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में था। दिल्ली में दर्जनों लोगों की मौत हो चुकी थी। जगह-जगह अलाव जलाने की व्यवस्था की गई, गरीब लोगों को कम्बल बाँटे गए और स्कूलों को छुट्टी दी गई।

प्रश्न 5.चंद्रप्रकाश का चरित्र-चित्रण कीजिए।Sig:....................
उत्तर:चन्द्रप्रकाश दिल्ली में निवास करनेवाला केन्द्र सरकार का अधिकारी था। आलीशान सरकारी आवास मिला हुआ था। यद्यपि अपना एक फ्लैट भी खरीदा था, परन्तु दूर होने तथा सुविधाविहीन होने के कारण वहाँ नहीं गया। चन्द्रप्रकाश पत्नी पूनम को बहुत चाहता था। बेघर लोगों को रहने के लिए अपना फ्लैट देना चाहता था, परन्तु पत्नी के समझाने और सोसाइटी के सदस्यों के विरोध के कारण नहीं दे पाया। स्वभाव से दयालु था, परन्तु मजबूरी थी

Chapter 28 सिलिया

प्रश्न 1.हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में छपे विज्ञापन के बारे में लिखिए।Sig:....................
उत्तर: सन् 1970 की बात है। सिलिया ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। लोग उसकी शादी के विषय में चर्चा करने लगे थे। उसी साल हिन्दी अखबार 'नई दुनिया' में एक विज्ञापन छपा – 'शूद्रवर्ण की वधू चाहिए।' मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के जाने-माने युवा नेता सेठीजी, एक अछूत कन्या के साथ विवाह करके, समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। उनकी केवल एक ही शर्त थी कि लड़की कम-से-कम मैट्रिक हो।

प्रश्न 3.सिलिया के स्वभाव का परिचय दीजिए।Sig:....................

उत्तर: सिलिया साँवली-सलौनी, मासूम-भोली, सरल व गंभीर स्वभाव वाली लड़की थी। स्वस्थ देह के कारण वह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही लगती थी। सिलिया की सहेलियाँ उसे छेड़ती, हँसती। मगर सिलिया इन बातों पर कोई ध्यान नहीं देती। सिलिया गंभीर और सीधे सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लड़की है। अपने जाति पर होनेवाले भेदभाव पर क्रोध था। विरोध था। भेदभाव को जड़ से निकालकर फेंकना चाहती है। अपनी माँ से हमेशा कहती थी कि – "मैं शादी नहीं करूँगी, खूब पढ़ूंगी और अच्छा नाम कमाऊँगी।" वह किसी के सामने सिर झुकाना नहीं चाहती है।

Chapter 29 दोपहर का भोजन

प्रश्न 1.सिद्धेश्वरी के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।Sig:....................

उत्तर: सिद्धेश्वरी का परिवार निर्धन था। उनके तीन बेटे थे। बड़ा बेटा रामचंद्र इक्कीस साल का था। दुबला, पतला, गोरे रंग का लड़का था जिसकी बड़ी बड़ी आँखें थी। वह किसी अखबार में प्रूफ-रीडरी का काम करता था, स्वभाव से गंभीर था। मंझला लड़का मोहन अट्ठारह वर्ष का था, हाईस्कूल का प्राइवेट इम्तेहान देने की तैय्यारी में लगा था, पढ़ाई में उसकी रुचि नहीं थी। छोटा बेटा प्रमोद छह वर्ष का था जो बहुत कमजोर और बीमार रहता था। उसके पति मुंशि चंद्रिका प्रसाद 45 साल की उम्र में, पारिवारिक समस्याओं के कारण 50 या 55 साल के लगते थे। डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छंटनी हो गई थी।

प्रश्न 2.बीमार प्रमोद की हालत कैसी थी? Sig:....................

उत्तर: छोटा बेटा प्रमोद बीमार पड़ा है। उम्र छः वर्ष है। अध-टूटे खटोले पर नंग-धडंग पड़ा हुआ है। इतना क्षीण हो गया है कि उसके शरीर की हड्डियाँ स्पष्ट दिखाई देने लगी हैं। उसके हाथपैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे हुए बेजान हो गये हैं। पेट हंडिया की तरह फूला हुआ है। मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। माँ सिद्धेश्वरी ने उसके चेहरे पर एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया। इस दयनीय स्थिति में प्रमोद बीमार था।

व्याकरण भाग

Chapter 1 बड़े घर की बेटी

वाक्य शुद्ध कीजिए। **Sig:....................**

प्रश्न 1.उनकी पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य सम्पन्न थे।
उत्तर:उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य संपन्न थे।

प्रश्न 2.स्वयं उनका पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध थी।
उत्तर:स्वयं उनकी पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था।

प्रश्न 3.आनंदी अपने नये घर में आया।
उत्तर:आनंदी अपने नये घर में आयी।

प्रश्न 4.मुझे जाना दो।
उत्तर:मुझे जाने दो।

VI. कोष्टक में दिये गये उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए। Sig:....................
(ऐसी, शनिवार, संतान, गौरीपुर, हाथी)

प्रश्न 1.इस दरवाजे पर .... झूमता था।
उत्तर:हाथी

प्रश्न 2............. में रामलीला के वही जन्मदाता थे।
उत्तर:गौरीपुर

प्रश्न 3.सुंदर .... को कदाचित् उसके माता-पिता भी अधिक चाहते थे।
उत्तर:संतान

प्रश्न 4.श्रीकंठ सिंह .... को घर आया करते थे।
उत्तर: शनिवार

प्रश्न 5.बड़े घर की बेटियाँ .... ही होती हैं।
उत्तर:ऐसी।

VII. अन्य लिंग रूप लिखिए। Sig:....................

प्रश्न 1. ठाकुर, पति, बेटा, स्त्री, बुद्धिमान, हाथी, भाई।

उत्तरः ठाकुर – ठकुराइन	पति – पत्नी	बेटा – बेटी
स्त्री – पुरुष	बुद्धिमान – बुद्धिमती	हाथी – हथिनी

M.K.Z

भाई – बहन

VIII. अन्य वचन रूप लिखिए। Sig:....................

प्रश्न 1. घर, बेटी, भैंस, स्त्री, आँखें, थाली।

उत्तरः घर – घर बेटी – बेटियाँ भैंस – भैंसें स्त्री – स्त्रियाँ
आँखें – आँख थाली – थालियाँ

IX . मुहावरें। Sig:....................

1.हाथ समेट लेना = खर्च कम करना
2.हाथ साफ कर लेना = मार लेना, लूटना, मौके का फायदा उठा लेना
3.बाट देखना = इंतजार करना
4.मुँह झुलसना = जला लेना
5.आड़े हाथ लेना = डाँट-डपट करना।

Chapter 2 युवाओं से

V. विलोम शब्द लिखिए: Sig:........................

प्रश्न 1.आशा, साधारण, स्वदेश, स्वार्थी, कीर्ति, शिक्षित, पवित्र, जन्म, निर्धन, मजबूत, धर्म, नास्तिक।

उत्तरः आशा × निराशा
साधारण × असाधारण
स्वदेश × विदेश
स्वार्थी × निस्वार्थी
कीर्ति × अपकीर्ति
शिक्षित × अशिक्षित
पवित्र × अपवित्र
जन्म × मरण (मृत्यु)
निर्धन × धनवान
मजबूत × कमजोर
धर्म × अधर्म
नास्तिक × आस्तिक

VI. समानार्थक शब्द लिखिए: Sig:........................

प्रश्न 1.नवीन, पुरोहित, जंगल, पहाड़, ईश्वर, साहस, तरुण, अधिक।

उत्तरः नवीन – नया पुरोहित – पुजारी जंगल – वन
पहाड़ – पर्वत ईश्वर – भगवान साहस – हिम्मत, बहादुरी
तरुण – युवक अधिक – ज्यादा

VII. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

हमेशा बढते चलो। मरते दम तक गरीबों और पददलितों के लिए सहानुभूति – यही हमारा आदर्श वाक्य है। वीर युवकों! बढ़े चलो! ईश्वर के प्रति आस्था रखो। किसी चालबाज़ी की आवश्यकता नहीं, उससे कुछ नहीं होता। दुखियों का दर्द समझो और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो – वह अवश्य मिलेगी। युवको! मैं गरीबों, मूों और उत्पीडितों के लिए इस सहानुभूति और प्राणपण प्रयत्न को थाती के तौर पर तुम्हें अर्पण करता हूँ। प्रतिज्ञा करो कि अपना सारा जीवन इन तीस करोड़ लोगों के उद्धार-कार्य में लगा दोगे, जो दिनोंदिन अवनति के गर्त में गिरते जा रहे हैं। यदि तुम सचमुच मेरी संतान हो, तो तुम किसी वस्तु से न डरोगे, न किसी बात पर रुकोगे। तुम सिंहतुल्य होंगे। हमें भारत को और पूरे संसार को जगाना है।

प्रश्न 1.हमारा आदर्श वाक्य क्या है? Sig:.........................
उत्तरःमरते दम तक गरीबों और पददलितों के लिए सहानुभूति – यही हमारा आदर्श वाक्य है।

प्रश्न 2.किसके प्रति आस्था रखनी चाहिए? Sig:.........................
उत्तरःईश्वर के प्रति आस्था रखनी चाहिए।

प्रश्न 3.किसकी आवश्यकता नहीं है? Sig:.........................
उत्तरःकिसी चालबाजी की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 4.तुम किसके समान होगे? Sig:.........................
उत्तरःतुम सिंह के समान होगे।

प्रश्न 5.हमें किसे जगाना है? Sig:.........................
उत्तरःहमें भारत को और पूरे संसार को जगाना है।

Chapter 3 निन्दा रस

V. 'वाक्य शुद्ध कीजिए:

प्रश्न 1.ऐसी मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंधकार में दे देते हैं। Sig:.........................
उत्तरःऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंधकार में दे देते हैं।

प्रश्न 2.पर वह मेरी दोस्त अभिनय में पूरा है। Sig:.........................
उत्तरःपर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है।

प्रश्न 3.निन्दा का ऐसी ही महिमा है। Sig:.........................
उत्तरःनिन्दा की ऐसी ही महिमा है।

प्रश्न 4.आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरी नहीं कहता। Sig:.........................
उत्तरःआपके बारे में मुझसे कोई भी बुरा नहीं कहता

M.K.Z

प्रश्न 5.सूरदास ने इसलिए 'निन्दा सबद रसाल' कही है। Sig:........................
उत्तरःसूरदास ने इसलिए 'निन्दा सबद रसाल' कहा है।

VI. अन्य लिंग रूप लिखिए: Sig:........................

प्रश्न 1.पुतला, मजदूर, बेटा, पति, स्त्री।

उत्तरःपुतला – पुतली
मजदूर – मजदूरनी
बेटा – बेटी
पति – पत्नी
स्त्री – पुरुष

VII. अन्य वचन रूप लिखिए: Sig:........................

प्रश्न 1.भुजा, कथा, दुश्मन, घंटा, कमरा, कविता, लकीर।

उत्तरःभुजा – भुजाएँ
कथा – कथाएँ
दुश्मन – दुश्मन
घंटा – घंटे
कमरा – कमरे
कविता – कविताएँ
लकीर – लकीरें

VIII. मुहावरेः Sig:........................

1.गले लगाना = आलिंगन करना
2.बेईमानी करना = धोखा देना
3.कल्लोल करना = शोर मचाना।

Chapter 4 बिन्दा

V. कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए: Sig:........................

(को, की, पर, से)

प्रश्न 1.बिन्दा .... समस्या का समाधान न हो सका।
उत्तरःकी

प्रश्न 2.बिन्दा .... मेरा उपाय कुछ ऊंचा नहीं।
उत्तरःको

प्रश्न 3.उसके घर जाने .... माँ ने मुझे रोक दिया था।
उत्तरःसे

प्रश्न 4.चूल्हे .... चढ़ाया दूध उफना जा रहा था।

उत्तरःपर

प्रश्न 5.बिन्दा .... सहेली महादेवी हैं।
उत्तरःकी।

VI. अन्य लिंग रूप लिखिए: Sig:.........................

प्रश्न 1.भिखारिन, पंडिताइन, लेखिका, बैल, चाची, नाना, दादी, विद्यार्थिनी, बालिका।

उत्तरः भिखारिन – भिखारी, पंडिताइन – पंडित, लेखिका – लेखक
बैल – गाय, चाची – चाचा, नाना – नानी
दादी – दादा, विद्यार्थिनी – विद्यार्थी, बालिका – बालक

VII. अन्य वचन रूप लिखिए:Sig:.........................

प्रश्न 1.बच्चा, कोठरी, सीढ़ी, मुद्रा, पंखा, दरवाजे, उँगली।

उत्तरः बच्चा – बच्चे, कोठरी – कोठरियाँ, सीढ़ी – सीढ़ियाँ
मुद्रा – मुद्राएँ, पंखा – पंखे, दरवाजे – दरवाजा
उँगली – उँगलियाँ

VIII. विलोम शब्द लिखिए:Sig:.........................

प्रश्न 1.दुर्बल, स्पष्ट, ज्ञात, मृत्यु, स्वर्ग, पुण्य, सुन्दर, न्याय, पराजय, स्वाभाविक, ऊपर।

उत्तरः दुर्बल × सबल, स्पष्ट × अस्पष्ट, ज्ञात × अज्ञात, मृत्यु × जन्म
स्वर्ग × नरक, पुण्य × पाप, सुन्दर × कुरुप, न्याय × अन्याय
पराजय × जय, स्वाभाविक × अस्वाभाविक, ऊपर × नीचे

Chapter 5 'बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर'

IV. कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए: Sig:.........................
(के, का, में, के लिए, से)

प्रश्न 1.जन्म के समय डॉ. अंबेडकर .... नाम भीमराव रखा गया था।
उत्तरःका
प्रश्न 2.उस समय एक अछूत .... यह बहुत अनोखी बात थी।
उत्तरःके लिए
प्रश्न 3.इसी बीच उन्हें बड़ौदा .... दीवान ने एक पत्र लिखा।
उत्तरःके
प्रश्न 4.आँखों .... आँसू छलक पड़ते हैं।
उत्तरःमें
प्रश्न 5.उसके हाथ .... बड़ी किताब है।
उत्तरःमें।

V. अन्य लिंग रूप लिखिए: Sig:.........................

M.K.Z

प्रश्न 1.पंडित, सूबेदार, पिता, नायक, गाय, नारी।

उत्तरः पंडित – पंडिताइन सूबेदार – सूबेदारनी पिता – माता
नायक – नायिका गाय – बैल नारी – नर

Chapter 6 दिल का दौरा और एनजाइना

IV. कोष्ट्क में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए:Sig:........................

(का, में, के, पर, की)

प्रश्न 1.उसके सीने .... दर्द उठने लगता है।
उत्तरःमें

प्रश्न 2.इसके साथ ही जोरों .... पसीना छूटने लगता है।
उत्तरःका

प्रश्न 3.मितली .... शिकायत भी हो सकती है।
उत्तरःकी

प्रश्न 4.पास .... डॉक्टर को बुला भेजें।
उत्तरःके

प्रश्न 5.कास्टेल उपस्थियों के संगम स्थल .... जोरों का दर्द हो सकता है।
उत्तरःपर

V. अन्य वचन रूप लिखिए: Sig:........................

प्रश्न 1.पसली, तंत्रिका, दवा, सीमा, धमनी।
उत्तरः पसली – पसलियाँ तंत्रिका – तंत्रिकाएँ दवा – दवाइयाँ/दवाएँ
सीमा – सीमाएँ धमनी – धमनियाँ

VI. विलोम शब्द लिखिए:Sig:........................

प्रश्न 1.पास, नीचे, छोटा, चैन, ज्यादा, समर्थ।

उत्तरः पास × दूर नीचे × ऊपर छोटा × बड़ा
चैन × बेचैन ज्यादा × कम समर्थ × असमर्थ

Chapter 7   मेरी बद्रीनाथ यात्रा

V. वाक्य शुद्ध कीजिए: Sig:........................

प्रश्न 1.हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठता था।
उत्तरः हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठते थे।
अथवा मैं प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठता था।

प्रश्न 2.वह तो सचमुच बिच्छू लग रही थी।
उत्तरः वह तो सचमुच बिच्छू लग रहा था।

प्रश्न 3.लेकिन ये कथाएँ कहाँ तक कहा जाए।
उत्तरः लेकिन ये कथाएँ कहाँ तक कही जाए।

प्रश्न 4.मंदिर में पूजा हो रहा था।
उत्तरः मंदिर में पूजा हो रही थी।

VI. कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए: Sig:........................

(के, ने, का, पर)

प्रश्न 1.मंजिल ...... पहुँच जाने पर रोमांच हो ही आता है।
उत्तरः पर
प्रश्न 2.कहते हैं कि प्राचीन काल में भगवान .... नर-नारायण के रूप में यहाँ तप किया था।3
उत्तरः ने
प्रश्न 3.देवदारू .... पेड़ भी इधर बहुत हैं।
उत्तरः के
प्रश्न 4.तीन दिन तक हम उस प्रदेश .... वैभव देखते रहे।
उत्तरः का
प्रश्न 5.मंदिर .... ओर मेरा घर है।
उत्तरः की

VII. निम्नलिखित वाक्यों को सूचना के अनुसार बदलिए: Sig:........................

प्रश्न 1.हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठते थे। (वर्तमानकाल में बदलिए)

उत्तरः हम प्रतिदिन सबेरे तीन बजे उठते हैं।

प्रश्न 2.अधिकांश यात्री पैदल चलते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए)
उत्तरः अधिकांश यात्री पैदल चलेंगे।

प्रश्न 3.बद्रीनाथ हमें पुकार रहे हैं। (भूतकाल में बदलिए)
उत्तरः बद्रीनाथ हमें पुकार रहे थे।

VIII. अन्य लिंग रुप लिखिए: Sig:.........................

प्रश्न 1.बालक, भक्त, कवि, भगवान, वृद्ध।

उत्तरः बालक – बालिका
भक्त – भक्ता (भक्तिन)
कवि – कवयित्री
भगवान – भगवती
वृद्ध – वृद्धा

IX. अन्य वचन रूप लिखिए:Sig:.........................

प्रश्न 1.रानी, यात्रा, दर्शन, ऋतु, कहानी, चोटी, भाषा।

उत्तरः रानी – रानियाँ
यात्रा – यात्राएँ
दर्शन – दर्शन
ऋतु – ऋतुएँ
कहानी – कहानियाँ
चोटी – चोटियाँ
भाषा – भाषाएँ

X. विलोम शब्द लिखिए:Sig:.........................

प्रश्न 1.आगे, ऊँचा, उठना, उतार।

उत्तर : आगे × पीछे
ऊँचा × नीचा
उठना × बैठना
उतार × चढ़ाव

Chapter 8 नालायक

V. निम्नलिखित वाक्यों को सूचना के अनुसार बदलिए: Sig:.........................

प्रश्न 1.तीन सौ अध्यापक चुने जायेंगे। (वर्तमानकाल में बदलिए)
उत्तरः तीन सौ अध्यापक चुने जाते हैं।

M.K.Z

प्रश्न 2.सभी सिफारिशें तिरस्कृत की गईं। (भविष्यत्काल में बदलिए)
उत्तरः सभी सिफारिशें तिरस्कृत की जाएंगी।

प्रश्न 3.पुलिस लोगों की रक्षा कर रही है। (भूतकाल में बदलिए).
उत्तरः पुलिस लोगों की रक्षा कर रही थी।

VI. अन्य लिंग रूप लिखिए: Sig:....................

प्रश्न 1.शेर, अध्यापक, मास्टर, साहब, युवक।

उत्तरः शेर – शेरनी
अध्यापक – अध्यापिका
मास्टर – मास्टरनी
साहब – साहिबा
युवक – युवती

VII. अन्य वचन रूप लिखिएः Sig:....................

प्रश्न 1.पुस्तक, गाड़ी, लड़का, बेटियाँ।

उत्तरःपुस्तक – पुस्तकें
गाड़ी – गाड़ियाँ
लड़का – लड़के
बेटियाँ – बेटी

VIII. समानार्थक शब्द लिखिएः Sig:....................

प्रश्न 1.सम्राट, अध्यापक, स्वतंत्र, प्रयत्न, सहायता।

उत्तर: सम्राट – राजा अध्यापक – शिक्षक
स्वतंत्र – आजाद प्रयत्न – कोशिश सहायता – मदद

IX. मुहावरेः Sig:....................

1.गोबर बारूद होना – नाकाम होना
2.नाक रगड़ना – गिड़गिड़ाना
3.हक मारना – अधिकार छीनना।

Chapter 9 राष्ट्र का स्वरूप

IV. निम्नलिखित वाक्य सूचनानुसार बदलिए:

प्रश्न 1.हमारे ज्ञान के कपाट खुलते हैं। (भविष्यत्काल में बदलिए) Sig:....................

उत्तरः हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगे।

प्रश्न 2.माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती थी। (वर्तमानकाल में बदलिए) Sig:..............
उत्तरः माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है।

प्रश्न 3.मनुष्य सभ्यता का निर्माण करेगा। (भूतकाल में बदलिए) Sig:.....................
उत्तरः मनुष्य ने सभ्यता का निर्माण किया था।

V. कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए: Sig:.....................

(पर, का, के, में)

प्रश्न 1.जन .... प्रवाह अनंत होता है। **उत्तरः का**

प्रश्न 2.जीवन नदी .... प्रवाह की तरह है। **उत्तरः के**

प्रश्न 3.पृथ्वी के गर्भ .... अमूल्य निधियाँ है। **उत्तरः में**

प्रश्न 4.भूमि .... जन निवास करते हैं। **उत्तरः पर**

प्रश्न 5.उसने भिक्षुक .... भीख दी। **उत्तरः को**

V. समानार्थक शब्द लिखिए: Sig:.....................

प्रश्न 1.अंबर, धरती, पेड़, नारी, सूर्य।

उत्तरः अंबर – आकाश   धरती – पृथ्वी   पेड़ – वृक्ष   नारी – स्त्री   सूर्य – भानु

VI. विलोम शब्द लिखिए:Sig:.....................

प्रश्न 1.प्रसन्न, उत्साह, अमृत, स्वाभाविक, जन्म, ज्ञान।

उत्तरः प्रसन्न – अप्रसन्न   उत्साह – निरुत्साह   अमृत – विष
स्वाभाविक – अस्वाभाविक   जन्म – मरण (मृत्यु)   ज्ञान – अज्ञान

Chapter 10 रिहर्सल

V. अन्य लिंग रूप लिखिए: Sig:.....................

प्रश्न 1.हाथी, शेर, लड़का, गाय, पिता, अध्यापक, भगवान।

उत्तरः, हाथी – हथिनी   शेर – शेरनी   लड़का – लड़की   गाय – बैल
अध्यापक – अध्यापिका   पिता – माता   भगवान – भगवती।

VI. अन्य वचन रूप लिखिए: Sig:.....................

प्रश्न 1.दुकान, घंटा, किताब, मूंछ, मुद्रा, सपना।

उत्तरः दुकान – दुकानें   घंटा – घंटे

किताब – किताबें मूंछ – मूंछे
मुद्रा – मुद्राएँ सपना – सपने।

VII. विलोम शब्द लिखिए: Sig:....................

प्रश्न 1.बेहोश, मोटा, मौत, शीघ्र, छोटा।

उत्तरः बेहोश × होश, मोटा × पतला, मौत × बेमौत (जिंदगी), शीघ्र × विलम्ब, छोटा × बड़ा,

मुहावरे .

Sig----------------------

मुहावरेः मुहावरे की विशेषताएँ:

मुहावरा एक से अधिक शब्दों की रचना है, जो अपने मूल शाब्दिक अर्थ को छोड़कर दूसरा अर्थ देता है। मुहावरे का वाक्य में जब प्रयोग किया जाता है, तो लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार उसकी क्रिया बदल जाती है।

1) अगर मग्गर करना - टाल मटोल करना,
2) उँग्ली पर नचाना - इच्छा अनुसार कार्य कराना
3) घर का उजाला - इज़्त बडाने वाला ,
4) सिर उठाना - विरोध करना
5) रंग जमाना - धाक जमाना
6) पीठ दिखाना - हारकर भागजाना
7) नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना
8) हाथ फ़ैलाना - याचना करना
9) ठंडा पड जाना - मर जाना
10) हात-पाँव फूल जाना - डर जाना
11) छक्के छुडाना - बुरी तरह हराना
12) आँखे खुलना - होश आना
13) टोपी उछाल ना - अपमानित करना
14) छापी से लगाना - प्यार करना
15) पानी-पानी होना - लज्जित होना
16) लाल पीला होना - क्रोध करना
17) आँख रखना - निगरानी करना
18) कमर कसना - तैय्यार होना

19) आँखों से गिरना - सम्मान नष्ट होना
20) गुलछर्रे उडाना - मोज मस्ती करना
21) खिल्ली उडाना - हँसी उडाना
22) तारे गिनना - प्रतीक्षा करना
23) आँखों का तारा - बहुत प्यारा
24) जी चुराना - मेगनत से बचना
25) घी के दिए जलाना - खुशियाँ मनाना
26) नीव डालना - आरम्भ करना
27) दिन फ़िरना - भाग्य पलटना
28) मुँह फ़ेरना - उपेक्षा करना
29) हवा से बातें करना - तेज दौडना
30) सिर पर भूत सवार होना - धुन सवार होना
31) कलेजा फ़टना - असहनीय दुःख होना
32) मूँह फ़ूलना - रूठ जाना

Sig______________________

33) आसमान सिर पर उठाना - बहोत शोर मचाना
34) इशारे पर नचाना - वश मे करना
35) गुड गोबर होना - काम बिगड जान
36) दाल ना गलना - सफ़ल ना होना
37) फूले न समाना – बहुत प्रसन्न होना
38) अंधे की लाठी – एक मात्र सहारा
39) आँसू पोंछना – सांत्वना देना
40) अंधा बनाना – मूर्ख बनाना।
41) अँधेरा छाना – कोई उपाय न सूझना।
42) अंगार बनना – क्रोध में आना।
43) अचार करना – सड़ाना।
44) अड़चन डालना – बाधा उपस्थित करना।
45) अपने पाँव पर खड़े होना – आत्मनिर्भर होना।
46) आग उगलना – अतशय क्रोध।
47) आग में कूद पड़ना - जोखिम उठाना।
48) आसमान से बातें करना -अत्यन्त ऊँचा होना।
49) आँसू पोंछना – ढाढ़स बँधाना।
50) ईन्ट से ईन्ट बजाना - निस्तोनाबूद करना।
51) उठा न रखना – स्वीकार करना।
52) उल्लू सीधा करना – काम बना लेना।

52) एक न चलना – कोई उपाय न दिखना।
53) कगज काला करना - बेमतलब लिखे जाना।
54) कौड़ी का तीन होना – तुच्छ होना।
55) खराद पर चढ़ना – वश में या जाँच में आना।
56) खलल डालना – विघ्न डालना।
57) गूलर का फूल होना – दुर्लभ होना।
58) घास खोदना – निरर्थक काम करना।
59) घोड़ा बेचकर सोना - बेफिक्र होकर सोना।
60) चार चाँद लगना – और सुन्दर लगना।
61) चल निकलना – जमना।
62) चौकड़ी भूल जाना - राह न सूझना।
63) जले पर नमक छिड़कना – दुःख पर दुःख देना।
64) जान छुड़ाना – पीछा छुड़ाना।
65) जान पर खेलना – वीरता का काम करना।
66) झंडा गाड़ना – फतह कर लेना।
67) तिल का ताड़ करना -बहुत बढ़ाकर कहना।
68) तूती बोलना – खूब चलती होना।
69) थूक से सत्तु सानना - अत्यन्त कृपण होना।
70) दाल में काला होना - संदेह की स्थिति होना।

Sig________________

71) दिल दरिया होना – उदार होना।
72) दिल्ली दूर होना – कार्य में विलम्ब होना।
73) दूकान बढ़ाना – दूकान बन्द करना।
74) धता बताना – टाल देना।
75) पत्थर पर दूब जमाना -असम्भव बात करना।
76) पानी रखना – इज्जत बचाना।
77) पापड़ बेलना – कष्ट झेलना।
78) पारा चढ़ना – गुस्सा होना।
79) मैदान मारना – विजयी होना।
80) रंग में भंग पड़ना – आनन्द में पड़ना।
81) लोहा मानना – श्रेष्ठता स्वीकार करना।
82) सफेद झूठ बोलना – बिलकुल झूठ बोलना।
83) सिक्का जमना – धाक जमना।
84) सितारा चमकना – तरक्की करना।
85) हजामत बनाना – मूर्ख बनाकर ठगना।

86) हृदय पसीजना – दया से भर जाना।

लिंग परिवर्तन कीजिए: .Sig:..................

1) अभिनेता	-	अभिनेत्री
2) नाई	-	नाइन
3) सिंह	-	सिंहनी
4) साम्राट	-	साम्राज्ञी
5) मेहतर	-	मेहतरानी
6) वर	-	वधू
7) नायक	-	नायिका
8) आयुष्मान	-	आयुष्मति
9) हाथी	-	हाथिनी
10) स्वामी	-	स्वामिनी
11) जुलाहा	-	जुलाहिन
12) पापी	-	पापिन
13)दाता	-	दात्री
14) तनुज	-	तनुजा
15) गोप	-	गोपी
16) हिरन	-	हिरणी
17) साँप	-	सांपिन
18) यशस्वी	-	यशस्विनी
19) विध्द्वान	-	विधूषी
20) प्रबन्धकर्ता	-	प्रबंधकत्री
21) राक्षस	-	राक्षसी
22) ठाकुर	-	ठाकुराइन
23) बिल्ली	-	बिलावड (बिलाव)
24) सन्यासी	-	सनयासिनी
25) विधवा	-	विधुर
26) श्रिमान	-	श्रिमती

M.K.Z

27) बाल - बाला
28) छात्र - छात्रा
29) राजपूत - राजपुतानी
30) नर - नारी

पत्र लेखन

Sig:...................

1) चार दिन की आवकाश माँगते हुए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना -पत्र लिखिए:

प्रेषक. **दिनांक :.................**

X.Y.Z
मीना बाजार
क्र: 9945
मैसूर -20

सेवा में.
प्रधानाचार्य जी
फ़.श.से.लर.जे.कलेज
मैसूर-19

विषय – चार दिन छुट्टी प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र।

महोदय ,

आप से निवेदन है कि पिछले दो दिनों से मुझे बुखार है । डाक्टर ने आराम कर्ने की सलाह दी है । अतः आपसे प्रर्थना है कि दिनांक............................... से .... तक चार दिन की मुझे छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें

M.K.Z

धन्यवाद

स्थान
मैसूर -20

आपका आज्ञाकारी छात्र

नाम... XYZ
बंगलूर-22
कक्षा... 11th
अनुक्रमांक... 9945

Sig: ....

2) अपने भाई को परीक्षा में सफ़ल होने पर बधाई देते हुए एक पत्र लिखिए:

अखिलेश
क्र: 9945
मैसूर -20

दिनांक :................

प्रिय अखिल,

शुभाशिर्वाद।

अभी-अभी पिताजी का पत्र मिला । पत्र पढकर बहोत खुशी हुई की तुम हिन्दी कि परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए हो और तुम्हे स्वर्ण पदक मिलने वाला है । तुम को मैं ढेर-सारी बधाईयाँ देता हुँ। और अगेभी इसी तरह पढते रहा करो ।

भेज ने वाले का पता.

तुमारा अग्रज भाई
आकाश
फ़.श.से.लर.जे.कालेज
गुलबरगा-19

Sig:...................

3) छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र।

प्रेषक. **दिनांक.... 01/01/2001**

मीना बाजार
क्र: 9945
झांसी।-20

सेवा में
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सिद्धार्थनगर
झांसी।

विषय – छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं 10वीं कक्षा का छात्र हूं। मैं सदा विद्यालय में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होता रहा हूं। पिछले कई वर्षों से मैं लगातार प्रथम आ रहा हूं। खेलकूद में भी मेरी गहन रुचि है। मैं स्कूल की कबड्डी टीम का कप्तान भी हूं। सभी अध्यापक मेरी प्रशंसा करते हैं।

पिताजी स्कूल से मेरा नाम कटवाना चाहते हैं। कारण घर की आर्थिक दशा डगमगा गई है। वे मेरा मासिक शुल्क देने में असमर्थ हैं। मैंने अपनी पाठ्य पुस्तक को को जैसे-तैसे खरीद लिया है,शेष व्यय के लिए

M.K.Z

आपसे निवेदन है कि मुझे इस वर्ष मासिक छात्रवृत्ति देने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से चला सकूं।

यह छात्रवृत्ति आपकी मेरे प्रति विशेष कृपा होगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं पूरी मेहनत से पढूंगा और अपने स्कूल का नाम रोशन करूंगा।

धन्यवाद

स्थान
झांसी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम... XYZ
कक्षा... 11th
अनुक्रमांक... 9945

Sig:...................

4) कक्षा के वर्ष की पहली परीक्षा के बरे मे बता थे हुए अपने मित्र के नाम एक पत्र लिखिए:

राजगोपाल
क्र: 9945
मैसूर -20

दिनांक.... 01/01/2001

प्रिय मित्र,

राजगोपाल
स्नेह नमस्कार।

प्रिय मित्र, **राजगोपाल** आज हमारी कक्षा के वर्ष की पहली परीक्षा आयोजित हुई थी। सभी छात्र उपस्थित थे लेकिन तुम्हारी अनुपस्थिति मुझे बेहद परेशान कर रही थी। परीक्षा खत्म होने के बाद मुझे हमारे मित्र सुरेश से है ज्ञात हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य बेहद खराब है। इसी कारण तुम इस वर्ष परीक्षा देने में असमर्थ हो। तुम्हारे अस्वस्थ होने की खबर सुनकर मुझे बेहद दुख हुआ।

मैं प्रार्थना करता हूं कि तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओ और अपने अगली परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करो। क्योंकि तुम्हे डॉक्टर ने कहीं भी आने जाने के लिए मना किया है और घर में आराम करने की सलाह दी है। इसलिए तुम कुछ दिनों तक घर पर आराम करो और अपने स्वास्थ्य को ठीक करने का प्रयास करो।

M.K.Z

तुम इस वर्ष की पहली परीक्षाओं की चिंता मत करो, अगली बार की परीक्षाओं में तुम उचित प्रयास करके बेहतर अंक लाने का प्रयास करना। मैं प्रार्थना करूंगा कि तुम जल्दी ही ठीक हो जाओ।

भेज ने वाले का पता.
तुम्हारा स्नेही मित्र,
अशोक।
फ़.श.से.लर. जे कालेज
गुलबरगा-19

Sig: ....

5) पढ़ाई के प्रति सलाह देने हेतु बहन को पत्र

दिनांक......

शकुंतला
जनकपुरी,
नई दिल्ली।
गेट नंबर – 21

प्रिय बहन शकुंतला
ढेर सारा प्यार,

प्रिय बहन तुम्हारा पत्र मुझे गत 2 दिन पूर्व प्राप्त हुआ था। जिसमें तुमने बताया कि तुम अपने विद्यालय के समस्त कार्यक्रमों में बेहद अच्छा प्रदर्शन कर रही हो। मुझे यह सुनकर बेहद खुशी हुई लेकिन गत माह तुम्हारी परीक्षाओं में जो अंक आए उससे मैं काफी निराश हुई। मैं चाहती हूं कि तुम अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर आओ।

वार्षिक परीक्षा निकट आ चुकी है, मेरे विचार से तुम कार्यक्रमों में अपना समय कम लगाकर अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान दो। मेरे विचार से तुम्हें अब स्वाध्याय पर अधिक से अधिक समय देना चाहिए। मुझे अपनी क्षमता के मुताबिक यह जरूर बताना कि तुम इस वार्षिक परीक्षा में कितने अच्छे अंक ला सकती हो। मैं उम्मीद करती हूं कि मेरी बातों से तुम्हारा मनोबल और मजबूत होगा।

यदि तुम्हें शिक्षा से लेकर किसी प्रकार की दिक्कत हो तो मुझे सर्वप्रथम सूचित करना। मैं यथासंभव शीघ्र ही तुम्हारी उस दिक्कत को दूर करने का प्रयास करूंगी।

अपना ध्यान रखना!

तुम्हारी बड़ी बहन,
शिखा,
आगरा।

Sig: ....

6) प्रधानाचार्य के नाम कोविड रिपोर्ट समेत छुट्टी के लिए एक पत्र

प्रेषक. **दिनांक :................**

समृद्ध वर्मा
अष्टम क
आंवला।

सेवा में.

श्रीमान प्रधानाचार्य जी
सरस्वती शिशु मंदिर, आंवला।

महोदय,

मैं समृद्ध वर्मा आपके विद्यालय का कक्षा 8वीं का छात्र हूं। जैसा कि आप जानते ही हैं कि पिछले लंबे वक्त से हम सभी छात्र कोरोना के कारण ऑनलाइन ही कक्षाएं ले रहे हैं। साथ ही घर पर रहकर ही पढ़ाई कर रहे हैं। ऐसे में अब जब कोरोना के मामलों में कमी आई है। तब से सरकार ने लॉकडॉउन में ढील देना आरंभ कर दी है। दूसरा अब अधिकांश स्कूल भी खुल गए हैं। ऐसे में पिछले एक हफ्ते से लगातार मैं स्कूल आ रहा हूं। परन्तु महोदय, बीते दो दिनों से मुझे बुखार आ गया है, ऐसे में जब मेरा बुखार उतरने का नाम नहीं ले रहा था। तब मैंने अपना कोरोना टेस्ट करवाया। जिसमें मेरी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। जिस कारण मैं अपने घर पर ही क्वारंटीन हो गया हूं।

इसलिए मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया मेरी छुट्टी अनुग्रहीत करने की कृपा करें। ताकि मैं घर पर

M.K.Z

रहकर ही जल्द से जल्द ठीक हो जाऊं। हालांकि मैंने कक्षा के मुख्य अध्यापक को अपने स्वास्थ्य के बारे में फोन के माध्यम से जानकारी दी थी। लेकिन उन्होंने कोविड रिपोर्ट समेत छुट्टी के लिए एक पत्र प्रधानाचार्य के नाम लिखने के मुझसे कहा था। इसलिए मैं आपको यह पत्र लिखकर अपने स्वास्थ्य के बारे में अवगत करा रहा हूं। साथ ही में कोविड की रिपोर्ट भी संलग्न कर रहा है।

आशा करता हूं कि आप मेरी स्थिति को अवश्य ही समझने का प्रयत्न करेंगे और मुझे 15 दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद

स्थान
आंवला।
123/04

आपका आज्ञाकारी छात्र
समृद्ध वर्मा
कक्षा 11

Sig: ....

7) परीक्षा के बरे मे बता थे हुए अपने पिताजी के नाम एक पत्र लिखिए:

शील भवन,
आगरा।

दिनांक – 15/04/2021

पूज्य पिताजी,
सादर प्रणाम।

आशा करता हूं कि आप और माता जी दोनों का स्वास्थ्य बेहतर होगा। साथ ही मेरी दोनों छोटी बहनें भी अच्छे से पढ़ाई कर रही होंगी। पिताजी पिछले हफ्ते मुझे आपका पत्र मिला था। जिसमें आपने मेरी पढ़ाई और कॉलेज के बारे में पूछा था। ऐसे में मैं आपको बता दूं कि मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। हाल ही में मेरे प्रैक्टिकल खत्म हुए हैं और जल्द ही अर्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू होने वाली हैं। जिसकी मैं बेहतर तरीके से तैयारी में लगा हुआ हूं। लेकिन पिताजी जैसा कि आप जानते ही हैं कि वर्तमान में किसी भी सरकारी नौकरी की तैयारी के लिए काफी पढ़ाई करनी होती है।

ऐसे में मैं अभी से यानि बीएससी के साथ ही सरकारी परीक्षाओं की तैयारी करना चाहता हूं। जिसके लिए मुझे अलग से कोचिंग लेनी पड़ेगी। परंतु हर महीने आपके द्वारा भेजे गए रुपयों से मैं केवल कॉलेज की फीस ही दे पाता हूं। इसलिए मुझे थोड़े अधिक रुपयों की जरूरत है। ताकि मैं किसी अच्छे संस्थान से सरकारी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकूं और भविष्य में कुछ बनकर आपका और माता जी दोनों का ही नाम रोशन कर सकूं। मैं आशा करता हूं कि आप मेरी विचारधारा से सहमत होंगे और हमेशा की तरह मुझे इस बार भी प्रोत्साहित करेंगे।

मेरी ओर से माता जी को प्रणाम और छोटी बहनों को प्रेम दीजिएगा।

आपका प्रिय पुत्र,
विनोद।
आंवला।

Sig: ....

8) बुआ जी को पत्र

14, सुभाष नगर **दिनांक – 15/04/2021**
बरेली।

प्रिय बुआ जी।
मैं आशा करता हूं कि आप और सभी परिवारजन स्वस्थ होंगे। मुझे आपसे मिले हुए काफी वक्त हो गया था। जिस कारण अब मैं आपको पत्र लिखकर इस बात से अवगत कराना चाहता हूं। जैसा कि आप जानती हैं कि पिछले दो सालों से देश में कोरोना महामारी का प्रकोप फैला हुआ था। ऐसे में अभी इसका खतरा पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। अब तो डेंगू और मलेरिया ने भी पांव पसार लिए हैं।

इसलिए मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हमारी थोड़ी सी लापरवाही हमें अभी भी कोरोना की गिरफ्त में ला सकती है। हमें सबसे पहले कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज लगवा लेनी चाहिए। इसके बाद अभी भी भीड़ भाड़ वाली जगहों में जाने से बचना चाहिए। अधिक आवश्यक हो तभी बाहर निकलें और मास्क व दो गज दूरी का हमेशा पालन करें। बुखार या कमजोरी लगने पर तुरंत नजदीकी डॉक्टर से संपर्क करें। साथ ही जैसे जैसे मौसम बदल रहा है, वैसे ही एतिहायत बरतें। बुआ, मम्मी ने मुझे बताया था कि आपको कुछ दिन पहले ही काफी तेज बुखार आया था। इसलिए आप कृपया अपना विशेष ध्यान दें और उम्र के इस पड़ाव पर आकर अपनी सेहत से समझौता ना करें।

इन्हीं आशाओं के साथ आपके आशीर्वाद का अभिलाषी।

आपका प्रिय भतीजा,

मुकेश।
जनकपुरी,
नई दिल्ली।

Sig: ....

9) मित्र को पत्र

21, विकास नगर **दिनांक :................**
अलीगढ़।

प्रिय मित्र,
दिनेश।

मैं आशा करता हूं कि तुम स्वस्थ होगे और अपनी पढ़ाई में हमेशा की तरह बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे होगे। दोस्त, मैंने आज तुम्हें यह पत्र इसलिए लिखा है कि कई दिनों से मैं यह विचार कर रहा हूं। कि आजकल हम एक दूसरे से सोशल मीडिया, फोन और इंटरनेट के माध्यम से जुड़े रहते हैं। ऐसे में हमें सदैव ही एक दूसरे के विषय में जानकारी रहती हैं। लेकिन क्या तुमने कभी यह सोचा है कि आज 21वीं के इस युग में यदि जीवन बिना मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से बिताना पड़ जाए, तो क्या होगा? दोस्त आज हम प्रत्येक कार्य के लिए पूर्णतया इंटरनेट पर निर्भर हो चुके हैं।

फिर चाहे वह सरकारी हो या प्राइवेट संस्थान। हर जगह सारे कार्य इंटरनेट के द्वारा ही किए जा रहे हैं। आज दूर बैठे किसी भी व्यक्ति से संपर्क साधना हो, तो मोबाइल और इंटरनेट का ही सहारा लेना पड़ता है। ऐसे में बिना तकनीक के आज मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन मित्र जहां विज्ञान के आविष्कार मानव सभ्यता के विकास के लिए जरूरी हैं, तो वहीं इसके कई नुकसान भी हैं। इसलिए मेरा मानना है कि हमें तकनीक को अपनी सुविधानुसार प्रयोग में लाना चाहिए। ताकि वह हमारे जीवन को विकास के मार्ग पर ले जाए।

M.K.Z

शीघ्र ही हम मिलेंगे। तब तक तुम अपना ध्यान रखना।

तुम्हारा मित्र,
राहुल गुप्ता
आगरा।

Sig: ....

10) पुस्तक भवन में छोटे-छोटे बच्चों के लिए भी बाल पत्रिकाओं की प्रतियां मंगवाने का निवेदन पत्र।

पुस्तक भवन,
मेरठ, उत्तर प्रदेश।

महोदय,
निवेदन इस प्रकार है कि मैं आपके पुस्तक भवन में आकर नियमित तौर पर किताबों का अध्ययन करता हूं। जहां से मैं सदैव ही कुछ न कुछ अवश्य ही सीखकर जाता हूं। हालांकि आरंभ से ही मुझे हिंदी साहित्य और प्रेरणादायक कहानियां पढ़ने का शौक रहा है। साथ ही मैं महान् व्यक्तियों के बारे में पढ़कर स्वयं को काफी लाभान्वित महसूस करता हूं।

ऐसे में मैं आपका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि आधुनिक युवा पीढ़ी जोकि आज पूर्णतया तकनीक पर निर्भर हो गई है। वह किताबों को पढ़ने में अत्यधिक रुचि नहीं दिखाती है। वह हर प्रश्न के उत्तर या कुछ भी जानकारी प्राप्त करने के लिए इंटरनेट का सहारा लेती है। लेकिन मेरा मानना है कि यदि वह किताबों को पढ़ने की आदत डालती है, तो वह ना केवल उसके ज्ञान में वृद्धि करती है। अपितु उससे उसके भीतर संस्कारों का भी निर्माण होता है।

हमारी युवा पीढ़ी जिसके कंधों पर देश के भावी विकास की जिम्मेदारी है, उसे हमारे समाज के महान् व्यक्तियों के चरित्र और उनके द्वारा किए गए कार्यों को पढ़ना चाहिए। ताकि वह भी एक जिम्मेदार नागरिक बनकर देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह बेहतर तरीके से कर पाए। जिसके लिए उसे

अलग-अलग विधाओं और विषयों पर लिखी गई किताबों का अध्ययन करना चाहिए।

साथ ही मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप पुस्तक भवन में छोटे-छोटे बच्चों के लिए भी बाल पत्रिकाओं की प्रतियां मंगवाए। ताकि छोटे-छोटे बच्चे भी उसमें लिखित प्रेरक कहानियों को पढ़कर अच्छी आदतों को अपनाएं और एक बेहतर कल की ओर अग्रसरित हो सकें।

इन्हीं अपेक्षाओं के साथ आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रार्थी,
सरोज कुमार
अशोक नगर, मेरठ।
दिनांक:- 25/04/2021

<u>हिन्दी मे अनुवाद कीजिए</u>

೧)ನಾವು ಭಾರತದ ಪ್ರಜೆಗಳು.
1. We are the citizens of India
<u>उत्तर:</u> हम भारत के नागरिक हैं ।

೨)ಭಾರತವು ವಿಶ್ವದಲ್ಲೇ ಅತಿ ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವ ದೇಶ.
2. India is the biggest democratic country in the world
<u>उत्तर:</u> भारत विशव का सबसे बडा प्रजा प्रभुत्व (लोकतांत्रिक) देश है।

೩)ಯುವ ವರ್ಗವು ದೇಶದ ಅಮೂಲ್ಯವಾದ ಆಸ್ತಿ
3. Youths are valuable asset of the nation
<u>उत्तर</u>: युवा वर्ग देश की अमूल्य सम्पत्ति है।

೪)ನಾವು ಒಗ್ಗಟ್ಟಾಗಿ ಬಾಳಬೇಕು.
4. We should live unitedly
<u>उत्तर</u>: हमें एकता से जीना चाहिए।

೫)ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಭಾಷೆಗಳಿವೆ.
5. There are many languages in India
<u>उत्तर</u>: भातर में कई भाषाएँ हैं ।

೬)ದೇಶದ ಸುರಕ್ಷತೆ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಕರ್ತವ್ಯವಾಗಿದೆ.
6. The security of our nation is our responsibility.

उत्तर: देश की सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है।

೭)ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಉನ್ನತಿಯಿಂದ ಮಾನವ ಜನಾಂಗದ ಉನ್ನತಿ ಸಾಧ್ಯ.
7. Development of humanity is possible through scientific development.
उत्तर: वैज्ञानिक उन्नति से मानव जाति की उन्नति ।

೮)ಭಾರತ ದೇಶವು ಕೃಷಿಪ್ರಧಾನ ದೇಶವಾಗಿದೆ.
8. India is an agricultural country.
उत्तर: भारत कृषिप्रधान देश है।

೯)ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಓದಿನ ಜೊತೆಗೆ ಆಟವೂ ಅತಿ ಮುಖ್ಯ.
9. Along with studies, sports is also important for students.
उत्तर: विध्यार्थियों को पढाई के साथ साथ खेल भी आवश्यक है।

೧೦)ಪ್ರತಿಯೊಂದು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಅದರದೇ ಆದ ಆಡಳಿತ ಭಾಷೆ ಇದೆ.
10. Every state has its own administrative language.
उत्तर: हर एक राज्य की अपनी राज्य भाषा है ।
೧೧)ಬೆಂಗಳೂರು ನಗರವನ್ನು ಮಾಹಿತಿ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನದ ಕೇಂದ್ರವನ್ನುತ್ತಾರೆ.
11. Bangalore is called the center of information technology.
उत्तर: बेंग्लूर नगर को सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र कहते हैं ।

೧೨)ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು ಆಟದ ಮೈದಾನದಲ್ಲಿ ಆಡುತ್ತಾರೆ.
12. Students are playing in the Playground.
उत्तर: विद्यार्थी मैदान मे खेल रही हैं।

೧೩)ನಾವು ಎಲ್ಲಾ ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಗೌರವಿಸಬೇಕು.
13. We should respect all religions.
उत्तर: हमें सभी धर्मों का आदर करना चाहिए।

೧೪)ನಮ್ಮ ಕಾಲೇಜು ಬಸ್ ನಿಲ್ದಾಣದಿಂದ ಐದು ಕಿ.ಮೀ . ದೂರದಲ್ಲಿದೆ.
14. Our college is at a distance of five kms. From the Bus stand.
उत्तर: हमारा कालेज बस अड्डे से पाँच कि.मी.दूर है।

೧೫)ಮಹಾತ್ಮ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ಅಕ್ಟೋಬರ್ 2 , 1869ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದರು.
15. Mahatma Gandhi was born on 2nd October 1869.
उत्तर: महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 मेम हुआ।

೧೬)ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಜೀವನವೇ ಸುವರ್ಣ ಯುಗ.
16. Student Life is the golden life.
उत्तर: विद्यार्थी जीवन ही स्वर्णिम जीवन है।

೧೭)ಎಲ್ಲರೂ ಅವನನ್ನು ಮರ್ಯಾದೆಯಿಂದ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದರು.
17. He was respected by everyone.
<u>उत्तर</u>: सभी उसे स्म्मान देते थे।

೧೮)ನೀವು ಎಂದಾದರೂ ರೈಲಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣ ಮಾಡಿದ್ದೀರಾ.?
18. Have you ever travelled by train?.
<u>उत्तर</u>: क्या आपने कभी रेल मे कभी में यात्रा की है?

೧೯)ಸರಳ ಬಹಳ ಪ್ರತಿಭಾನ್ವಿತೆ.
19. Sarala is very talented.
<u>उत्तर</u>: सरला बहुत प्रतिभाशाली है।

೨೦)ಮಹಾತ್ಮ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ಸತ್ಯ ಮತ್ತು ಅಹಿಂಸೆಯನ್ನು ಪಾಲಿಸುತ್ತಿದ್ದರು.
20. Mahatma Gandhi was a follower of truth and non violence
<u>उत्तर</u>: महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा का पालन करते थे।

೨೧)ಕಳೆದ ತಿಂಗಳು ನಾವು ಹಳ್ಳಿಗೆ ಹೋಗಿದ್ದೆವು.
21. We had been to village last month.
<u>उत्तर</u>: हम पिछले महीने गाँव गये थे।

೨೨)ನಾವು ಬೇಗ ಎದ್ದರೆ ಸೂರ್ಯೋದಯವನ್ನು ನೋಡಬಹುದು.
22. If we get up early, we can see sunrise.
<u>उत्तर</u>: अगर हम जल्दी उठें तो सूर्यादय देख सकते हैं ।

೨೩)ಅವನು ಬೇಗ ಬಂದಿದ್ದರೂ ಈ ಕೆಲಸ ಮುಗಿಯುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ.
23. Even if he had come early this work could not have been completed.
<u>उत्तर</u>: यदि वह जल्दी आता, तो भी यह कार्य पूर्ण नहीं हो पाता।

೨೪)ಗೌರಿಶಂಕರ ಶಿಖರವು ಹಿಮಾಲಯ ಪರ್ವತ ಶ್ರೇಣಿಯಲ್ಲಿ ಅತಿ ಎತ್ತರವಾದ ಶಿಖರ.
24. Gowri shankara is the highest peak in the Himalayan mountain range.
<u>उत्तर</u>: गौरीशंकर शिखर हिमालय पर्वत श्रेणी में सबसे शीर्ष शिखर है।

೨೫) ಈ ಗಾಳಿ ಮಾತನ್ನು ನಂಬಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.
25. This rumour cannot be believed.
<u>उत्तर</u>: इस अफ़वाह पर विशवास नहीं किया जा सकता ।

೨೬) ಮನುಷ್ಯನ ಆಸೆಗಳಿಗೆ ಮಿತಿ ಇಲ್ಲ.ಆದರೆ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳಿಗೆ ಮಿತಿ ಇದೆ.
26.Human wants unlimited but natural resources are limited.
<u>उत्तर</u>: मनुष्य की आशाएँ असीमित हैं, किम्तु प्रकृतिक संसाधन सीमित है।

೨೭) ಮಾನವರು ದೇವರ ಉತ್ತಮ ಸೃಷ್ಟಿಯಾಗಿದ್ದಾನೆ.
27. Human being is the finest creation of God.
<u>उत्तर</u>: मनुष्य ईशवर की सर्वोत्तम कृति है।

೨೮)ಶಾಲೆಗಳು ಜ್ಞಾನದ ಅಡಿಪಾಯವಾಗಿದೆ.
28. Schools are the foundation of learning.
<u>उत्तर</u>: विध्यालय ञान की आधारशिला है।

೨೯)ನಿನ್ನೆ ಆತನು ದಿನವೆಲ್ಲಾ ನನ್ನೊಂದಿಗೆ ಮಾತನಾಡುತ್ತಾ ಕಳೆದನು.
29. He spent the whole day yesterday talking to me.
<u>उत्तर</u>: उसने दिनभर मेरे साथ बात्तों में बिताया।

೩೦)ನೀನು ನನ್ನ ಜೊತೆ ಮನೆಗೆ ಬರುವೆಯಾ.
30. Are you coming home with me.
<u>उत्तर</u>: क्या तुम मेरे साथ घर आ रहे हो?

೩೧)ಮೊಬೈಲ್ ಫೋನಿಲ್ಲದೆ ನಾವು ಬದುಕಲಾರೆವು.
31. Can't we live without mobile phone?
<u>उत्तर</u>: क्या हम मोबाइल फ़ोन के बिना जी नहीं सकते।

೩೨)ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಶಿಸ್ತಿಲ್ಲದೆ ಸುಖಶಾಂತಿಯಿಲ್ಲ.
32. If there is no discipline in life then there is no happiness and peace.
<u>उत्तर</u>: अगर जीवन में अनुशासन नहीं है तो खुशी और शांति भी नहीं है।

೩೩) ಕೇವಲ ಹಣದಿಂದಲೇ ಯಾರು ಸುಖವನ್ನುಗಳಿಸಲಾರರು.
33. One cannot get happiness merely by acquiring money.
<u>उत्तर</u>: केवल धन से कोई भी सुख प्राप्त कर नहीं सकता।

೩೪)ನಾವು ರಾತ್ರಿಯ ಊಟವನ್ನು ಎಂಟು ಗಂಟೆಗೆ ಮಾಡಲಿದ್ದೇವೆ.
34 . We are going to have dinner at 8'00 clock.
<u>उत्तर</u>: हम रात का भोजन आठ बजे करेंगे।

೩೫)ಮೋಡಗಳು ಬಹಳ ಇರುವುದರಿಂದ ಮಳೆಯು ಬಂದೇಬರುತದೆಂದು ನಂಬಿಕೆ.
35. If is very cloudy and I am sure it will rain.
<u>उत्तर</u>: मेरा विशवास है कि घने बादल होने से वर्षा अवश्य होगी।

೩೬)ಮೊದಲು ನಿನ್ನ ಕರ್ತವ್ಯವನ್ನು ಮಾಡು,ನಂತರ ಹಕ್ಕುಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಕೇಳು
36 . Do your duty first then ask for your rights.
<u>उत्तर</u>: पगले अपना कर्तव्य करो, फ़िर अधिकार के बारे मे पूछो।

೩೭)ಭಾಷೆಯು ಸರಳವಾಗಿ ಅರ್ಥವಾಗುವಂತಿರಬೇಕು.
37. Language should be simple and easy to understand.
उत्तर: समझने के लिए भाषा सरल और सहज होनी चाहिए।

೩೮)ನಿಮ್ಮ ತಂದೆ ತಾಯಿಯವರಿಗೆ ನನ್ನ ಪ್ರಣಾಮಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸು.
38. Give my regards to your parents.
उत्तर: अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।

೩೯)ತಾವು ಕಾಫಿಯನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವಿರಾ?
39. Would you like to have coffee?
उत्तर: क्या आप काफ़ी लेंगे?

೪೦)ಮಳೆಯು ನಿಂತ ಮೇಲೆ ನಾವು ಹೊರಗಡೆ ಹೋಗೋಣ.
40. When the rain, stops we shall go out.
उत्तर: वर्षा के रुकने परहम बाहर चलेंगे।

೪೧)ನಾನು ಮೈಸೂರಿನಲ್ಲಿ ಒಂದು ವರ್ಷವಿದ್ದೆ.
41. I have lived in Mysore for 1 year.
उत्तर: मैं मैसूर में एक वर्ष था।

೪೨)ನಾನು ನಿನ್ನ ಪುಸ್ತಕಗಳಿಗಾಗಿ ಬಹಳ ಖರ್ಚುಮಾಡಿದೆ.
42. I spent a lot of money on books yesterday.
उत्तर: मैने पुसतक के लिए बहोत खर्च किया।

೪೩)ಜೂನ್ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಅವನು ಕಾಲೇಜನ್ನು ಬಿಡುವನು.
43. He is going to leave collage in the month of june.
उत्तर: जून महीने मे वह कालेज छोडेंगा।

೪೪)ನಾಳೆಯು ತಿಂಗಳ ಕೊನೆಯ ದಿನವಾಗಿದೆ.
44. Tomorrow will be the last day of the month.
उत्तर: कल महीने का आखिरी दिन होगा।

೪೫)ಕಠಿಣ ಪರಿಶ್ರಮವಿಲ್ಲದೆ ಸಫಲತೆಯು ಸಿಗಲಾರದು.
45. There is no success without hard work.
उत्तर: कठिन परिश्रम के बिना सफ़लता प्राप्त नहीं होती।

೪೬)ದೇಶ ಭಕ್ತರನ್ನು ಸದಾ ಗೌರವಿಸಬೇಕು.
46. Patriots should be respected always.
उत्तर: देशभक्तों की सादा आदर और सम्मान करना चाहिए।

೪೭)ದಿನ ಕಳೆದಂತೆ ನಿರುದ್ಯೋಗ ಸಮಸ್ಯೆ ಉಲ್ಬಣಗೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ.
47. The problem of unemployment is increasing day by day.
<u>उत्तर</u>: दिन-प्रतिदिन बेरोजगारी की समस्या बढती जा रही है।

೪೮)ಗೌತಮ ಬುದ್ಧನಿಂದ ಬೌದ್ಧಧರ್ಮವು ಸ್ಥಾಪಿತವಾಯಿತು.
48. Buddhism was founded by Gautama Buddha.
<u>उत्तर</u>: बौध्द धर्म के संस्थापक गौतम बुध्द हैं।

೪೯)ಇಂದಿನ ಮಕ್ಕಳೇ ನಾಳಿನ ಪ್ರಜೆಗಳು.
49. Today's children are the citizens of tomorrow.
<u>उत्तर</u>: आज के बच्चे कल के नागरिक हैं।

೫೦)ರಾಮನು ಪರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಶೇ. 95ರಷ್ಟು ಅಂಕ ಪಡೆದಿದ್ದಾನೆ.
50. Ram has secured 95% in examination.
<u>उत्तर</u>: राम ने परोक्षा में 95% प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

೫೧) ಸೋನಾಕ್ಷಿಗೆ ಹಳಯ ಹಿಂದಿ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಹವ್ಯಾಸವಿದೆ.
51.Sonakshi's hobby is listening to old Hind song's.
<u>उत्तर</u>: पुराने हिन्दी गाने सुनना सोनाक्षी का हव्यास है।

೫೨) ಮಹಾತ್ಮ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ನಮ್ಮ ದೇಶದ ರಾಷ್ಟ್ರಪಿತ.
52. Mahatma Gandhi is the father of our nation.
<u>उत्तर</u>: महात्मा गांधी महारे राष्ट्पिता हैं।

೫೩)ಭಾರತವು ಆಗಸ್ಟ್ ೧೫,೧೯೪೭ರಂದು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಗೊಂಡಿತು.
53. India got independence on 15,th August 1947.
<u>उत्तर</u>: भारत को 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली।

೫೪)ಉತ್ತಮ ಅಧ್ಯಾಪಕನು ತನ್ನ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಪ್ರೇರಣಾದಾಯಕನು.
54. A good teacher is one. Who always inpires his students.
<u>उत्तर</u>: एक अच्छा शिक्षक हमेशा अपने छात्रों को प्रेरित करता है।

೫೫)ಗೋಪಾಲನು ಓದಿನಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮನಾಗಿದ್ದಾನೆ.
55. Gopal is good in studies.
<u>उत्तर</u>: गोपाल पढाई में अच्छा है।

೫೬) ವಿವಿಧತೆಯಲ್ಲಿ ಏಕತೆಯನ್ನು ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು.
56. Unity in diversity is found in india.
<u>उत्तर</u>: विविधता मेम एकता भारत की पहचान है।

೫೭) ಮಹೇಂದ್ರಸಿಂಗ್ ದೋನಿಯವರು ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಕ್ರಿಕೆಟ್‌ನಿಂದ ನಿವೃತ್ತರಾಗಿದ್ದಾರೆ.
57. Mahindra singh dhoni has retired from international test cricket.
<u>उत्तर</u>: महेन्द्र सिंह धोनीने अन्तरराष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट से सन्यास ले लिया है।

೫೮)ರಾಹುಲನು ಐ ಎ ಎಸ್ ಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಪ್ರಥಮ ಸ್ಥಾನದೊಂದಿಗೆ ತೇರ್ಗಡೆ ಹೊಂದಿದ್ದಾನೆ.
58. Rahul has cleared IAS exam with 1st rank.
<u>उत्तर</u>: राहुल ने IAS (आई.ए.एस) की परीक्षा प्रथम स्थान में उत्तीर्ण कर ली।

೫೯)ಅಧ್ಯಾಪಕರು ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ಸ್ವಂತ ಮಕ್ಕಳಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ.
59. Teacher's treat their students as their own children.
<u>उत्तर</u>: शिक्षक अपने छात्रों के साथ अपने बच्चों की तरह व्यवहार करते हैं।

೬೦) ಶಾಲೆಯು ಮನೆಯಿಂದ ದೂರ,ಒಂದು ಮನೆ ಇದ್ದಂತೆ.
60. School is home away from home.
<u>उत्तर</u>: विद्यालय घर से दूर घर की तरह है।

೬೧)ಪ್ರಾಂಶುಪಾಲರು ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕೆಟ್ಟ ಸ್ವಭಾವಕ್ಕಾಗಿ ದಂಡಿಸಿದರು.
61.the principal punished a few students for misbehavior.
<u>उत्तर</u>: प्रचार्य ने कुछ छात्रों को दुर्व्यवहार करने के कारण दंडित किया।

೬೨)ನಾವು ರಾಷ್ಟ್ರಗೀತೆಯನ್ನು ಗೌರವಿಸಬೇಕು.
62. We should respect our national Anthem.
<u>उत्तर</u>: हमें अपने राष्ट्रीय गान का आदर करना चाहिए ।

೬೩)ಸಾಹಿತ್ಯವು ಭಾಷೆಯ ಮೂಲತತ್ವ.
63. Literature is the essence of language.
<u>उत्तर</u>: साहित्य भाषा का सार है।

೬೪)ತಾಯಿಯು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸದಾ ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಾಳೆ.
64. Mother always love their children.
<u>उत्तर</u>: माँ हमेशा अपने बच्चों से प्यार करती है।

೬೫)ಕಾಡು ಪ್ರಾಣಿಗಳು ಬಹಳ ಅಪಾಯಕಾರಿ.
65.wild animals are very dangerous.
<u>उत्तर</u>: जंगली जानवर बहुत खतरनाक होते हैं।

೬೬)ಬೆಂಗಳೂರು ನಗರವು ಕರ್ನಾಟಕದ ರಾಜಧಾನಿ.
66. Bengaluru city is the capital of Karnataka.
<u>उत्तर</u>: बैंगलूर शहर कर्नाटक की राजधानी है।

೬೭)ನಾನು ಈ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ನಾಳೆ ಉತ್ತರಿಸುವೆ.
67. I will answer these questions tomorrow.
<u>उत्तर</u>: मैं इन सवालों का जवाब कल दूँगा।

೬೮)ನಾವು ಪರಿಸರ ಪ್ರೇಮಿಗಳಾಗಿ ಬಾಳಬೇಕು.
68. We have to live together with love.
<u>उत्तर</u>: हमें प्रेम के साथ रहना है।

M.K.Z

वर्णमाला

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

बारहखडी

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ	कं	कः
Ka	Kaa	Ki	Kee	Ku	Koo	Kru	Ke	Kai	Ko	Kou	Kam	Kaha
ख	खा	खि	खि	खु	खू	खृ	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गृ	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घृ	घे	घै	घो	घौ	घं	घः

M.K.Z

Editing By: M.K. Zakir Hasan Lecturer